CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीमहाकविदण्डीविरचितः

विश्रुतचरितम्

दशकुमारचरितम्-अष्टमोच्छ्वासः

सा-म

साहित्य भण्डार, मेरठ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाकविदण्डीविरचितम्

विश्रुतचरितम्

[दशकुमारचरितम्—अष्टमोच्छ्वास]

[हिन्दी अनुवाद, शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, समास-विग्रह, व्याकरण, व्याख्यात्मक टिप्पणी तथा सर्वाङ्गपूर्ण भूमिका सहित]

व्याख्याकार तथा भूमिका लेखक :

आचार्य डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री

'शिरोमणि', बी. ए. एम. एस.

एम. ए. संस्कृत; एम. ए. हिन्दी; पी-एच. डी.

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya * Bharatiya Vidya

815

VI-13

साहित्य भण्डार

शिक्षा साहित्य के मुद्रक एवं प्रकाशक

सुभाष बाज़ार, मेरठ-२५०००२

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक :

रतिराम शास्त्री

अध्यक्ष :

साहित्य भण्डार,

सुभाष बाजार, मेरठ–२

दूरभाष : २२७५४

© प्रकाशकाधीन है।

SVB Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya

415

अष्टम संस्करण १९९०

मूल्य : दस रुपये। [१०.००]

भारतीय विद्या भवन
नई दिल्ली
श्री/श्रीमती/कुमारी..........
को.........परीक्षा.........में
उत्तीर्ण होने पर पुरस्कृत की गई

मन्त्री
दिनांक..................

N. R. Mandan
सञ्चालक

मुद्रक :

सर्वोदय प्रैस, मेरठ।

दूरभाष : २३६३८

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भूमिका

महाकवि दण्डी का समय—(स्थिति-काल) महाकवि दण्डी का स्थितिकाल अधिकांश आलोचकों तथा विद्वानों द्वारा सप्तम शताब्दी स्वीकार किया गया है, किन्तु फिर भी इस बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है।

सिंघली भाषा के अलङ्कार-ग्रन्थ 'सिय-वस-लकर' (स्वभाषालङ्कार) की रचना महाकवि दण्डी के 'काव्यादर्श' के आधार पर की गयी है।[1] इस ग्रन्थ के रचयिता राजसेन प्रथम का समय ८ ६–८६६ ई० था। इसी भाँति कन्नड़ भाषा के अलङ्कार-ग्रन्थ 'कविराजमार्ग' में भी 'काव्यादर्श' की छाप पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस ग्रन्थ के लेखक अमोघवर्ष का समय ८१४ अथवा ८१५ ई० के लगभग माना गया है; अतः दण्डी के 'काव्यादर्श' की रचना अष्टम शताब्दी के अन्त तक अवश्य हो चुकी होगी। इस आधार पर दण्डी के काल की अन्तिम सीमा अष्टम शताब्दी का अन्त स्वीकार किया गया है।

अब पूर्व की सीमा के बारे में भी विचार करना है। 'काव्यादर्श' के कुछ पद्यों में कालिदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है;[2] अतः दण्डी का कालिदास के पश्चात् होना निश्चित है। इसके अतिरिक्त राजा प्रवरसेन विरचित 'सेतुबन्ध' नामक प्राकृत-काव्य का उल्लेख भी 'काव्यादर्श' में उपलब्ध होता है। राजा प्रवरसेन का पंचम शताब्दी में होना निश्चित है; अतः दण्डी का स्थिति-काल ५००-८०० ई० के मध्य ही स्वीकार किया जाना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि दण्डी महाकवि बाण के पश्चात् हुए

---

१. डॉक्टर बारनेट—जर्नल ऑफ दी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी—
१६०५ पृ –८४१

२. 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्यलक्ष्मीं तनोति"—कालिदास।
"लक्ष्य लक्ष्मीं तनोतीति प्रतीति सुभगं वच."—दण्डी।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथवा पहले ? इस बारे में भी विद्वानों में मतभेद हैं। याकोबी तथा पीटरसन की दृष्टि में 'कादम्बरी' में वर्णित शुकनासोपदेश की छाया 'काव्यादर्श' के एक पद्य[1] में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त दण्डी ने महाकवि बाण और मयूर की प्रशंसा भी की है। तीसरी बात यह है कि अवन्तिसुन्दरी-कथा' में कादम्बरी का वर्णन बाण की प्रसिद्ध कथा से मिलता-जुलता है; अतः उक्त स्थिति में महाकवि दण्डी का बाण के पश्चात् सप्तम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होना निश्चित हो जाता है। डॉ० वेलवेलकर[2] ने भी दण्डी का यही समय स्वीकार किया है।

इसके विरुद्ध दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानने वाले विद्वानों का कथन यह है कि "शैली की दृष्टि से दण्डी बाण के पूर्ववर्ती ज्ञात होते हैं"। यदि दण्डी बाण के पश्चात् हुए होते तो दण्डी के ग्रन्थों की लेखन-शैली पर बाण का प्रभाव अवश्य पड़ा होता; किन्तु 'दशकुमारचरितम्' की सरल तथा प्रासादिक शैली पर बाणभटट् की प्रौढ़ तथा आलंकारिक शैली का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है। इसके अतिरिक्त 'दशकुमारचरितम्' का भौगोलिक[3] और राजनीतिक चित्रण हर्षवर्धन के पूर्व के भारत की ओर ही संकेत करता है; अतः इस आधार पर ही दण्डी का स्थितिकाल सप्तम-शताब्दी का (प्रारम्भिक) पूर्वार्द्ध ही मानना उचित प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर महाकवि दण्डी का सप्तम शताब्दी में होना तो सिद्ध हो जाता है। अब चाहे इस शताब्दी का पूर्वार्द्ध काल माना जाये अथवा उत्तरार्द्ध।

---

१. 'केवलं च निसर्गत एवाभानुभेद्यमरत्नालोकोच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमति-गहनं तमो यौवनप्रभवम्' ॥ कादम्बरी ॥
अरत्नलोकसंहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः।
दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवं तमः ॥ काव्यादर्श २/१९७ ॥
२. नोट्स ऑन 'काव्यादर्श' पृ० १७६–१७७।
३. कोलिन्स—दो ज्योग्राफिकल डेटा ऑफ दी रघुवंश एण्ड दशकुमार-चरितम् (१९०७) पृ० ४६।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि 'काव्यादर्श' में उल्लिखित राजवर्मा (रातवर्मा) को नरसिंह वर्मा द्वितीय (जिसका उपनाम राजवर्मा था) मान लिया जाये तो दण्डी के काल के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह किये जाने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है। प्रो० आर० नरसिंहाचार्य[1] तथा डॉ० बेलवेलकर[2] ने भी इन दोनों की एकता स्वीकार कर दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध ही सिद्ध किया है। शैवधर्मोपासक पल्लवराज 'नरसिंहवर्मा' का समय ६९०–७१५ ई० माना गया है तथा दण्डी इनके सभाकवि थे; अतः इनका समय सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाना स्वयं ही सिद्ध हो जाता है, किन्तु उपर्युक्त राजवर्मा (रातवर्मा) तथा नरसिंहवर्मा द्वितीय—इन दोनों के एक महीने का सुदृढ़ प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं किया जा सका है; अतः उक्त मत किसी रूप में सन्देहास्पद कहा जा सकता है।

महाकवि का जीवन-परिचय आदि—'दशकुमारचरितम्' तथा 'काव्यादर्श' के आधार पर दण्डी का दाक्षिणात्य तथा विदर्भ-देश-निवासी होना प्रकट होता है। उनके द्वारा महाराष्ट्री प्राकृत तथा वैदर्भी शैली की प्रशंसा 'काव्यादर्श'[3] में की गयी है। 'दशकुमारचरितम्,' में कलिङ्ग तथा आन्ध्र देशों के उल्लेख, 'कावेरीतीरपत्तन' सदृश शब्दों का प्रयोग तथा दक्षिण भारत में प्रचलित पारिवारिक एवं सामाजिक प्रथाओं के वर्णनों से भी उनका दाक्षिणात्य होना प्रमाणित होता है। 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के आधार पर महाकवि दण्डी का कुछ जीवन संकेत अवश्य प्राप्त होता है। इनके आधार पर महाकवि दण्डी का सम्बन्ध महाकवि भारवि से निकलता है। भारवि के तीन पुत्रों में से मध्यमपुत्र का नाम मनोरथ था। मनोरथ के भी चार वेदों के सदृश चार पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सबसे छोटा वीरदत्त था, जो एक सुयोग्य दार्शनिक था। इसकी स्त्री का नाम गौरी था। इसी से दण्डी का जन्म हुआ था। इनके माता-पिता बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी हो गये थे। ये काञ्जी में निराश्रय रहा करते थे। एक बार काञ्जी में उपद्रव उपस्थित हो गया। उस समय ये

---

१. पाठक इण्डियन ऐण्टिक्वेरी—१९१२ ई०। पृ० ९०।
२. नोट्स ऑन काव्यादर्श—चैप्टर द्वितीय—पृ० १७६-७७।
३. काव्यादर्श—१/३४, ४१ तथा ४२।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेचारे जंगलों में मारे-मारे फिरते रहे। शहर में शान्ति हो जाने पर ये पल्लव-नरेश की सभा में आ गये तथा उनके सभाकवि होकर ये अपना जीवन-यापन करने लगे। दक्षिण भारत में प्रचलित एक किम्वदन्ती से इसकी पुष्टि भी होती है। श्री एम० रंगाचार्य ने एक किम्वदन्ती का उल्लेख करते हुए लिखा है कि पल्लव-नरेश के पुत्र को शिक्षा देने के निमित्त ही दण्डी ने 'काव्यादर्श' की रचना की थी। इसके प्राचीन टीकाकार तरुणावाचस्पति के अनुसार दण्डी ने निम्नलिखित प्रहेलिका में काञ्जी के पल्लव-नरेशों की ओर संकेत किया है।—

"नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।
अस्ति काचिद्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥ श्लोक सं० ११४॥"

उक्त आधार पर उनका पल्लव राजा के आश्रय में रहना इतिहास तथा किम्वदन्ती दोनों ही के द्वारा सिद्ध हो जाता है।

किन्तु भारवि तथा दण्डी के उक्त सम्बन्ध के बारे में अब संशय उत्पन्न होने लगा है। जिस श्लोक के आधार पर भारवि के साथ दण्डी के प्रपितामह दामोदर का एक होना स्वीकार किया जाता था। उस श्लोक में पाठ-भेद मिलने के कारण विद्वानों को अपना मत बदलना पड़ा है। साथ ही यह विषय अब विवादास्पद भी बन गया है। नवीन पाठ अब इस भाँति मिल रहा है :—

"स मेधावि कविर्विद्वान् भारविं प्रभवं गिराम् ।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने ॥११३॥

पहले 'भारविं' के स्थान पर 'भारविः' था। अब भारविं पाठ मिलता है जिसका अर्थ होता है कि भारवि की सहायता से दामोदर की मैत्री विष्णुवर्धन के साथ हो सकी; अतः दामोदर ही दण्डी के प्रपितामाह थे, भारवि नहीं।

उनकी रचनाएं— 'शार्ङ्गधरपद्धति' में राजशेखर के नाम से निम्नलिखित श्लोक उद्धृत किया गया है, जिसके अनुसार दण्डी द्वारा तीन ग्रन्थों की रचना किये जाने का उल्लेख स्पष्ट रूप से मिलता है।

"त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः ।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः ॥"

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन तीन ग्रन्थों में से दो के नाम हैं:—(१) काव्यादर्श, (२) दशकुमारचरितम् । ये दोनों ही ग्रन्थ दण्डी लिखित अवश्य हैं, किन्तु इस विषय में थोड़ी-सी भ्रान्ति इस कारण हो जाती है कि 'काव्यादर्श' अलंकारशास्त्र का ग्रन्थ है तथा 'दशकुमारचरितम्' गद्य काव्य का । 'काव्यादर्श' में गद्य काव्य सम्बन्धी शैली तथा कथा-वस्तु के सम्बन्ध में जिन नियमों का प्रतिपादन किया गया है उनका पूर्णरूप से पालन 'दशकुमारचरितम्' में नहीं किया गया है । एक ही व्यक्ति द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की अवहेलना उसी व्यक्ति के दूसरे ग्रन्थों में कैसे की जा सकती है ? अतः उक्त दोनों ग्रन्थ पृथक्-पृथक् लेखकों की ही रचनाएं कही जा सकती हैं, किन्तु उपर्युक्त शङ्का का समाधान विद्वानों द्वारा इस प्रकार किया गया है कि 'दशकुमारचरितम्' की रचना महाकवि द्वारा अपने साहित्यिक जीवन के प्रारम्भिक काल में की गयी होगी तथा 'काव्यादर्श' की रचना उन्होंने तब की होगी कि जब उनका काव्यशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान पूर्णरूपेण प्रौढ़ता को प्राप्त हो गया होगा, किन्तु उनकी तृतीय रचना कौन-सी है ? इस बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है । कुछ का कहना है कि उनकी तृतीय रचना 'छन्दोवचिति' अथवा 'कलापरिच्छेद' है; क्योंकि 'काव्यादर्श'[1] में इन दोनों पुस्तकों का उल्लेख उपलब्ध होता है, किन्तु इस बारे में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता है । श्री 'कीथ' महोदय का विचार है कि 'छन्दोवचिति' तथा 'कलापरिच्छेद' कोई पृथक् ग्रन्थ नहीं थे । ये दोनों परिच्छेद थे कि जिन्हें महाकवि अपने ग्रन्थ 'काव्यादर्श' के परिशिष्ट के रूप में देना चाहते थे ।

श्री पिशेल ने 'मृच्छकटिकम्' को ही दण्डी की तृतीय रचना सिद्ध करने का प्रयास किया है । इसके लिए वे निम्नलिखित दो आधारों का आश्रय लेते हैं:— (१) प्रथम यह कि 'मृच्छकटिकम् का एक पद्य[2] 'काव्यादर्श' में ज्यों का त्यों तथा कवि का नाम निर्देश बिना किये हुए ही उद्धृत किया गया है । (२) द्वितीय यह कि 'मृच्छकटिकम्' में जिस सामाजिक दशा का चित्रण है वही चित्रण 'दशकुमारचरितम्' में भी किया गया है । इनमें से प्रथम आधार तो इस

---

१. काव्यादर्श १/२६ तथा ३/१६१ ।

२. लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः ।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता ॥

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कारण निरर्थक सिद्ध हो जाता है कि उक्त पक्ष तो 'मृच्छकटिकम्' से भी पूर्व भास के नाटक में पाया जाता है। दूसरा आधार भी इसलिए खण्डित हो जाता है कि दो ग्रन्थों में एक जैसी सामाजिक दशा का चित्रण उपलब्ध होने से यह तो माना जा सकता है कि दोनों ग्रंथों का रचनाकाल एक-दूसरे के समीप है, किन्तु दोनों को एक ही लेखक की रचना माना जाना उचित प्रतीत नहीं होता है; अतः 'मृच्छकटिकम्' को दण्डी की रचना मानना पूर्णतया निराधार ही है।

कुछ लोगों ने 'मल्लिका मारुत' नामक नाटक को दण्डी की रचना माना है, किन्तु खोज के पश्चात् यह सिद्ध किया जा चुका है कि उक्त रचना मालवार प्रान्त के उद्दण्ड रंगनाथ (१५०० ई०) की रचना है।

सन् १६१४ ई० में 'अवन्तिसुन्दरीकथा' नामक एक अपूर्ण गद्य काव्य प्रकाशित हुआ है। अधिकांश विद्वान् अब इस ग्रन्थ को महाकवि की तृतीय रचना मानने लगे हैं। इसके सम्पादक एम० आर० कवि महोदय ने भी इसी को दण्डी की तीसरी कृति माना है। 'दशकुमारचरितम्' तथा 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के कथानकों में साम्य मिलता है, किन्तु जहाँ तक शैली का सम्बन्ध है— दोनों में सर्वथा भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार की भिन्नता का कारण यह हो सकता है कि अपनी युवावस्था मे 'दशकुमारचरितम्' की रचना कर चुकने के पश्चात् दण्डी ने अपनी परिपक्वावस्था में आकर पुनः उसी कथानक के आधार को लेकर प्रौढ़ एवं परिमार्जित शैली में 'अवन्तिसुन्दरीकथा' की रचना की हो। इसके अतिरिक्त 'काव्यादर्श' की जलांघ-कृत टीका में अवन्ति-सुन्दरी' नामक आख्यायिका का उल्लेख किया गया है; अतः विद्वानों द्वारा मान्य 'अवन्तिसुन्दरीकथा' को उनकी तृतीय रचना मानना उचित ही है।

दशकुमारचरितम्—यह दण्डी का प्रसिद्ध गद्य-काव्य है। ग्रंथ सरलता, सरसता तथा कौतूहलपूर्णता के लिए विशेष रूप से विख्यात् है। यह तो इसके नाम से ही प्रकट है कि इसमें दशकुमारों के चरित का संकलन किया गया है। इसका वर्तमान उपलब्ध स्वरूप तीन भागों में विभक्त है—(१) पूर्वपीठिका— इसके अन्तर्गत पांच उच्छवास हैं। (२) उत्तरपीठिका। (३) इन दोनों के मध्य पुस्तक का मूल भाग है, जिसमें आठ उच्छ्वासों में आठ कुमारों की कथाएँ वर्णित हैं। यही मध्यभाग 'दण्डी' की वास्तविक रचना माना जाता है। वैसे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह तो निर्विवाद रूप से 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के आधार पर सिद्ध किया जा चुका है कि दोनों पीठिकाएँ भी दण्डी द्वारा अवश्य ही लिखी गयी होंगी, किन्तु किसी कारणवश आदि तथा अन्त की दोनों पीठिकाएँ नष्ट हो गयीं; किन्तु बाद में उन्हीं के किसी भक्त द्वारा पूर्व तथा उत्तरपीठिकाएं लिखकर उस पुस्तक में जोड़ दी गयीं। श्री एम० आर० काले महोदय के मतानुसार दण्डी की इस मूलकृति का तेलगू अनुवाद तेरहवीं ईसवी शती में किया गया था; अतः उनका अनुमान है कि किसी योग्य लेखक ने बाद में इस तेलगू अनुवाद के आधार पर अप्राप्य भाग को संस्कृत में अनुदित कर दिया होगा।

'दशकुमारचरितम्' में दस राजकुमारों की कथाएँ अत्यन्त मनोरंजक शैली में वर्णित हैं। इसमें दसों राजकुमारों के पर्यटनों, अनुभवों तथा पराक्रमों का अत्यन्त सजीव वर्णन दण्डी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसमें छल-कपट; मारकाट, चोरी-जारी से ओत-प्रोत वर्णन हैं। व्यंग्य तथा विनोद के साथ इसमें तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है। साहसी राजकुमार किस भाँति उचित, अनुचित का विचार छोड़कर अपने-अपने कार्यों की सिद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील तथा सजग दिखलायी पड़ते हैं, इसका वर्णन एक विचित्र व्यंग्यात्मक शैली में उपस्थित किया गया है। अभिमानी, कपटी, धूर्त्त, कुट्टनी, व्यभिचारिणी स्त्रियों तथा हृदयहीन वेश्याओं, तपस्वियों तथा ब्राह्मणों आदि सभी का इस ग्रन्थ में भण्डाफोड़ किया गया है।

दण्डी का चरित्र-चित्रण अत्यन्त सजीव तथा विशद है। उनके सभी पात्र वास्तविक से प्रतीत होते हैं। समाज के उच्च तथा निम्न वर्गों का वे जीता-जागता चित्र उपस्थित कर देते हैं। उनके 'दशकुमारचरितम्' से तत्कालीन रीति-रिवाजों का भी परिचय प्राप्त होता है। उनका रचना-कौशल भी देखने योग्य ही है। कथानक की रोचकता में वृद्धि करने के लिए दण्डी यत्र-तत्र, शिष्टहास्य, मधुर-व्यंग्य तथा गम्भीर वर्णन का आश्रय ले लेते हैं। यदि कहीं पर वर्णनों का विस्तार मिलता है तो कहीं-कहीं लघु कथाएँ भी उपलब्ध होती हैं। कथाओं का क्रम प्रशंसा के योग्य है। मुख्य कथा के प्रवाह में अवान्तर कथाओं के आ जाने से किसी प्रकार का गति-अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। व्याकरण की दृष्टि से भी 'दशकुमारचरितम्' पूर्णतया निर्दोष है। इस भाँति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सजीव चरित्र-चित्रण, स्वाभाविक शैली, शिष्ट-हास, रसानुकूल शब्द-विन्यास, बुद्धिचातुर्य, यथार्थ एवं आदर्श का सुमधुर सामञ्जस्य इत्यादि अनेक विशेषताओं से सुसज्जित 'दशकुमारचरितम्' संस्कृत-गद्य-साहित्य में अपना एक अनूठा तथा विशिष्ट स्थान रखता है।

महाकवि दण्डी की शैली—महाकवि दण्डी को सुमधुर वैदर्भी[1] शैली का आचार्य कहा जाता है। उनकी वर्णन-प्रणाली सरल तथा प्रसाद-गुण सम्पन्न है। उन्होंने अपनी भाषा को अलंकारों के बाह्य आडम्बर से चित्रित करने का प्रयत्न नहीं किया है। इसी कारण उनकी भाषा में स्वाभाविकता, प्रवाहपूर्णता विशुद्धता आदि का स्पष्ट दर्शन होता है। उन्होंने यत्र-तत्र मुहावरों का भी समावेश अपने गद्य में किया है, जिसके कारण भाषा का माधुर्य और भी अधिक बढ़ गया है। उनकी भाषा (गद्य) अपनी एक निजी विशेषता रखती है। न तो वह सुबन्धु की शैली के सदृश 'प्रत्यय श्लेषमय' है तथा न वह बाण की शैली के समान 'सरस स्वर्णपदा' ही है। वह तो अधिकांशतः प्रतिदिन कार्य मे आने वाली गद्य का नमूना ही है। वाक्य छोटे-छोटे तथा सुव्यक्त अर्थ के प्रतीक हैं। उनके वाक्यविन्यास परिश्रमसाध्य न होकर ओजस्वी, ललित तथा आकर्षक और सुव्यक्त हैं। रस की सुन्दर अनुभूति शब्दविन्यास का सौन्दर्य, कल्पना की उर्वरता, अर्थ की सुस्पष्टता आदि उनकी शैली के प्रमुख गुण हैं। इसी कारण उनके पदलालित्य की प्रशंसा की गयी है—"दण्डिनः पदलालित्यम्"।

अतः यह कहना उचित ही होगा के दण्डी संस्कृत-गद्य के आदर्श हैं। उनके बारे में कही गयी हुई निम्नलिखित उक्ति उनके महत्त्व को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है:—

"कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः"

विश्रुतचरितम् की संक्षिप्त कथा—

एक छोटे बच्चे को अपने साथ लिये हुए एक वृद्ध से विश्रुत की भेंट होती है। वृद्ध द्वारा उसे ज्ञात होता है कि वह बच्चा विदर्भ का राजकुमार भास्कर वर्मा है तथा उसके पिता का हनन कर अथवा करवाकर वसन्त भानु ने विदर्भ देश पर अपना अधिकार कर लिया है। विदर्भराज की रानी ने अपने इस पुत्र

१. माधुर्यव्यञ्जकैः वर्णैः रचना ललितात्मिका। अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भीरीतिरीष्यते।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और पुत्री मंजुवादिनी के साथ महिष्मती के शासक मित्रवर्मा के यहाँ शरण ली, किन्तु वहाँ पर भी राजकुमार की सुरक्षा न देखकर इस वृद्ध के साथ उसे भेज दिया है। विश्रुत इस राजकुमार तथा रानी आदि की सहायता का आश्वासन देता है। उसी समय यह भी उसे ज्ञात होता है कि मित्रवर्मा मंजुवादिनी का विवाह प्रचण्डवर्मा के साथ कराने जा रहा है। विश्रुत ने कुमार भास्कर वर्मा के मर जाने की अफवाह सर्वत्र फैला दी और स्वयं जाकर प्रचण्ड वर्मा को मार डाला। एक विषयुक्त हार के द्वारा मित्रवर्मा की भी हत्या कर दी गयी। अन्त में विश्रुत ने कुमार भास्कर वर्मा के साथ मंदिर की मूर्ति से युक्तिपूर्वक प्रकट होकर मंजुवादिनी से विवाह कर लिया तथा वसन्तभानु का वध करके विदर्भ के राज्य पर भी पुनः भास्कर वर्मा का अधिकार करा दिया। विश्रुत ने स्वयं भास्कर वर्मा के मन्त्रिपद का भार सँभाला और राज्य का भली-भाँति कार्य सञ्चालन करना भी प्रारम्भ कर दिया।

संस्कृत-साहित्य में महाकवि दण्डी का स्थान—संस्कृत-साहित्य में महाकवि दण्डी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इनकी प्रशंसा में लिखे गये निम्नलिखित अवतरणों से उपर्युक्त कथन की पुष्टि पूर्णतया होती है:—

१. आचार्यदण्डिनो वाचामाचामन्तामृतसम्पदाम् ।
   विकासो वेधसः पत्न्या विलासमणिदर्पणम् ॥
   (मधुराविजय नामक महाकाव्य की रचयित्री गंगादेवी का कथन)।
२. दण्डिनः पदलालित्यम् ।
३. जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत् ।
   कवीति इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनी ॥
४. कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः ।

———

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

* ओ३म् *

दशकुमारचरितम्

[अष्टमोच्छ्वास]

विश्रुतचरितम्

—:०:—

(१) अथ सोऽप्याचचक्षे—देव ! मयाऽपि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वचित्कूपाभ्याशे अष्टवर्षदेशीयो दृष्टः। स च त्रासगद्गदमगदत्—"महाभाग, क्लिष्टस्य मे क्रियतामार्य ! साहाय्यकम्। अस्य मे प्रावापहारिणीं पिपासां प्रतिकर्तुमुदकमुदञ्चन्निह कूपे कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तुम् इति।

हिन्दी—इसके अनन्तर उस (विश्रुत) ने भी कहा—देव ! इतस्ततः घूमते-घूमते मेरे द्वारा भी विन्ध्याचल के वन में, भूख तथा प्यास से पीड़ित, कष्टों को सहन करने में (पूर्णतया) असमर्थ किसी कुएँ के पास लगभग आठ वर्ष का एक बालक देखा गया। (मुझे देखकर) भयभीत वह (बालक) गद्गद (रुँधे हुए) स्वर में बोला—'हे महाभाग ! आर्य श्रेष्ठ अथवा (पूज्य), कष्ट में पड़े हुए मेरी (आप द्वारा) सहायता की जाये (मेरे) प्राणों का अपहरण करने वाली प्यास को दूर करने के निमित्त पानी को निकालते (खींचते हुए) एक वृद्ध (पुरुष), जो कि मेरा एकमात्र सहारा था, इसी कुएँ में गिर गया है। उसको (इस कुएँ से बाहर) निकालने में मैं समर्थ नहीं हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकरण—**आचचक्षे** = आ + चक्ष् + लिट् (प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप), यहाँ उक्त धातु अदादिगणी तथा आत्मनेपदी है। **परिभ्रमता** = परि + भ्रम + शतृ (पुल्लिग, तृतीया विभक्ति का एकवचन का रूप)। **क्लिश्यन्** = क्लिश् (दवादिगणी-परस्मैपदी) + शतृ (पुल्लिग, प्रथमा विभक्ति का एकवचन का रूप)। **अर्हः** = अर्ह + अच्। यहाँ 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिनयच' सूत्र से 'अच्' प्रत्यय हुआ है। **त्रास** = त्रस् + घञ्। **अगदत्** = गद् + लङ् (प्रथम पुरुष, एकवचन)। **क्लिष्टस्य** = क्लिश् + क्त। **सहाय्यकम्** = सहाय + ष्यञ् = साहाय्य—साहाय्य + कन् (स्वार्थ में)। **प्राणापहारिणिम्** = प्राण + 'अप + हृ + णिनि + ङीप्'—(यहाँ प्रकृति अथवा स्वभाव को प्रकट करने हेतु 'णिनि' प्रत्यय हुआ है)। **पिपासाम्** = पा + सन् + टाप्। **प्रतिकर्तुम्** = प्रति + कृ + तुमुन्। **उदञ्चन्** = उत् + अञ्च् + शतृ (प्रथमा विभक्ति-एकवचन का रूप)। **पतितः** = पत् + क्त। **उद्धर्तुम्** = उत् + हृ + तुमुन्।

समास आदि—**विन्ध्याटव्याम्** = विन्ध्याया: अटवी इति विन्ध्याटवी तस्यां विन्ध्याटव्याम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)। **अक्लेशार्हः** = अर्हति इति अर्हः, क्लेशस्य अर्हः इति क्लेशार्ह (षष्ठी तत्पुरुष), न क्लेशार्हः इति अक्लेशार्हः (नञ् तत्पुरुष)। **कूपाभ्याशे** = कूपस्य अभ्याश इति कूपाभ्याशः तस्मिन् (सप्तमी तत्पुरुष)। **अष्टवर्षदेशीयः** = अष्टौ वर्षाणि प्रमाण यस्य स अष्टवर्षः ईषत् असमाप्तः अष्टवर्षः इति अष्टवर्षदेशीयः—यहाँ 'लगभग' अथवा 'कुछ कम' अर्थ में "ईषदसमाप्तौकल्पब्देश्यदेशीयरः" सूत्र से देशीयर प्रत्यय हुआ है। **त्रासगद्गदम्** = त्रासेन गद्गदम् यथा स्यात्तथा इति त्रासगद्गदम्। **महाभाग!** = महान् भागः यस्य सः महाभागः (बहुव्रीहि) तत्सम्बुद्धौ हे महाभाग। **साहाय्यकम्** = सहायस्य भावः साहाय्यम् (ष्यञ् प्रत्यय)—'कन्' प्रत्यय हो जाने पर साहाय्यकम्। **प्राणापहारिणीम्** = प्राणान् अपहर्तुं शीलमस्याः इति प्राणापहारिणी ताम्। **पिपासा** = पातुं इच्छा पिपासा। **निष्कलः** = निर्गताः कलाः यस्यात् स निष्कलः (बहुव्रीहि)। **मदेकशरणभूतः** = एकं एव शरणं इति एकशरणम् (कर्मधारय), एकशरणं भूतः इति एकशरणभूतः।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

टिप्पणियाँ—**अथ**=इसके पश्चात्-सातवें उच्छ्वास में मन्त्रगुप्त द्वारा कहे गये वृत्तान्त के अनन्तर। **सः**=वह (विश्रुत नाम का राजकुमार)। **आचचक्षे**=कहा (कथयामास)। **परिभ्रमता**=घूमते हुए। **विन्ध्याटव्याम्**=विन्याचल पर्वत के वन में। **क्षुधा**=भूख से (बुभुक्षया)—यह क्षुध् (स्त्रीलिङ्ग) शब्द की तृतीया विभक्ति का एकवचन का रूप है। **तृषा**=प्यास से (पिपासया)—यह तृष् (स्त्रीलिङ्ग) शब्द की तृतीया विभक्ति का एकवचन का रूप है। **क्लिश्यन्**=दुःखी होता हुआ (क्लेशमनुभवन्) यह 'कुमारः' का विशेषण है। **अक्लेशार्हः**=कष्ट सहन न करने योग्य अर्थात् कोमल अथवा सुकुमार। **कूपाभ्याशे**= कुएं के पास में (कूपसमीपे)। **अष्टवर्षदेशीयः**=आठ वर्ष की अवस्था का। **त्रासगद्गदम्**=भय के कारण रुँधे हुए कण्ठ के स्वर से। **अगदत्**=बोला—कहा। **क्लिष्टस्य**=कष्ट में पड़े हुए (मुझ बच्चे) की। **आर्य !**=हे श्रेष्ठ, पूजनीय। **साहाय्यकम्**=सहायता। **प्राणापहारिणम्**=प्राणों को हरण कर लेने वाली। **पिपासम्**=प्यास को। **प्रतिकर्तुम्**=दूर करने के निमित्त (दूरीकर्तुम्)। **उदञ्चन्**=निकालते हुए (निष्कासयन्)। **इह कूपे**=इस कुएँ में। यहाँ पर क्रियाविशेषण अव्यय "इह" संकेतवाचक विशेषण के रूप में 'अस्मिन्' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। **निष्कलः**=वृद्ध। **ममैकशरणभूतः**=मेरे एकमात्र सहारे के रूप में विद्यमान। **पतितः**=गिर गया। **अलम्**=समर्थ (अव्यय)। **उद्धर्तुम्**=(कुएँ से) निकालने के लिए।

(२) अथाहमस्येत्य व्रतत्या कयाऽपि वृद्धमुत्तार्य तं च बालं वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पञ्चषैः शरक्षेपोच्छ्रितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात्पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तमब्रवम्—तात, क एषः बालः ? को वा भवान् ? कथं चेयमापदापन्ना' इति।

हिन्दी—तत्पश्चात् मैंने पास जाकर कुछ लताओं को एकत्र करके उनकी (सहायता से) उस वृद्ध को (कुएँ से) बाहर निकालकर: बाँस की नली से निकाले गये हुए जल (तथा), वाणों और पत्थर के टुकड़ों से (मारकर) गिराये गये हुए लकुच वृक्ष के पाँच-छः फलों द्वारा उस बच्चे के प्राणों को लौटाकर, एक वृक्ष के नीचे बैठकर उस वृद्ध से कहा—हे तात ! यह बालक कौन है ? अथवा आप कौन हैं और यह विपत्ति कैसे आ पड़ी ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकरण—**अभ्येत्य**=अभि+आ+इ+ल्यप्। **उत्तार्य**=उत्+तृ+णिच्+ल्यप्। **क्षेप**:=क्षिप्+घञ्। **पातितैः**=पत्+णिच्+क्त। **पञ्चषैः**—पञ्च=षष्+डच्—"यहाँ बहुव्रीहि संख्येये डच् बहुगणात्" सूत्र से 'डच्' प्रत्यय हुआ है। **प्रत्यानीत**=प्रति+आ+नी+क्त। **वृत्तिम्**=वृत्+क्तिन्। **आपाद्य**=आ+पद्+णिच्+ल्यप्। **निषण्णः**=नि+सद्+क्त। **जरन्तम्**=जृ+शतृ+द्वितीया विभक्ति (एकवचन)। **आपन्ना**=आ+पद्+क्त+टाप्।

समास—**वंशनालीमुखोद्धृताभिः**=वंशस्य नाली इति वंशनाली (षष्ठी तत्पु०) तस्याः मुखं इति वंशनालीमुखम् तेन उद्धृताः इति वंशनालीमुखोद्‌ (षष्ठी तत्पु०) शरक्षेपात् अपि उच्छ्रितः (ऊँचा) इति (शरक्षेपोच्छ्रितः) धृताः ताभि (तृतीयातत्पुरुष)। **शरक्षेपोच्छ्रितस्य**=शरस्य क्षेपः इति शरक्षेपः (षष्ठी तत्पु०) शरक्षेपात् अपि उच्छ्रितः (ऊँचा) इति शरक्षेपोच्छ्रितः (पंचमी तत्पु०), तस्य। **पाषाणपातितानि**=पाषाणैः पातितानि इति पाषाणपातितानि तैः (तृतीया तत्पु०)। **प्रत्यानीतप्राणवृत्तिम्**=प्राणानां वृत्तिः (षष्ठी तत्पु०) प्राणवृत्तिः, प्रत्यानीता प्राणवृत्तिः यस्य सः, तम् (बहुव्रीहि)। **तरुतलनिषण्णः**=तरोः तलम् (षष्ठी तत्पु०) तरुतलम् तरुतले निषण्णः इति तरुतलनिषण्णः (सप्तमी तत्पु०)।

टिप्पणियाँ—**अभ्येत्य**=समीप जाकर। **व्रतत्या**=लता से (लताया) व्रततिशब्द का तृतीया विभक्ति का एकवचन का रूप। 'वल्ली तु व्रततिर्लता'। **कयाऽपि व्रतत्या**=किसी लता से। **उत्तार्य**=ऊपर (बाहर) निकालकर। **वंशनालीमुखोद्धृताभिः**=बाँस की नाली के द्वारा निकाले गये हुए (पानी के द्वारा) यह 'अद्भिः' का विशेषण है। **अद्भिः**=जल से—नित्य बहुवचनान्त तथा स्त्रीलिङ्ग 'अप' शब्द की तृतीया विभक्ति के बहुवचन का रूप है। **शरक्षेपोच्छ्रितस्य**=छोड़ जाने पर वाण जितना ऊँचा जा सकता है उससे भी ऊँचा। **लकुचवृक्षस्य**=बड़हर या बड़हल के पेड़ के। **शिखरात्**=शिखर से। **पातितैः**=गिराये गये हुए। **पञ्चषैः**=पाँच-छः फलों से (पञ्च षड् वा संख्या येषां तानि पञ्चषाणि तैः (बहुव्रीहि)। भाव यह है कि लकुच (बड़हर) का वृक्ष बहुत ऊँचा था और उसके फल हाथ अथवा अन्य किसी लग्गी आदि के द्वारा प्राप्त करना संभव न था। इस कारण पत्थर के टुकड़ों से मार-मार कर पाँच-छः फल प्राप्त किये गये। **प्रत्यानीतप्राणवृत्तिम्**=जिसकी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राणवृत्तिम् (चेतना) पुनः लौटाकर ला दी गयी थी—ऐसा बालक। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि वह बालक पिपासा के कारण चेतनाविहीन (बेहोश) हो गया था और उसे जल पिलाकर होश में लाया गया था तथा उसे बाद में फल भी खिलाये गये। आपाद्य=करके। तरुतलनिषण्ण.=वृक्ष के नीचे बैठे हुए। यह 'अहम्' का विशेषण है। जरन्तम्=उस वृद्ध को। कथम्=कैसे? इयमापदापन्ना=इयम्=यह। आपात्=विपत्ति। आपन्ना=आ पड़ी।

(३) शोऽश्रुगद्गद्मगदत्—श्रूयतां महाभाग! विदर्भो नाम जनपदः, तस्मिन्भोजवंशभूषणम्, अंशावतार इव धर्मस्य, अतिसत्त्वः, सत्यवादी, वदान्यः, विनीतः, विनेता प्रजानाम्, रञ्जितभृत्यः कीर्तिमान्, उदग्रः, बुद्धिमूर्तिभ्यामुत्थानशीलः, शास्त्रप्रमाणकः, शक्यभव्यकल्पारम्भी, संभावयिता बुधान्, प्रभावयिता सेवकान् उद्भावयिता बन्धून्, न्यग्भावयिता शत्रून्, असंवद्धप्रलापेष्वदत्तकर्णः कदाचिदप्यवितृष्णो गुणेषु, अतिनदीष्णः कलासु, नेदिष्ठो धर्मार्थसंहितासु, स्वल्पेऽपि सुकृते सुतरां प्रत्युपकर्त्ता, प्रत्यवेक्षिता कोशवाहनयोः, यत्नेन परीक्षिता सर्वाध्यक्षाणाम्, उत्साहयिता कृतकर्मणामनुरूपैर्दानमानैः, सद्यः प्रतिकर्त्ता दैवमानुषीणामापदाम्, षाड्गुण्योपयोगनिपुणः, मनुमार्गेण प्रणेता चातुर्वर्ण्यस्य, पुण्यश्लोकः पुण्यवर्मा नामाऽऽसीत्।

हिन्दी—हे महाभाग! सुनिये। विदर्भ नाम का एक जनपद (देश) है। उसमें भोजवंश का भूषण पुण्यवर्मा नाम का एक राजा था (जो) धर्म का अंशावतार, अत्यन्त पराक्रमी (बलवान्), सत्यवादी, दानी, अत्यन्त विनयी, प्रजापालक (अथवा प्रजा को शिक्षा देने वाला); अपने सेवकों को प्रसन्न रखने वाला, यशस्वी, उन्नतिशील, अपनी बुद्धि तथा शरीर द्वारा (प्रजा की) निरन्तर उन्नति करने वाला, शास्त्र को प्रमाण मानने वाला, जो कार्य अपने द्वारा हो सके, साधारण जन तक के लिए हितकर तथा न्याययुक्त हो; ऐसे कार्यों को

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने वाला, विद्वानों का आदर करने वाला, नौकरों पर प्रभाव रखने वाला, बन्धु-बान्धवों को ऊँचा उठाने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला, असम्बद्ध बातों (जिन बातों से अपना कोई सम्बन्ध न हो) को न सुनने वाला, गुणों की प्राप्ति में सदैव तत्पर रहने वाला, सभी कलाओं का परिज्ञाता, धर्म तथा अर्थ का संग्रह करने में सर्वदा प्रयत्नशील, थोड़ी-सी (अन्य किसी के द्वारा) भी की गयी उसकी भलाई का अत्यधिक प्रत्युपकार करने वाला,-अपने कोष तथा वाहनों पर सदा देख-रेख रखने वाला, अपने सभी कर्मचारियों की (गुप्त रूप से) परीक्षा करने वाला, अनुरूप पुरस्कार तथा सम्मान द्वारा कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाने वाला, दैवी तथा मानुषी आपत्तियों को तुरन्त ही शान्त अथवा दूर करने वाला, छहों गुणों (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, आश्रय और द्वैधी-भाव) का विधिवत् पालन करने में चतुर, मनु द्वारा कथित चातुर्वर्ण्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) के धर्मों का पालन कराने वाला, पवित्र कीर्ति वाला था (अर्थात् उसका यश समस्त भूतल पर छाया हुआ था)।

व्याकरण—**अगदत्** = गद् (बोलना), कहना + लङ्, (परस्मैपद)—प्रथम पुरुष, एकवचन। **श्रूयताम्** = श्रु + लोट् प्रथमपुरुष, एकवचन (कर्मवाच्य में)। कर्तृवाच्य में तो 'शृणु' बनता है। **सत्यवादी** = सत्य + वद् + णिनि। **कीर्तिमान्** = कीर्ति + मतुप्। **शक्य** = शक् + यत्। **भव्य** = भू + यत्। **शक्यभव्यकल्पारम्भी** = शक्यभव्यकल्प + आ + रभ् + णिनि। **संभावयिता** = सम् + भू + णिच् + तृन्। **प्रभावयिता** = प्र + भू + णिच् + तृन्। **उद्भावयिता** = उत् + भू + णिच् + तृन्। **असम्बद्ध** = नञ् + सम् + बन्ध + क्त। **नदीष्णः** = नदी + स्ना + क—यहाँ "आतोऽनुपसर्गे कः" से 'क' प्रत्यय तथा "निनदीभ्यां स्नातेः कौशले" से 'स्ना' के स् के स्थान पर ष् हो जाता है। **नेदिष्ठः** = अन्तिक् + इष्ठन्। यहाँ 'अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ' नियम के अनुसार 'अन्तिक्' के स्थान पर 'नेद' हो जाता है। **प्रत्युपकर्त्ता** = प्रति + उप + कृ + तृच्। **प्रत्यवेक्षिता** = प्रति + अव + ईक्ष् + तृच्। **परीक्षिता** = परि + ईक्ष् + तृच्। **उत्साहयिता** = उत् + सह् + णिच् + तृच्। **प्रतिकर्त्ता** = प्रति + कृ + तृच्। चूंकि प्रत्यवेक्षिता, उत्साहयिता, प्रतिकर्त्ता आदि में तृच् प्रत्यय हुआ है; अतः कोशवाहनयोः,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वाध्यक्षाणाम्, कृतकर्मणाम्, दैवमानुषीणाम् आदि में षष्ठी विभक्ति हुई है। **षाड्गुण्य**=षड्गुण + ष्यञ्। **प्रणेता**=प्र + नी + तृच्। **चातुर्वर्ण्यस्य**=चतुर्वर्ण + ष्यञ्।

समास—**अश्रुगद्गदम्**=अश्रुभिः वाष्पैः गद्गद यथास्यात्तथा इति अश्रु गद्गदम्। **महाभाग**=महान् भागो यस्य स महाभागः तत्सम्बोधने महाभाग! (बहुव्रीहि)। **भोजवंशभूषणम्**=भोजस्यवंशः इति भोजवंशः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भूषणम् इति भोजवंशभूषणम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अंशावतारः**=अंशेन अवतारः इति (तृतीया तत्पुरुष)। **अतिसत्व**=अतिक्रान्तः सत्वमिति अतिसत्वः (आदि समास)। **सत्यवादी**=सत्यं वदति तच्छीलः इति सत्यवादी। **सुविनीतः**= सुतरां अत्यन्तं विनीतः नम्रः इति सुविनीतः। **रञ्जितभृत्यः**=रञ्जिताः भृत्याः येन स (बहुव्रीहि)। **कीर्तिमान्**=कीर्तिः विद्यते अस्य इति कीर्तिमान्। **बुद्धि-मूर्तिभ्याम्**=बुद्धिश्च मूर्तिश्च इति बुद्धिमूर्ति ताभ्याम् (द्वन्द्व)। **उत्थानशीलः**= उत्थानं शीलं यस्य सः। **शास्त्रप्रमाणकः**=शास्त्रं प्रमाणं यस्य सः (बहुव्रीहि)। **शक्यभव्यकल्पारम्भी**=शक्यश्च भव्यश्च कल्पश्च इति शक्यभव्यकल्पः शक्यभव्य कल्पश्चासौ आरम्भश्च (कर्मधारय), शक्यभव्यकल्पारम्भः अस्ति अस्य इति। अथवा शक्यश्च भव्यश्च इति शक्यभव्यः, शक्यभव्यः कल्पः, इति शक्यभव्य-कल्पः तं आरभते इति शक्यभव्यकल्पारम्भो। **असम्बद्धप्रलापेषु**=न सम्बद्धाः, इति असम्बद्धाः, असम्बद्धाश्च ते प्रलापाः इति असम्बद्धप्रलापाः तेषः (कर्मधारय) **अदत्तकर्णः**=दत्तौ कर्णौ येन स दत्तकर्णः (बहुव्रीहि) न दत्तकर्णः इति अदत्त-कर्णः। **अवितृष्णः**=विगता तृष्णा यस्य सः वितृष्णः न वितृष्णः इति अवि-तृष्णः। **धर्मार्थसहितासु**=धर्मश्च इति धर्मार्थौ (द्वन्द्व समास) तयोः सहिताः तासु धर्मार्थसहितासु। **सर्वाध्यक्षाणाम्**=सर्वे च ते अध्यक्षाः इति सर्वाध्यक्षाः तेषाम् (कर्मधारय)। **कृतकर्मणाम्**=कृतानि कर्माणि यैः ते कृतकर्माण तेषाम् (बहुव्रीहि)। **दानमानैः**=दानानि च मानानि च इति दानमानानि (द्वन्द्व) तैः। **दैवमानुषीणाम**=दैव्यश्च मानुष्यश्च इति दैवमानुष्यः तासाम्। **षाड्गुण्योप-योगनिपुणः**=षट् च ते गुणाः इति (षड्गुणाः, षड्गुणा एव षाड्गुण्य, तस्य उपयोगः इति षाड्गुण्योपयोगः) (षष्ठी तत्पुरुष), तस्मिन् निपुणः इति षाड्गुण्योपयोगनिपुणः (सप्तमी तत्पु०)। **मनुमार्गेण**=मनोः मार्गः इतिः मनुमार्गः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(ष० तत्पु०) तेन । चातुर्वर्ण्यस्य=चतुर्वर्णाः एव चातुर्वर्ण्यम् तस्य । पुण्यश्लोक =पुण्यः श्लोकः (यशः) यस्य सः (बहुव्रीहि) ।

टिप्पणियां=अश्रु धारा के कारण रुंधे हुए कण्ठ से । अगदत्= बोला, कहा । श्रूयताम्=सुनिये । जनपदः=देश । तस्मिन्=उस (विदर्भ नामक देश) में । भोजवंशभूषणम्=भोजकुल का अलङ्कारस्वरूप । धर्मस्य अंशावतार इव=धर्म के आंशिक अवतार के सदृश । अतिसत्वः= अति पराक्रमी । वदान्य=उदार, दानी—"स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे" इत्यमरः । सुविनीतः=अत्यन्त नम्र । विनेता=शासक । रञ्जितभृत्यः= जिनके द्वारा नौकर सदैव प्रसन्न रखे जाया करते थे । कीर्तिमान्=यश वाला । उदग्रः=उन्नत आचार-विचार वाला । बुद्धिमूर्तिभ्याम् उत्थानशीलः= मूर्ति=स्वरूप, आकृति । उत्थान=उन्नति, पौरुष—"उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च" इति विश्वः । उन्नति अथवा पुरुषार्थ करना जिसका स्वभाव बन गया था । अथवा जो स्वभाव से ही उन्नत था । शास्त्रप्रमाणक= जिसकी दृष्टि में शास्त्र ही एकमात्र प्रमाण था । अथवा जो शास्त्र-सम्मत ही व्यवहार किया करता था । शक्यभव्यकल्पारम्भी=शक्य जिसका कर सकना अपनी सामर्थ्य के अन्दर हो ऐसा कार्य । भव्यम्=लोकप्रियम् या जनप्रिय कार्य—"शक्यं तु सुनकर कर्म, भव्यं तु जनलालितम्" । कल्प=न्यायोचित कर्म अथवा न्याययुक्त कार्य—"कल्पोन्याय्ये विधोशास्वे, संगते ब्रह्मवसरे कल्पद्रुमे विकल्पे च"—इति महीपः । वह व्यक्ति कि जो स्वयं सरलतापूर्वक करने योग्य तथा जन साधारण को प्रिय और न्याययुक्त कर्मों को किया करता था । बुधान् सम्भावयिता=विद्वानों का (सदैव) आदर करने वाला । सम्भावयिता आदि शब्द "तृन्" प्रत्ययान्त है; अतः इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है—"न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्" सूत्र के अनुसार 'तृन्' से निर्मित शब्दों के योग से षष्ठी विभक्ति न होकर द्वितीय ही होती है । वस्तुतः 'तृन्' तथा 'तृच्' दो प्रत्यय पृथक्-पृथक् हैं, दोनों के अर्थ एक ही हैं तथा दोनों एक जैसे होते हैं । दोनों में केवल यही अन्तर है कि तृन्नन्त शब्दों के योग में द्वितीया और तृजन्त शब्दों के योग में षष्ठी हुआ करती है । उक्त नियम के आधार पर ही बुधान्, सेवकान्, बन्धून् आदि शब्दों में द्वितीया विभक्ति हुई

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। सेवकान् प्रभावयिता=सेवकों के ऊपर अपना विशिष्ट प्रभाव रखने वाला। उद्भावयिता=उन्नति कराने वाला—उनको आगे बढ़ाने वाला। न्यग्भावयिता=जेता—विजय प्राप्त कर लेने वाला अथवा दमन करने वाला। असम्बद्धप्रलापेषु=निरर्थक वचनों पर। अदत्तकर्णः=कान (ध्यान) न देने वाला—अर्थात् वह व्यर्थ की बातें कभी भी नहीं सुना करता था। गुणेषु अवितृष्णः=जो गुणों के प्रति विरक्त नहीं था अर्थात् जो गुणों के प्रति सदैव अनुरक्त रहा करता था अथवा गुणी व्यक्तियों के प्रति जिसकी सदैव आस्था थी। नदीष्णः=निपुण—"नदीष्णाभिज्ञ-निष्ठ्यूत-प्रवीणनिपुणा अति" इत्यमरः। कलासु=कलाओं में। कलाएँ ६० प्रकार की मानी गयी हैं। धर्मार्थसंहितासु नेदिष्ठः=धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में सर्वदा संलग्न। नेदिष्ठः—अति समीपवर्ती। सुकृते=किसी के द्वारा किये गये उपकार पर—अर्थात् उस राजा के लिये यदि कोई थोड़ा-सा भी उपकार करता था तो उस उपकार के बदले। सुतराम्=अत्यधिक। प्रत्युपकर्त्ता=उपकार के बदले में उपकार करने वाला। कोशवाहनयोः=कोष-खजाना, वाहन-सेना के घोड़े, हाथी इत्यादि—खजाने तथा सेना के हाथी-घोड़ों आदि सवारियों का। प्रत्यवेक्षिता=अनुसन्धानकर्त्ता—सावधानीपूर्वक दृष्टि रखने वाला। सर्वाध्यक्षाणाम्=प्रधान कर्म करने वालों (प्रधान कर्मचारियों) का। परीक्षिता=परीक्षक—देखभाल करने वाला। कृतकर्मणाम्=जो लोग राजा के कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पादित करते थे अथवा जो अपने कर्त्तव्य का पालन पूर्णरूप से किया करते थे उनका। उत्साहयिता=उत्साह बढ़ाने वाला। अनुरूपैः=योग्य। दानमानैः=पुरस्कार आदि के द्वारा अथवा सम्मान के द्वारा। सद्यः=शीघ्र ही। प्रतिकर्त्ता-शान्त करने वाला, दूर करने वाला। दैवमानुषीणां आपदाम्=दैव द्वारा तथा मनुष्यों द्वारा उपस्थित की गयी हुई आपत्तियों का। दैवी तथा मानवी आपत्तियाँ हैं:—हुताशनो जल व्याधिदुर्भिक्षं मरणं तथा। इति पञ्चविधं दैवं, मानुषं व्यसनं व्यसनं ततः॥ आयुक्तकेभ्यः चोरेभ्यः परेभ्यो राजवल्लभात्। पृथिवीपति लोभाच्च नराणां पंचधामतम्॥ (कामन्दकी नीति)—१३/२०॥ षाड्गुण्योपयोगनिपुणः=छहों गुणों का विधिपूर्वक पालन करने वाला। छः गुण ये हैं—(१) सन्धि=शत्रु के साथ सुलह करना, (२) विग्रह=युद्ध करना, (३) यान=शत्रु के ऊपर आक्रमण

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना, (४) आसन = रुककर एक उचित अवसर देखते रहना, (५) आश्रय = किसी अन्य राजा से सहायता प्राप्त करना, (६) द्वैधीभाव = शत्रु पक्ष में फूट डलवा देना। मनुमार्गेण = मनु द्वारा प्रतिपादित नियमों के अनुसार। प्रणेता = नायक। पुण्यश्लोकः—पवित्र यश (कीर्ति) वाला। परम्परा से माने गये हुए पुण्यश्लोक व्यक्ति—"पुण्यलोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।"

(४) सः पुण्यैः कर्मभिः प्राप्य पुरुषायुषम्, पुनरपुण्येन प्रजानामगण्यतामरेषु। तदनन्तरमनन्तवर्मा नाम तदायतिरवनिमध्यतिष्ठत्। स सर्वगुणैः समृद्धोऽपि दैवाद्दण्डनीत्यां नात्याहतोऽभूत्। तमेकदा रहसि वसुरक्षितो नाम मन्त्रिवृद्धः, पितुरस्य बहुमतः, प्रगल्भवागभाषत।

हिन्दी—वह पुण्यकर्मों के द्वारा पुरुष की पूर्ण आयु (१०० वर्ष की पूरी आयु मानी गयी है) को प्राप्त कर प्रजाओं के पाप के कारण स्वर्ग के देवताओं में जाकर मिल गया (अर्थात् मर गया)। उसके पश्चात् उसका पुत्र अनन्तवर्मा जिसको (अपने पिता) पुण्यवर्मा से ही प्रभाव प्राप्त हुआ था, राजसिंहासन पर बैठा। वह सभी राजगुणों से सम्पन्न होने पर भी भाग्य से राजनीति में (जनता द्वारा) आदर प्राप्त न कर सका, (अर्थात् उसकी नीति से लोग असन्तुष्ट थे और उसका सम्मान भी नहीं करते थे)। एक समय उसको एकान्त में ले जाकर, उसके पिता द्वारा अत्यधिक सम्मानित तथा अनुभवपूर्ण बात कहने वाले (वाक्-पटु) वृद्ध मन्त्री वसुरक्षित ने (उससे) कहा—

व्याकरण—अध्यतिष्ठत् = अधि + स्था + लङ्—प्रथम पुरुष, एकवचन। अवनिमध्यतिष्ठत् = यहाँ 'अवनिम्' में "अधिशीङ्स्थासां कर्म" सूत्र में वर्णित नियम के अनुसार 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु के योग में द्वितीया विभक्ति हुई है। पितुरस्य = पितु + अस्य। यहाँ "पितः" में "मतिबुद्धि पूज्यार्थेभ्यश्च" सूत्र में वर्णित नियम के आधार पर षष्ठी विभक्ति हुई है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समास—**पुरुषायुषम्**—पुरुषस्य आयु: इति तम्। **अपुण्येन**—न पुण्यं इति अपुण्यं तेन (नञ् तत्पुरुष)। **तदनन्तरम्**—तस्य (पुण्यवर्मण:) अनन्तरं इति तदनन्तरम्। **तदायतिः**=तस्मात् (पुण्यवर्मण:) आयति: (प्रभाव:) यस्य स: (बहुव्रीहि)। **सर्वगुणैः**=सर्वे च ते गुणाः इति सर्वगुणा: तै (कर्मधारय)। **मन्त्रिवृद्धः**=मन्त्रिणां मन्त्रि वा वृद्धः इति (षष्ठी अथवा सप्तमी तत्पुरुष) **प्रगल्भवाक्**=प्रगल्भ: वाक् यस्य स: (बहुव्रीहि)।

टिप्पणियाँ—**पुरुषायुषं प्राप्य**=पुरुष की (पूरी) आयु प्राप्त कर। पुरुष की पूरी आयु १०० वर्ष की मानी गयी है; अत: अर्थ होगा—१०० वर्ष की आयु प्राप्त कर। **अपुण्येन**=पाप से। **प्रजानां अपुण्येन**=प्रजाओं के पाप अथवा दुर्भाग्य के फलस्वरूप। **अमरेषु**=देवताओं में। **अगण्यत्**=गिन लिया गया। इसका भाव है कि मृत्यु को प्राप्त हो गया। **तदनन्तरम्**=पुण्यवर्मा के पश्चात्। **तदायतिः**=पुण्यवर्मा (अपने पिता) के कारण जिसका प्रभाव था। **अवनिम्**=पृथ्वी पर। **अध्यतिष्ठत्**=बैठा अर्थात् सिंहासन पर बैठा। **सर्वगुणैः**=सब गुणों से। **समृद्धः**=युक्त। **दैवात्**=भाग्य से। **दण्डनीत्याम्**=दण्डनीति में अर्थात् राजनीति में। **नात्याहतोऽभूत्**=न+अति+आहतः+अभूत्, रुचि रखने वाला नहीं था। **रहसि**=एकान्त में। **बहुमतः**=अत्यन्त सम्मान का पात्र। **प्रगल्भवाक्**=निर्भय रूप से बोलने वाला—निर्भीक वक्ता—अथवा—अनुभव से भरी हुई थी वाणी जिसकी; अतएव निर्भीकता से बोलने वाला ही हो सकता है।

(५) 'तात्' सर्वैवात्मसपदभिजनात्प्रभृत्यन्यूनैवात्रभवति लक्ष्यते। बुद्धिश्च निसर्गपट्वी, कलासु नृत्यगीतादिषु चित्रेषु च काव्यविस्तरेषु प्राप्तविस्तारा तवेतरेभ्यः प्रतिविशिष्यते। तथाऽभ्यासावप्रतिपाद्यात्म संस्कारमर्थशास्त्रेषु, अनग्निसंशोधितेव हेमजातिर्नातिभाति बुद्धिः। बुद्धिहीनो हि भूभृदत्युच्छ्रितोऽपि परैरध्यारुह्यमाणमात्मानं न चेतयते। न च शक्तः साध्य साधनं वा विभज्य वर्तितुम्। अयथावृत्तश्च कर्मसु

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिहन्यमानः स्वैः परश्च परिभूयते। न चावज्ञातस्याज्ञा प्रभवति प्रजानां योगक्षेमाराधनाय। अतिक्रान्तशासनाश्च प्रजा यत्किंचनवादिन्यो यथा कथंचिद्वर्तिन्यः सर्वाः स्थितीः संकिरेयुः। निर्मयादश्च लोको लोकादितोऽमुतश्च स्वामिनमात्मानं च भ्रंशयते। आगमदीपदृष्टेन खल्वध्वना सुखेन वर्तते लोकयात्रा। दिव्यं हि चक्षुर्भूतभवद्भविष्यत्सु व्यवहितविप्रकृष्टादिषु च विषयेषु शास्त्रं नामाप्रतिहतवृत्ति। तेन हीनः सतोरप्यायतविशालयोर्लोचनयोरन्ध एव जन्तुरर्थदर्शनेष्व सामर्थ्यात्। अतो विहाय बाह्यविद्यास्वभिषङ्गमागमय दण्डनीतिं कुलविद्यां तदर्थानुष्ठानेन चावर्जितशक्तिसिद्धिरस्खलितशासनः शाधि चिरमुदधिमेखलामुर्वीम्' इति।

हिन्दी—हे तात (प्रियवर)! आप में अपने वंश के अनुसार सभी सम्पदाएँ (गुण) अत्यधिक रूप से दिखायी पड़ रही हैं। नृत्य, गीत आदि कलाओं में चित्र (निर्माण) में, और काव्यकला में स्वभाव से ही तीक्ष्ण आपकी बुद्धि औरों की अपेक्षा अधिक विशिष्ट (अवश्य) है, (किन्तु) फिर भी (आपकी) बुद्धि अर्थशास्त्र में आत्मसंस्कार न पाने के कारण (नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त न किये जाने के कारण) न तपाये गये हुए स्वर्ण के सदृश अधिक शोभा नहीं पाती है। बुद्धिरहित राजा अत्युन्नत होने पर भी शत्रु द्वारा आक्रमण किये जाते हुए भी अपने को समझने में समर्थ नहीं होता है और वह साध्य तथा साधनों का (ठीक-ठीक) विभाजन कर व्यवहार करने में भी असमर्थ रहा करता है। अनुचित रीति से व्यवहार करने वाला राजा (अपने) कार्यों में असफल होता हुआ, अपने तथा अन्य लोगों के द्वारा तिरस्कृत हुआ करता है। (ऐसे) अपमानित राजा की आज्ञा प्रजा के योग (अप्राप्त का प्राप्त करना) तथा क्षेम (प्राप्त को सुरक्षा) साधने में समर्थ नहीं होती है। (ऐसे शासन का उल्लंघन करने वाली प्रजाएँ अपनी इच्छानुसार जो चाहती हैं, कहने लगा करती हैं, अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगा करती है तथा (अन्त में) सम्पूर्ण स्थिति (मर्यादा) को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया करती हैं। (पुन: ऐसी मर्यादाहीन प्रजाएँ इस लोक और परलोक दोनों से अपने को तथा (अपने) स्वामी को भ्रष्ट कर देती हैं। शास्त्ररूपी दीये से देखे गये हुए मार्ग (पर चलने) से (ही) लोकयात्रा (जीवन-यात्रा) सुखपूर्वक चला करती है (अर्थात् धर्मशास्त्ररूपी दीपक के प्रकाश में चलने से राजा तथा प्रजा का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हुआ करता है)। वह धर्मशास्त्र दिव्य दृष्टि के समान है कि जो दृष्टि भूत, वर्तमान, भविष्य तथा एक-दूसरे से अलग रहने वाले एवं दूरस्थ विषयों में भी अप्रतिहत गति से पहुँच जाया करती है, कहीं रुकती नहीं है। उस (शास्त्र के ज्ञान) से रहित प्राणी लम्बे-चौड़े तथा विशाल नेत्रों के रखते हुए होने पर भी अर्थदर्शन (राजनीति) में सामर्थ्य (ज्ञान अथवा योग्यता) न होने के कारण अन्धा ही हुआ करता है; अतः आप बाहरी विद्याओं की आसक्ति (रुचि) का त्याग कर अपने वंश की विद्या (दण्डनीति) की ओर ध्यान लगायें और सीखें। उसके अर्थों (नियमों) के अनुसार व्यवहार करते हुए शक्ति सिद्धि प्राप्त करें और विघ्न रहित शासन वाले बनकर, बहुत काल पर्यन्त, समुद्ररूपी मेखला (करधनी) से युक्त (घिरी हुई) पृथ्वी का शासन करें।

व्याकरण—**अध्यारुह्यमाणम्**=अधि+आ+रुह्+(कर्म में) शानच्। **वर्तितुम्**=वृत्+तुमुन्। **प्रतिहन्यमानः**=प्रति+हन्+शानच् (कर्मणि)। **अवज्ञातस्य**=अव+√ज्ञा+क्त। **यत्किञ्चनवादिन्यः**=यत्किञ्चन+वद्+णिनि+ङीप्। **वर्तिन्यः**=वृत्त+णिनि+ङीप् (ताच्छील्ये)। **इतः**=इदम्+तसिल्। **अमुतः**=अदस्+तसिल्। **विहाय**=वि+हा+ल्यप्। **अभिषङ्गम्**=अभि+सञ्ज्+घञ्। **आगमय**=आ+गम्+णिच् लोट् लकार मध्यमपुरुष एकवचन। **अनुष्ठानम्**=अनु+स्था+ल्युट्। **शाधि**=शास् (अदादिगणी-परस्मैपदी)+लोट् लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।

समास—**आत्मसम्पद्**=आत्मनः सम्पत् इति आत्मसम्पत् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अन्यूना**=न न्यूना इति अन्यूना (नञ् तत्पुरुष)। **निसर्गपट्वी**=निसर्गेण

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पट्वी इति । नृत्यगीतादिषु = नृत्यं च गीतं च (द्वन्द्व) इति नृत्यगीते नृत्यगीते, आदौ यासां ताः नृत्यगीतादयः तासु (बहुव्रीहि) । काव्यविस्तरेषु = काव्यस्य विस्तराः इति काव्यविस्तराः तेषु षष्ठी (तत्पुरुष) । आत्मसंस्कारम् = आत्मनः संस्कारः इति आत्मसंस्कार तम् (षष्ठी पुरुष) । अनग्निशोधिता = अग्नौ शोधित इति अग्निशोधिता, न अग्निशोधिता इति अनग्निशोधिता (नञ् तत्पुरुष)। बुद्धहीनः = बुद्धिया हीनः इति बुद्धिहीनः (तृतीया तत्पुरुष) । अयथावृत्तः = यथा (उचितं) वृत्तं यस्य सः यथावृत्तः (बहुव्रीहि), न यथा वृत्तः इति अयथा-वृत्तः (नञ् तत्पुरुष) । योगक्षेमयोः = योगश्च क्षेमश्च इति योगक्षेमौ (द्वन्द्व) तयोः । अतिक्रान्तशासना = अतिक्रान्तीनि शासनानि याभिः ताः (बहुव्रीहि) । यत्किञ्चनवादिन्यः = यत्किञ्चन वदन्ति तच्छीलाः इति यत्कि-ञ्चनवादिन्यः । यथाकथञ्चिद्वर्तिन्यः = यथाकथञ्चिद् वर्तितुं शील एतासां इति यथाकथञ्चिद्वर्तिन्यः । निर्मर्यादाः = निर्गता मर्यादा येभ्यः ते—अथवा—निर्गताः मर्यादाभ्यः इति निर्मर्यादाः (प्रादि तत्पुरुष) । आगमदीपदृष्टेन = आगम एव दीपः इति आगमदीपः तेन दृष्टः इति आगमदीपदृष्टः तेन (तृतीया तत्पुरुष) । व्यवहितप्रकृष्टेषु = व्यवहिताश्च विप्रकृष्टाश्च ते व्यवहितविप्रकृष्टाः तेषु (कर्मधारय) । भूतभवद्भविष्यत्सु = भूताश्च भवन्तश्च भविष्यन्तश्च इति भूतभवद्भविष्यन्तः तेषु (कर्मधारय) । अप्रतिहतवृत्ति = प्रतिहता वृत्ति यस्य तद् प्रतिहतवृत्ति (बहुव्रीहि), न प्रतिहतवृत्ति इति अप्रतिहतवृत्त (नञ् तत्पुरुष) । आयतविशालयोः = आयते च विशाले च इति आयतविशाले तयोः (कर्मधारय) । बाह्यविद्यासु = बहिः भवाः बाह्याः, बाह्यश्च ता विद्याः, तासु (कर्मधारय) । स्वकुलविद्याम् = स्वस्य कुलमिति स्वकुलम् तस्य विद्या इति स्वकुल विद्या ताम् (षष्ठी तत्पुरुष) । तदर्थानुष्ठानेन = तस्य अर्था इति तदर्थाः तेषां अनुष्ठानं इति तदर्थानुष्ठानम् तेन (षष्ठी तत्पुरुष) । आवर्जितशक्तिसिद्धिः = आवर्जिता (प्राप्ता) शक्तीनां सिद्धि येन यथोक्तः [बहुव्रीहि] (त्वम्) । अस्खलितशासनः = स्खलितं शासनं येभ्य सः स्खलितशासनः (बहुव्रीहि), न स्खलितशासनः इति अस्खलितशासनः । उदधिमेखलाम् = उदधिः मेखला यस्याः सा उदधिः मेखला, ताम् (बहुव्रीहि) ।

टिप्पणियां—सर्वैव = सभी (सर्वा + एव) । आत्मसम्पद् = व्यक्तिगत गुण

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथवा वैशिष्ट्य। अभिजनात् = वंश से। अन्यूना = अधिक। लक्ष्यते = दिखलायी पड़ती हैं। निसर्गपट्वी = स्वभाव से ही निपुण। काव्यविस्तरेषु = काव्यकला के क्षेत्र में। विस्तर तथा विस्तार शब्द से प्रयोग करने सम्बन्धी कुछ अन्तर अवश्य है और वह यह है—काव्य तथा ग्रन्थादि के प्रसङ्ग में 'विस्तर' शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा अन्य स्थलों पर 'विस्तार' शब्द का प्रयोग होता है। यहीं पर 'प्राप्तविस्तारा' शब्द आया है जिसका अर्थ हो जाता है कि जिसके द्वारा विस्तार प्राप्त कर लिया गया है ऐसी आपकी बुद्धि। इतरेभ्यः = अन्य पुरुषों की अपेक्षा। प्रतिविशिष्यते = विशिष्ट (बढ़कर) है। तथाप्यसावप्रतिपद्यात्मसंस्कारम् = तथापि + असौ + अप्रतिपद्य + आत्मसंस्कारम्। असौ = वह बुद्धि। अप्रतिपद्य = न पाकर। प्रतिभाति = सुशोभित होती है। अत्युच्छ्रितः = अत्युन्नत। परैः = शत्रुओं के द्वारा। अध्यारुह्यमाणम् = आक्रमण किये जाते हुए। न चेतयते = न समझ पाता है अथवा—समझ सकने में समर्थ नहीं होता है। न च शक्तः = समर्थ नहीं हुआ करता है। साध्यम् = कार्यम् (कार्य)। साधनम् = कारणम्-साधन। विभज्य = पृथक्-पृथक् कर। वर्तितुम् = व्यवहार करने के लिए। हमें कौन-सा कार्य सिद्ध करना है तथा उसमें किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है—इस बात का बुद्धिहीन राजा निर्णय ठीक रूप में नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में वह सफलता के स्थान पर असफलता का ही भागी बना करता है। अयथावृत्तः = अनुचित प्रकार से व्यवहार करने वाला। प्रतिहन्यमानः = विफलता प्राप्त करता हुआ। स्वैः = अपने आत्मीयजनों द्वारा। परिभूयते = तिरस्कार किया जाता है। अवज्ञातस्य = तिरस्कृत (राजा) की। न प्रभवति = समर्थ नहीं होती। योगक्षेमयोः = योग और क्षेम के। योग = "अलब्धस्य लाभो योगः" अर्थात् जो पदार्थ मानव को प्राप्त न हुए हों, उनका प्राप्त करना ही योग कहलाता है। क्षेम = 'लब्धस्य संरक्षणं क्षेमः'—अर्थात् प्राप्त की रक्षा करना 'क्षेम' कहा जाता है। यहाँ पर कहने का भाव यह है कि राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह अप्राप्त वस्तुओं अथवा पदार्थों को प्राप्त करने हेतु प्रयास करे। यदि कुछ वस्तुएँ उनके राज्य में भी प्राप्त नहीं हैं तो उनकी प्राप्ति के लिए भी उद्योग करे तथा जो वस्तुएँ पहले से उसे अथवा उसके राज्य में प्राप्त हो चुकी हैं उनकी सावधानी-पूर्वक से रक्षा करे। आराधनाय = प्राप्त करने के लिए—"साधनाय"। अतिक्रान्तः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शासनाः=शासन (राजा की आज्ञा अथवा नियम) का उल्लंघन करने वाली (प्रजाएँ)। यत्किञ्चनवादिन्यः=अपनी इच्छानुसार जो चाहती हैं वही कहने लगा करती हैं। यथाकथञ्चिद्वर्तिन्यः=जैसा चाहती हैं वैसा व्यवहार भी करने लगा करती हैं। सर्वास्थितिः=सम्पूर्ण मर्यादाओं को। संकिरेयुः=नष्ट-भ्रष्ट कर डाला करती हैं। लोकादितोऽमुतश्च=लोकात् इतः अमुतः च—इस मृत्युलोक से तथा उस परलोक से। भ्रशयेयुः=गिरा देती है—अर्थात्—नष्ट कर डालती है। आगमदीपदृष्टेन=शास्त्र (नीतिशास्त्र) रूपी दीये से देखे गये हुए। अध्वना=मार्ग से। सुखेन=सुखपूर्वक। लोकयात्रा=संसार की यात्रा (जीवन-यात्रा) दिव्यचक्षु=दैवी नेत्र। व्यवहितप्रकृष्टेषु=एक-दूसरे से अलग तथा दूर रहने वाले। अप्रतिहतवृत्ति=जिसकी वृत्ति (गति) कहीं भी न रुकती हो ऐसी। भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् काल की घटनाओं को समझाने में शास्त्र की गति रुक नहीं सकती है। जो विषय एक-दूसरे से पृथक् हैं और जिनका परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्ध भी नहीं है तथा जो विषय बहुत दूर-दूर के हैं उनको भी समझने में शास्त्र की गति के लिए कोई किसी भी प्रकार की बाधा या रुकावट नहीं है। तेन हीनः=उस दिव्य नेत्र अर्थात् शास्त्र से रहित व्यक्ति। सतोः अपि=होते हुए, होने पर भी। आयत-विशालयोः=लम्बे और बड़े-बड़े। लोचनयोः=नेत्रों के होने पर भी। अन्ध एव=अन्धा ही है—"अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्। सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।" जन्तु=प्राणी। अर्थशास्त्रेषु असामर्थ्यात्=अर्थशास्त्र अर्थात् राजनीतिशास्त्र का ज्ञान होने से। विहाय=छोड़कर, त्याग कर। बाह्यविद्यासु=वाहरी विद्याओं में। अभिषङ्गम्=आशक्ति, रुचि। आगमय=प्राप्त करो। दण्डनीतिम्=राजनीति को। स्वकुलविद्याम्=अपने वंश में पूर्व काल से ही चली आती हुई विद्या (दण्डनीति को)। तदर्थानुष्ठाने=उसके नियमों का पालन अथवा अनुसरण करने से। आवर्जितशक्तिसिद्धि=जिसने शक्तियों की सिद्धि प्राप्त कर ली हो ऐसे होकर तुम। भाव यह है कि तीनों प्रकार की शक्तियों में सफलता को प्राप्त कर। शक्तियाँ तीन प्रकार की कही गयी हैं—"शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः" (१) प्रभुशक्ति अर्थात् शासन की शक्ति, (२) उत्साह शक्ति अर्थाद मन और हृदय उत्साह नामक भाव से पूर्णतया परिपूर्ण हो। (३) मन्त्रशक्ति अर्थात् सदैव उचित परामर्श देने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाले मन्त्री आदि। अस्खलितशासनः=जिनके अनुशासन (आज्ञा) का कभी भी उल्लंघन न किया जाता हो ऐसे बनकर (तुम)। शाधि=शासन करो। चिरम्=बहुत समय तक। उदधिमेखलाम्=जो समुद्ररूपी (मेखला) करधनी से परिवेष्टित है अर्थात् जो चारों ओर से समुद्र से घिरी हुई है ऐसी उर्वीम्—पृथ्वी को।

(६) एतदाकर्ण्य स्थान 'एव गुरुभिरनुशिष्टम्। तथा क्रियते' इत्यन्तः पुरमविशत्। तां च वार्तां पार्थिवेन प्रमदासंनिधौ प्रसङ्गेनोदीरितामुपनिशम्य समीपोपविष्टश्चित्तानुवृत्तिकुशलः प्रसादवित्तो गीतनृत्यवाद्यादिष्वबाह्यो बाह्यनारीपरायणः पटुरयन्त्रितमुखो बहुभङ्गिविशारदः परमर्मान्वेषणपरः परिहासयिता, परिवादरुचिः पैशुन्यपण्डितः, सचिवमण्डलादप्युत्कोचहारी, सकलदुर्नयोपाध्यायः कामतन्त्रकर्णधारः कुमारसेवको विहारभद्रो नाम स्मितपूर्वं व्यज्ञापयत्—

हिन्दी—यह (वसुरक्षित नामक वृद्धमन्त्री के उपर्युक्त उपदेश) को सुनकर (अनन्तवर्मा ने कहा)—"हे सचिववर! आप द्वारा उचित ही उपदेश दिया गया है। ऐसा किया जायेगा" (अर्थात् मैं इसका पालन करूँगा) ऐसा कहकर (उसने) अन्तःपुर में प्रवेश किया। स्त्रियों के पास (विद्यमान) राजा (अनन्तवर्मा) द्वारा प्रसङ्गवशात् कहे हुए उस (वृद्ध मन्त्री के उपदेश) को सुनकर, समीप में ही स्थित, राजा की चित्तवृत्ति के अनुसरण करने में चतुर, (राजा की) कृपा पर ही जिसकी वृत्ति निर्भर थी अथवा (राजा की) कृपा विशिष्ट पात्र, गीत, नृत्य, वाद्य आदि में पारंगत, बाहरी स्त्रियों में आसक्त रहने वाला, (अथवा वेश्यागामी), चतुर, अनियन्त्रित मुख वाला (जो चाहे वही बोलने वाला), व्यंग्य बोलने में कुशल (टेढ़ी-मेढ़ी बातों में दक्ष), दूसरों के गोपनीय विषयों के खोजने में तत्पर रहने वाला, हँसने वाला, परनिन्दा में संलग्न, चुगलखोरी करने में पण्डित, मन्त्रिमण्डल (के सदस्यों) से भी घूस लेने वाला, सब प्रकार के अनर्थों का आचार्य, कामशास्त्रवेत्ता, कुमारावस्था

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से ही चला आता हुआ) राजा से सेवक विहार भद्र ने ईषद् हास्य के साथ कहा—

व्याकरण—अनुशिष्टम् = अनु + शास् + क्त, उदीरिताम् = उद् + ईर् + क्त + टाप्। उपनिशम्य = उप + नि + शम् + ल्यप्। उपविष्ट = उप + विश् + क्त। अनुवृत्ति = अनु + वृत् + क्तिन्। परिहासयिता = परि + हस् + णिच् + तृच्। पैशुन्य = पिशुन् + ष्यञ्। उत्कोचहारी = उत्कोच + हृ + णिनि। व्यज्ञापयत् = वि + ज्ञा + णिच् + लङ् लकार—प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।

समास—प्रमदासंनिधौ = प्रमदानां सन्निधिः इति प्रमदासंनिधिः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। समीपोपविष्टः = समीपे उपविष्टः इति समीपोपविष्टः (सप्तमी तत्पुरुष)। चित्तानुवृत्तिकुशलः = चित्तस्य अनुवृत्तिः इति चित्तानुवृत्तिः चित्तानुवृत्तौ कुशलः इति (सप्तमी तत्पुरुष)। प्रसादवित्तः = प्रसादेन वित्तः इति (तृतीया तत्पुरुष)। बाह्यनारीपरायणः = बाह्यश्च ताः नार्यः बाह्यनार्यः (कर्मधारय समास) तासु परायणः इति (सप्तमी तत्पुरुष)। अयन्त्रितमुखः = न यन्त्रितः मुखं यस्य सः (बहुव्रीहि)। बहुभङ्गिविशारदः = बह्व्यश्च ताः भङ्ग्यश्च इति बहुभङ्ग्यः (कर्मधारय) तासु विशारदः इति। परमर्मान्वेषणपरः = परेषां मर्माणि (षष्ठी तत्पुरुष) तेषां अन्वेषणाम् परमर्मान्वेषणम् (षष्ठी तत्पुरुष) तदेव परं प्रधानं कर्म यस्य सः (बहुव्रीहि)। परिवादरुचिः = परिवादे रुचिः यस्य सः (बहुव्रीहि)। पैशुन्यपंडितः = पिशुनस्यः भावः पैशुन्यम्, पैशुन्ये पंडितः इति (सप्तमी तत्पुरुष)। कामतन्त्रकर्णधारः = कामतन्त्रे कर्णधारः इति (सप्तमी तत्पुरुष)। कुमार सेवकः = कुमारावस्थायाः प्रभृति सेवकः इति कुमार-सेवकः। स्मितपूर्वम् = स्मित पूर्वं यस्मिन् (कर्मणि) तद्।

टिप्पणियाँ—स्थाने एव = स्थाने एव = उचित (ठीक) ही। गुरुभि = श्रीमान् जी के द्वारा आपके द्वारा। अनुशिष्टम् = उपदेश दिया गया अर्थात् आपने मुझे ठीक ही उपदेश दिया। तथा क्रियते = वैसा ही किया जाता है। भाव यह है कि (मैं) ऐसा (आपके उपदेश के अनुसार) ही करूँगा। अन्तःपुरम् = रानियों के रहने का महल। पार्थिवेन = राजा—(अनन्तवर्मा) (द्वारा)। प्रमदासन्निधौ = स्त्रियों के पास में। प्रसङ्गेन = बातों के दौर में—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
BVBSSMV

प्रसङ्ग में। उदीरिताम्=कही हुई। उपनिशम्य=सुनकर। समीपोपविष्ट:=पास में बैठा हुआ। चित्तानुवृत्तिकुशल:=राजा को इच्छा के अनुकूल चलाने में चतुर। अनुवृत्ति=अनुसार चलना। प्रसादवित्त:=राजा की कृपा के कारण प्रसिद्ध। प्रसाद=कृपा। वित्त=प्रसिद्ध, विख्यात। वादित्र=बाजे। अबाह्य=बाहर नहीं। भाव यह है—गीत, नृत्य तथा बाद्य आदि सभी में उसका प्रवेश था अर्थात् सभी का ज्ञान रखता था। बाह्यनारीपरायण:=दूसरी (बाहर की) स्त्रियों में आसक्त अथवा वेश्याओं में आसक्त। परायण=संलग्न, आसक्त अथवा प्रेम करने वाला। अयन्त्रितमुख:=जिसके मुंह में ताला नहीं लगा था अर्थात् जो अपनी इच्छानुसार जो चाहता था, बोलता था। बहुभङ्गिविशारद:=व्यङ्ग्यभरी बातों को कहने में चतुर (प्रवीण)। भङ्गि=वक्रोक्ति टेढ़ा-मेढ़ा बोलना। विशारद=चतुर, निपुण। परमर्मान्वेषणपर:=दूसरों के दोष खोजने में संलग्न। मर्म=दोष। परिहासयिता=हँसने वाला। परिवादरुचि:=दूसरों की निन्दा (बुराई) करने तथा सुनने में रुचि रखने वाला। परिवाद=निन्दा। पशुन्यपण्डित:=चुगलखोरी करने में चतुर। पैशुन्य=परोक्षनिन्दा। उत्कोचहारी=गुप्त रूप से धन लेने वाला, रिश्वत अथवा घूस लेने वाला। उत्कोच=रिश्वत, घूस। दुर्नयोपाध्याय:=अनर्थों का आचार्य अर्थात् दुष्टता करने में अत्यन्त पटु—लम्पट। कामतन्त्रकर्णधार:=कामशास्त्र का अच्छा ज्ञाता। कुमारसेवक:=कुमारावस्था से ही राजा की सेवा में रहने वाला नौकर। स्मितपूर्वम्=ईषद् हास्य के साथ, मुस्कुराते हुए। व्यज्ञापयत्=कहा।

(७) देव, दैवानुग्रहेण यदि कश्चिद् भाजनं भवति विभूतेः, तमकस्मादुच्चावचैरपप्रलोभनैः कदर्थयन्तः स्वार्थं साधयन्ति धूर्ताः। तथाहि। केचित्प्रेत्य किल लभ्यैरभ्युदयातिशयैराशामुत्पाद्य, मुण्डयित्वा शिरः, बद्ध्वा दर्भरज्जुभिः, अजिनेनाच्छाद्य, नवनीतेनोपलिप्य, अनशनं च शाययित्वा, सर्वस्वं स्वीकरिष्यन्ति। तेभ्योऽपि घोरतराः पाषण्डिनः पुत्रदारशरीरजीवितान्यपि मोचयन्ति। यदि कश्चित्पटुजातीयो नास्यै

Funding by IKS-MoE

815

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मृगतृष्णिकायैहस्तगतंत्यक्तुमिच्छेत्, तमन्ये परिवार्याहुः—एकामपि काकिणीं कार्षापणलक्षमापादयेम, शस्त्राहते सर्वशत्रून् घातयेम, एकशरीरिणमपि मर्त्यं चक्रवर्तिनं विदधीमहि, यद्यस्मदुद्दिष्टेन मार्गेणाचर्यते, इति ।

हिन्दी— हे देव ! यदि भाग्य की दया से कोई व्यक्ति ऐश्वर्य का पात्र बन जाता है तो अकस्मात् ही धूर्त्तगण उसे ऊँचे-नीचे (अर्थात् नाना प्रकार के) प्रलोभनों से तंग करते हुए (अथवा उसकी निन्दा करते हुए) अपना स्वार्थ-साधन करते रहते हैं । उदाहरण के लिए—कोई-कोई (तो) मरने के पश्चात् प्राप्त होने वाले ऐश्वर्यों की आशा उत्पन्न कर, सिर मुंडवाकर कुश की रस्सी बांधकर, कृष्णमृग के चर्म को ओढ़कर, मक्खन से उसे लेपकर बिना खिलाये-पिलाये (उपवास के साथ) सुलाकर (उसका) सर्वस्व अपहरण कर लेते हैं। उनसे भी अधिक भयङ्कर पाखण्डी जन (धूर्त्तराज) उससे उसके पुत्र, स्त्री, शरीर तथा प्राण तक छुड़वा दिया करते हैं । यदि कोई चतुर व्यक्ति इस मृग-तृष्णा (झूठी आशा) के निमित्त हाथ में (विद्यमान) धन को नहीं छोड़ना (उनको देना) चाहता है, तो दूसरे लोग उसे घेरकर कहते हैं कि यदि हमारे द्वारा बतलाये गये मार्ग का अनुसरण किया जाये तो (हम) एक कौड़ी को भी लाख कार्षापण बना सकते हैं । बिना शस्त्र के ही सम्पूर्ण शत्रुओं को मरवा सकते हैं, किसी शरीरमात्रधारी पुरुष को भी चक्रवर्ती (सम्राट्) बना सकते हैं ।

व्याकरण—कदर्थयन्तः = कदर्थ + शतृ (प्रथमा विभक्ति के बहुवचन के रूप) । प्रेत्य = प्र + इण् + ल्यप् । लभ्यैः = लभ् + यत् । यहाँ 'पोरदुपधात् यत' सूत्र से 'यत्' प्रत्यय होता है । मुंडयित्वा = मुंड + क्त्वा । बद्ध्वा = बन्ध् + क्त्वा । आच्छाद्य = आ + छद् + णिच् + ल्यप् । उपलिप्य = उप + लिप् + ल्यप् । शाययित्वा = शी + णिच् + ल्यप् पाखंडिनः = पाखंड + इनि । मोचयन्ति—मुच + णिच् (लट लकार के प्रथमपुरुष के बहुवचन का रूप है) । त्यक्तुम् = त्यज् + तुमुन् । परिवार्य = परि + वृ + णिच + ल्यप् । शस्त्रात् ऋते यहाँ ऋते के योग में "अन्यारादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" में वर्णित नियम के आधार पर पंचमी विभक्ति हुई है । घातयेम् = हन् + णिच्

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(विधिलिङ् के उत्तम पुरुष के बहुवचन का रूप)। विदधीमहि = वि + धा + विधिलिङ्ग। (उत्तम पुरुष का बहुवचन का रूप)। उद्दिष्ट = उद् + दिश् + क्त।

समास—**दैवानुग्रहेण:** = दैवस्य अनुग्रहः इति दैवानुग्रहः तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। **उच्चावचैः** = उदञ्चि च अवाञ्चि च इति उच्चावचानि तैः। **कदर्थः** = कुत्सितः अर्थः। **दर्भरज्जुभिः** = दर्भाणां रज्जुभिः—इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अनशनम्** = न विद्यते अशनं यस्मिन् कर्मणि तत् (बहुव्रीहि)। **सर्वस्वम्** = सर्वं च तत् स्वं च इति सर्वस्वम् (कर्मधारयः)। **पुत्रदारशरीरजीवितानि** = पुत्राश्च दाराश्च शरीरं च जीवितं च इति पुत्रदारशरीरजीवितानि (द्वन्द्व समास)। **हस्तगतं**—हस्ते गतम् इति। **कार्षापणलक्षम्** = कार्षापणानां लक्षम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **एकशरीरिणम्** = एकाकिनम् पुरुषम्। पाठयेदे = **एकशरीरमात्रम्**—शरीरं एव इति शरीरमात्रम् एकं शरीरमात्रं विद्यते यस्य सः एकशरीरमात्रः तम् (बहुव्रीहि)। **अस्मदुद्दिष्टेन** = अस्माभिः उद्दिष्टः इति अस्मदुद्दिष्टः तेन (तृतीया तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—**दैवानुग्रहेण** = भाग्य की कृपा या दया से। **भाजनम्** = पात्र। **विभूतेः** = ऐश्वर्य का, सम्पत्ति का। **अकस्मात्** = निष्कारण। **उच्चावचैः** = ऊँची और नीची अर्थात् नाना प्रकार की। **उपप्रलोभनैः** = लालचों से। **कदर्थयन्तः** = तंग (पीड़ित) करते हुए। **केचित्** = कोई-कोई। **प्रेत्य** = मरने के पश्चात्। **लभ्यैः** = प्राप्त होने वाले। **प्रेत्यलभ्यैः** = मरणानन्तर अर्थात् दूसरे जन्म में मिलने वाले। **अभ्युदयातिशयैः** = ऐश्वर्य के आधिक्य से। **अभ्युदय** = ऐश्वर्य। भाव यह है कि = ऐश्वर्य प्राप्त होने का लोभ उत्पन्न कर। **किल** = निश्चय ही। **शिरः मुंडयित्वा** = सिर मुँडवाकर अर्थात् सिर के केशों को मुँडवा लेने पर। **बद्ध्वा** = बाँधकर। **दर्भरज्जुभिः** = कुशों द्वारा निर्मित रस्सियों से। **अजिनेन** = कृष्णवर्ण के हरिण के चर्म से। **आच्छाद्य** = ढककर, ओढ़ाकर। **नवनीतेन** = मक्खन से। **उपलिप्य** = लपेटकर। **अनशनम्** = भोजन बिना ही। **शाययित्वा** = सुलाकर। **सर्वस्वम्** = सम्पूर्ण धन अथवा सब कुछ। **स्वीकरिष्यन्ति** = स्वीकार कर लेंगे—यहाँ इसका भाव वर्तमान काल में प्रयुक्त

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

—अर्थात् ले लिया करते हैं। तेभ्य अपि घोरतराः=उनकी अपेक्षा और भी अधिक भयंकर। पाखण्डिनः=धूर्त्त पाखण्डी। दार=स्त्री यह शब्द नित्य पुल्लिग तथा बहुवचनान्त हुआ करता है। जीवितानि=प्राणों को। मोचयन्ति =छुड़वा देते हैं। पटुजातीयः=चतुर प्रकार का (व्यक्ति)। मृगतृष्णिकार्यैः= मृगतृष्णा अर्थात् झूठी आशाओं के लिए। हस्तगतम्=हाथ में विद्यमान। त्यक्तुम्=त्यागने के लिए। अन्ये=दूसरे (राजनीतिज्ञ)। परिवार्य=चारों ओर से घेरकर काकिणीम्=कौड़ी को। कार्षापणलक्षम्=कार्षापण नाम का एक सिक्का था, जिसका मूल्य आधुनिक ६ पैसे से कुछ अधिक हुआ करता था। कुछ लोगों का कथन है कि यह सिक्का सोलह पैसे का होता था। आपादयेम=बनवा सकते हैं। तात्पर्य यह है कि वे धूर्त्त यह कहा करते थे कि हम लोग एक कौड़ी की लागत से लाखों रुपया पैदा करवा देने की योग्यता रखते हैं। शास्त्रात् ऋते=बिना शास्त्र के ही। घातयेम=मरवा सकते हैं। एकशरीरिणम् मर्त्यम् अथवा एकशरीरमात्रमपिमिर्त्यम्=ऐसा पुरुष कि जिसके पास केवल अपना शरीर ही हो, उसको भी। विदधीमहि=कर दे अर्थात् चक्रवती बना सकते हैं। अस्मदुद्दिष्टमार्गेण=हमारे द्वारा बतलाये गये हुए मार्ग से। आचर्यते=आचरण किया जाता है, चला जाता है। यहाँ विधिलिङ् लकार के अर्थ में प्रयुक्त है। अर्थात् आचरण किया जाये या उस पर चला जाये तो।

(८) स पुनरिमान्प्रत्याह—'कोऽसौ मार्गः' इति। पुनरिमे ब्रुवते—"ननु चतस्रो राजविद्यास्त्रयी वार्तान्वीक्षिकी दण्डनीतिरिति। तासु तिस्रस्त्रयीवार्तान्वीक्षिक्यो महत्यो मन्दफलाश्च तास्तावदासताम्। अधीष्व तावद्दण्डनीतिम्। इयमिदानीमाचार्यविष्णुगुप्तेन मौर्यार्थे षड्भिः श्लोकसहस्रैः संक्षिप्ता। सैवेयमधीत्य सम्यगनुष्ठीयमाना यथोक्तकर्मक्षमा" इति।

अनुवाद—(यदि उस धूर्त्त की इन लम्बी-चौड़ी बातों पर विश्वास करके कोई पूछता है कि) आपका "वह कौन-सा मार्ग है?" (तो) फिर वे धूर्त्त

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहते हैं—'निश्चय ही चार प्रकार की राजविद्याएँ होती हैं"—(१) त्रयी (ज्ञान, कर्म तथा उपासना की दृष्टि से वेदत्रयी-ऋक्, यजु, साम), (२) वार्त्ता (गुप्तचर विषयक शास्त्र अथवा अर्थशास्त्र), (३) अन्वीक्षिकी (न्यायशास्त्र) तथा दण्डनीति (राजनीति)। इनमें से (प्रथम) तीन (त्रयी, वार्त्ता और अन्वीक्षिकी) तो अति परिश्रम साध्य हैं तथा स्वल्प फल देने वाली हैं; अतः इन्हें रहने दो (इनके जानने की आवश्यकता नहीं है) पहले दण्डनीति (राजनीति) का अध्ययन करो। इस समय यह (राजनीति), आचार्य विष्णुगुप्त द्वारा, चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए छः हजार श्लोकों में संक्षिप्त कर दी गयी है। वही, इसका अध्ययन कर, भली-भाँति व्यवहार में लायी जाती हुई, यथोक्त फल देने में समर्थ होगी।

व्याकरण—इमान् प्रति=यहाँ "इमान्" में "अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि" में वर्णित नियम के अनुसार 'प्रति' के योग में द्वितीया विभक्ति हुई है। **ब्रुवते**=ब्रू+लट् (प्रथम पुरुष के बहुवचन का रूप)। **आसताम्**=आस्+लोट्। **संक्षिप्ता**=सम्+क्षिप्+क्त+टाप्। **अनुष्ठीयमाना**=अनु+स्था+शानच्+टाप्।

समास—मन्दफलाः=मन्दं फलं यासां ताः (बहुव्रीहि)। **यथोक्तकर्मक्षमा**=यथोक्तं च तत् कर्म इति यथोक्तकर्म (कर्मधारयः) तस्मिन् क्षमा इति यथोक्तकर्मक्षमा। **राजविद्याः**=राज्ञां विद्याः इति (षष्ठी तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—ब्रुवते=कहते हैं। **चतस्रः राजविद्याः**=चार प्रकार की राजविद्याएँ होती हैं: (१) त्रयी, (२) वार्त्ता (३) अन्वीक्षिकी, (४) दण्डनीति। (१) त्रयी का अर्थ है—वेदत्रयी अर्थात् ज्ञान, कर्म एवं उपासना—इन त्रिविध प्रकार के विषयों के आधार पर वेदों का ज्ञान। ऋग्वेद में ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म तथा सामवेद में उपासना का वर्णन आता है तथा अथर्ववेद में तीनों का मिश्रित ज्ञान विद्यमान है। वार्त्ता से अभिप्राय गुप्तचर विषयक ज्ञान से है अथवा अर्थनीति से भी इसका अभिप्राय लिया जाता है। अन्वीक्षिकी—वह विद्या है कि जिसके द्वारा आत्मनिरीक्षण किया जाता है—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके अन्तर्गत दर्शनशास्त्र अथवा तर्कशास्त्र का विषय आ जाता है। दण्ड—नीति—से अभिप्राय राजनीति से है। दण्ड का अर्थ होता है 'शासन' अर्थात् राज्य का संचालन—उससे सम्बन्धित नीति को राजनीति ही कहा जा सकता है। राज्य सम्बन्धी सभी प्रकार के कार्यों का विधिवत् सञ्चालन कैसे किया जाना चाहिये, किससे सन्धि की जाये और किससे विग्रह (युद्ध) किया जाये। इत्यादि सभी कार्य इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। **मन्दफला:**=स्वल्प फल देने वाली। **तास्तावदासतान्**=ता:+तावद्+आसताम्। **आसतान्**=बैठी रहें, स्थित रहें, रुकी रहें अर्थात् इनको रहने दो (छोड़ दो)। **अधीष्व**=पढ़ो, अध्ययन करो। **तावत्**=इसका भाव यहाँ पर है—पहले। **विष्णुगुप्त**=यह चाणक्य का ही दूसरा नाम है। **मौर्यार्थे**=चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए। **षड्भि: श्लोकसहस्रै:**=छ: हजार श्लोकों के द्वारा अर्थात् छ: हजार श्लोकों के ही अन्दर। **सैवेयमधीत्य**=सा+एव+इयम्+अधीत्य। **अधीत्य**=पढ़कर। **सम्यक् अनुष्ठीयमाना**=भली-भाँति व्यवहार में लायी गयी हुई। अर्थात् यदि उसके अनुसार चला जाये तो। **यथोक्तकर्मक्षमा**=कहे गये हुए अर्थात् अभीष्ट फल को देने में समर्थ (हुआ करती है)।

(९) स 'तथा' इत्यधीते शृणोति च। तत्रैव जरां गच्छति। तत् किल शास्त्रं शास्त्रान्तरानुबन्धि। सर्वमेव वाङ्मयमविदित्वा न तत्त्वतोऽधिगम्यते। भवतु कालेन बहुनाऽल्पेन वा तदर्थाधिगतिः। अधीतशास्त्रेण चादावेव पुत्रदारमपि न विश्वास्यम्। आत्मकुक्षेरपि कृतण्डुलैरियद्भिरियानोदन: संपद्यते। इयत ओदनस्य पाकायैतावदिन्धनं पर्याप्तमिति मानोन्मानपूर्वकं देयम्। उत्थितेन च राज्ञा क्षालिताक्षालिते मुखे मुष्टिमर्धमर्मुष्टिवाऽभ्यन्तरीकृत्य कृत्स्नमायव्ययजातमह्नः प्रथमेऽष्टमे वा भागे श्रोतव्यम्। शृण्वत एवास्य द्विगुणमपहरन्ति तेऽध्यक्षधूर्त्ताः। चत्वारिंशतं चाणक्योपदिष्टानाहरणोपायान्सहस्रधात्मबुद्ध्यैव ते विकल्पयितारः।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुवाद—वह (धनी व्यक्ति) "ठीक है" ऐसा कहकर [वह दण्डनीति] पढ़ने तथा सुनने लगता है। इसी में वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है। [जब वह शिष्य दण्डनीति के मन्थन से घबराता है तो धूर्त उसे समझाता है:—] वह शास्त्र अन्य शास्त्रों से सम्बन्धित है; अतः बिना सम्पूर्ण शास्त्रों को जाने वह ठीक-ठीक समझ में नहीं आता। मान लो, अधिक या थोड़े समय में उसकी प्राप्ति हो भी गयी तो शास्त्र [दण्डनीति अथवा राजनीति] पढ़ लेने वाले [व्यक्ति] के द्वारा सर्वप्रथम, पुत्र तथा स्त्री भी विश्वास योग्य नहीं रह जाती है। अपने पेट के लिए भी 'इतने चावलों से इतना भात तैयार होता है, इतने भात को पकाने के लिए इतना ईंधन पर्याप्त है', इस भाँति तौल-नापकर (वस्तुएँ) दी जाने लगा करती हैं। [सूर्योदय से पूर्व] उठकर राजा को धुले अथवा न धुले हुए मुख में ही, एक अथवा आधी मुट्ठी (अन्न) अन्दर करके (पेट में डालकर) राज्य के सम्पूर्ण आय-व्यय का हिसाब दिन के पहले आठवें पहर में [सुनना चाहिये] सुनना पड़ा करता है। चाणक्य द्वारा बतलाये गये हुए, चोरी के चालीस प्रकार के उपायों को अपनी बुद्धि से हजारों प्रकार का बना लेने वाले वे धूर्त (अध्यक्ष) उस (राजा) के सुनते ही सुनते दूना धन अपहरण कर (ही) लिया करते हैं।

व्याकरण—**अनुबन्धित**=अनु+बन्ध+णिनि। **अविदित्वा**=नञ्+विद्+क्त्वा। **अधिगम्यते**=अधि+गम्+कर्मणि+लृट्। **बहुना अल्पेन कालेन तदर्थाधिगतिः**=यहाँ पर 'बहुना', 'अल्पेन', 'कालेन,' में 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र में वर्णित नियम के अनुसार तृतीया विभक्ति हुई है। **अधिगति**=अधि+गम्+क्तिन्। **विश्वास्य**=वि+श्वस्+णिक्+ण्यत्। **पाकाय**=पच्+घञ्। **देयम्**=दा+यत्=यहाँ 'अचो यत्' सूत्र से स्वरान्त दा धातु से यत् प्रत्यय हुआ है। **उत्थितेन**=उत्+स्था+क्त। **शृण्वतः**=श्रु शतृ (पुल्लिङ्ग=षष्ठी विभक्ति का एकवचन)। **उपविष्टः**=उप+दिश्+क्त। **आहरण**=आ+हृ+ल्युट्। **सहस्रधा**=सहस्र+धा—यहाँ 'प्रकार' अर्थ में धा प्रत्यय होता है। **आत्मबुद्ध्या**=आत्म+बुध्+क्तिन् (स्त्रीलिङ्ग में)। **विकल्पयितारः**=वि+कल्प्+लुट्—प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप। इस स्थान पर यह अनद्यतनभविष्यत् काल वर्तमानकाल के अर्थ में ही प्रयुक्त है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समास—**शास्त्रान्तरानुबन्धि**=अन्यानि शस्त्राणि इति शास्त्रान्तराणि (मयूरव्यंसकादि समास) तानि अनुबध्नाति तच्छीलम् इति शास्त्रान्तरानुबन्धि। **तदर्थाधिगतिः**=तस्य अर्थस्य अधिगतिः इति (षष्ठी तत्पु०)। **अधिगतशास्त्रेण**=अधिगतानि शास्त्राणि येन सः अधिगतशास्त्रः तेन (बहुव्रीहि)। **पुत्रदारम्**=पुत्राश्च दाराश्च एतेषां समाहारः इति (समाहार द्वन्द्व)। **आत्मकुक्षेः**—आत्मनः कुक्षि इति तस्य आत्मकुक्षेः (षष्ठी तत्पुरुष)। **इयद्भिः**—इदं परिमाणमेषां इति इयन्तः तैः। **मानोन्मानपूर्वकम्**=मानं च उन्मानं च इति मानोन्माने (द्वन्द्व समास) मानोन्माने पूर्वं यस्मिन् (कर्मणि) तत् यथा स्यात्तथा। **क्षालिताक्षालिते**=न क्षालितं इति अक्षालितम् (नञ् तत्पुरुष), क्षालितं वा अक्षालितं वा इति क्षालिताक्षालितं (कर्मधारय) तस्मिन्। **आयव्ययजातम्**=आयश्च व्ययश्च इति आयव्ययो तयोः जातम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। यहाँ 'द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं सम्बध्यते' नियम के आधार पर 'आयजातम्' तथा 'व्ययजातम्' दोनों का ग्रहण किया जायेगा। **अध्यक्षधूर्त्ताः**=धूर्त्ताः अध्यक्षाः इति अध्यक्षधूर्त्ताः। **द्विगुणम्**=द्वौ गुणौ यस्य यस्मिन् वा तत् (बहुव्रीहि)। **चाणक्योपदिष्टान्**=चाणक्येन उपदिष्टाः इति चाणक्योपदिष्टाः तान (तृतीया तत्पुरुष)। **आहरणोपायान्**=आहारणस्य उपायाः आहरणोपायाः तान् (षष्ठी तत्पुरुष)। **आत्मबुद्ध्या**=आत्मनः बुद्धिः आत्मबुद्धि तया (षष्ठी तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—**सः**=वह राजा। **तथा इति**=''ऐसा ही होगा''—यह कहकर। **अधीते**=पढ़ता है। **जराम्**=बुढ़ापा, वृद्धावस्था। **शास्त्रान्तरानुबन्धि**=दूसरे (अन्य) शास्त्रों का अनुगमन करने वाला। **वाङ्मय**=शास्त्र। **अविदित्वा**=बिना जाने हुए। **तत्वत**=वस्तुतः, वास्तव में। **न अधिगम्यते**=नहीं प्राप्त होगी। **भवतु**=होगा, खैर। **बहुना अल्पेन वा कालेन**=बहुत या थोड़े समय के अन्दर। **तदधिगति**=उसकी प्राप्ति। **अधिगतशास्त्रेण**=प्राप्त कर लिये गये (पढ़ लिये गये) हैं, शास्त्र जिसके द्वारा, ऐसे मनुष्य के द्वारा। **आदौ**=पहले। **पुत्रदारम्**=पुत्र तथा स्त्री। **न विश्वस्यम्**—नहीं विश्वास किया जाना चाहिये (अर्थात् इन लोगों का भी विश्वास जाता रहता है अथवा यह लोग भी अविश्वासी हो जाया करते हैं)। **आत्मकुक्षे**=अपने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कोख (पेट) के कृते=लिए (अव्यय)। इयद्भिः=इतने से। तण्डुलैः= चावलों से। इयत्=इतना। यह 'ओदन' का विशेषण है। ओदनः= भात। इयत् ओदनस्य=इतना भात। सम्पद्यते=तैयार होता है। इयतः= (षष्ठी विभक्ति के एकवचन का रूप)—यह 'ओदनस्य' का विशेषण है। पाकाय=पकाने के लिए। एतावत् इन्धनम्=इतना ईंधन (लकड़ी)। मानोन्मानपूर्वकम्=नाप तथा जोख कर। मान=नाप। उन्मान=तौल। देयम्=दिया जाना चाहिये अर्थात् दिया जाया करता है। उत्थितेन=उठे (राजा) के द्वारा। क्षालिताक्षालिते=धोये अथवा न धोये हुए। यह 'मुखे' का विशेषण है। चाहे मुख धुला हो अथवा न धुला हो। मुष्टिम्=मुट्ठी भर (अन्न)। अर्धमुष्टिम्=आधी मुट्ठी (अन्न) अभ्यन्तरीकृत्य=अन्दर करके अर्थात् पेट में डालकर (खाकर) कृत्स्नम्=सम्पूर्ण। आयव्ययजातम् =आय और व्यय का समूह। जातम्=सङ्घ। अह्न=दिन के, प्रथमे अष्टमे भागे=पहले आठवें भाग में। श्रोतव्यम्=सुना जाना चाहिये। कहने का तात्पर्य है राजा को सर्वप्रथम प्रहर में आय तथा व्यय (खर्च) का विवरण सुनना तथा जाँचना आवश्यक हो जाया करता है। शृण्वन=सुनते-सुनते (हुए)। यह 'अस्य' का विशेषण है। अस्य=उसके। शृण्वतः अस्य= में 'षष्ठी चानादरे' में वर्णित नियम के अनुसार षष्ठी विभक्ति हुई है। कहने का भाव यह है उस राजा की तनिक भी चिन्ता न कर उसके देखते ही देखते, उनके सुनते ही सुनते धूर्त्त लोग दूना धन चुरा लिया करते हैं। अध्यक्षधूर्त्ता=धूर्त्त राजकर्मचारीगण। द्विगुणम्=दुगुना। चाणक्योपदिष्टान् =चाणक्य द्वारा बतलाये गये हुए। यह "आहरणोपायान्" का विशेषण है। आहरणोपायान्=चोरी के उपायों को। चत्वारिंशत्=चालीस। सहस्रधा= हजारों प्रकार से। आत्मबुद्ध्य एव=अपनी बुद्धि के द्वारा ही। विकल्पयितारः=कल्पना कर लेंगे अथवा बना लेंगे। तात्पर्य यह है कि चाणक्य ने तो चोरी के चालीस उपाय बतलाये हैं, किन्तु ये धूर्त्त राजकर्मचारी अपनी बुद्धि से हजारों प्रकार के उपायों को सोच लिया करते हैं तथा उनके द्वारा राजा को ठगा करते हैं अथवा उसके धन को लूटा करते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१०) द्वितीयेऽन्योन्यं विवदमानानां प्रजानामाक्रोशाद्दह्यमानकर्णः कष्टं जीवति। तत्रापि प्राड्विवाकादयः स्वेच्छया जयपराजयौ विदधानाः पापेनाकीर्त्या च भर्तारमात्मनंचार्थैर्योजयन्ति। तृतीये स्नातुंभोक्तुंच लभते। भुक्तस्य यावदन्धः परिणामस्तावदस्य विषभयं न शाम्यत्येव। चतुर्थे हिरण्यप्रतिग्रहाय हस्तं प्रसारयन्नेवोत्तिष्ठति। पञ्चमे मन्त्रचिन्तया महान्तमायासमनुभवति। तत्रापि मन्त्रिणो मध्यस्था इवान्योन्यं मिथः संभूय, दोषगुणौ दूतचारवाक्यानि शक्याशक्यतां देशकालकार्यावस्थाश्च स्वेच्छया विपरिवर्त्तयन्तः, स्वपरमित्रमण्डलान्युपजीवन्ति। बाह्यभ्यन्तरांश्च कोपान् गूढमुत्पाद्य प्रकाशं प्रशमयन्त इव स्वामिनमवशमवगृह्णन्ति।

हिन्दी—दूसरे प्रहर में परस्पर लड़ती-झगड़ती हुई प्रजाओं के शोरगुल से (राजा का) कान जल (सुनते-सुनते) जाता है (और इस भांति वह) कष्टपूर्वक जीता है। वहां भी न्यायकर्त्ता (अफसर लोग) अपनी इच्छानुसार, जीत तथा हार के फैसलों को सुनाते हुए राजा को पाप तथा अपकीर्ति से और अपने को धन से जीत लेते हैं। [अर्थात् वे अफसर लोग खूब रिश्वत ले लेकर अपना घर भरते हैं तथा बेचारा राजा व्यर्थ में ही अपयश और पाप का भागी बना करता है]। तृतीय प्रहर में स्नान तथा भोजन कर पाता है। खाना खा चुकने के पश्चात् भी जब तक अन्न का पाचन नहीं हो जाता तब तक उसके (राजा) मन से विष का भय शान्त नहीं होता है [अर्थात् जब तक भोजन ठीक रूप में पच नहीं जाता तब तक राजा के मन में यह चिन्ता लगी ही रहा करती है कि कहीं किसी ने भोजन में विष तो नहीं मिला दिया]। चतुर्थ प्रहर में स्वर्ण (राज-कर) लेने के निमित्त उसे हाथ फैलाये हुए ही उठना पड़ा करता है। पाँचवें में विचार-विमर्श की चिन्ता (मन्त्रियों से सलाह लेने की चिन्ता) से अत्यन्त कष्ट का अनुभव करना पड़ा करता है। वहाँ भी मन्त्री मध्यस्थ लोगों के सदृश, आपस में मिलकर, दोष

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा गुणों को, राजदूत तथा गुप्तचरों की बातों को, (कार्यों आदि की) साध्यता और असाध्यता को, देश, काल तथा कार्य की अवस्था को अपनी इच्छा के अनुसार परिवर्तित करते हुए (राजा को उल्टा-सीधा समझते हुए) अपने मित्रों के धन पर तथा अपने शत्रुओं के मित्रों के धन पर जीवन-निर्वाह किया करते हैं। बाहरी तथा भीतरी क्रोधों (झगड़ों) को छिपे हुए रूप में उत्पन्न कर प्रकट रूप में (झगड़ों को) शान्त-सा करते हुए राजा को विवश करके अपने चंगुल में फँसाये रखा करते हैं।

व्याकरण—विवदमानानाम् = वि + वद् + शानच् + टाप्। **आक्रोशात्** = आ + क्रुश् + घञ्। **विदधाना:** = वि + धा + शानच्। **भुक्तस्य** = भुज् + क्त। **परिणाम:** = परि + नम् + घञ्। **भयम्** = भी + अच्। यहाँ 'एरच्' सूत्र से ईकारान्त 'भी' धातु से भाव अर्थ में अच् प्रत्यय होता है। **प्रतिग्रहाय** = प्रति + ग्रह् + अप्। **प्रसारयन्** = प्र + सृ + णिच् + शतृ। **आयासम्** = आ + यस् + घञ्। **सम्भूय** = सम् + भू + ल्यप्। **शक्यता** = शक्य + तल् + टाप्। **विपरिवर्त्तयन्त:** = वि + परि + वृत् + णिच् + शतृ (प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का रूप है)। **बाह्य** = बहि + घञ्। **अभ्यन्तरा** = अभ्यन्तर + अण्। **प्रशमयन्त:** प्र + शम् + णिच् + शतृ।

समास—दह्यमानकर्ण: = दह्यमानौ कर्णौ यस्य स: (बहुव्रीहि)। **प्राड्-विवाकादय:** = पृच्छति इति प्राड् अथवा प्राट्, विविनक्ति इति विवाक् च इति प्राड्विवाकौ तौ आदौ येषां ते प्राड्विवाकादय: = (बहुव्रीहि)। **अकीर्त्या** = न कीर्ति: इति अकीर्ति: तया (नञ् तत्पुरुष)। **भुक्तस्य** = भुक्तं अस्यास्तीति: भुक्त: तस्य। **अन्ध: परिणाम:** = अन्धस: (अन्नस्य) परिणाम: इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **विषभयम्** = विषात् भयम् इति (पञ्चमी तत्पुरुष)। **हिरण्यप्रतिग्रहाय** = हिरण्यस्य प्रतिग्रह: इति हिरण्यप्रतिग्रह: तस्मै (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन्त्रचिन्तया** = मन्त्रस्य चिन्ता इति मन्त्रचिन्ता तया (षष्ठी तत्पुरुष)। **मध्यस्था** = मध्ये तिष्ठन्तीति मध्यस्था:। **दूतचारवाक्यानि** = दूताश्च चाराश्च इति दूतचारा: (द्वन्द्व समास) तेषां वाक्यानि इति (षष्ठी तत्पुरुष समास)। **दोषगुणौ** = दोषश्च गुणश्च इति दोषगुणौ (द्वन्द्व)। **शक्याशक्यताम्** = शक्यं च अशक्यं च इति। शक्याशक्ये (द्वन्द्व), तयो भाव: शक्याशक्यतातम्। **देशकालकार्यावस्थाम्** =

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देशश्च कालश्च कार्यञ्च इति देशकालकार्याणि (द्वन्द्व) तेषां अवस्थाः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। स्वपरमित्रमण्डलानि = मित्राणां मण्डलानि इति मित्रमण्डलानि इति (षष्ठी तत्पुरुष), स्वेषां मित्रमण्डलानि अथ च परेषां मित्रमण्डलानि इति स्व-पर-मित्रमण्डलानि। अथवा = स्व (अपने) च परे (शत्रुओं के) च इति स्व-परे (द्वन्द्व समास) तेषां मित्रमण्डलानि इति (षष्ठी तत्पुरुष) द्वन्द्व समास के अन्त में जुड़ा हुआ पद प्रत्येक पूर्ववर्त्ती पद के साथ सम्बद्ध हुआ करता है ऐसा नियम है (द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं सम्बध्यते); अतः इसी आधार पर मित्रमण्डलानि पद 'स्व' तथा 'पर' दोनों ही पूर्ववर्त्ती पदों के साथ सम्बन्धित हैं। बाह्याभ्यन्तरान् = बहिः भवाः बाह्याः अभ्यन्तरे भवाः आभ्यन्तराः, बाह्याश्च आभ्यान्तराश्च इति बाह्याभ्यन्तराः (द्वन्द्व) तान्।

टिप्पणी—द्वितीय = (दिन के) दूसरे आठवें भाग में। दिन तथा रात्रि का यदि समान रूप से विभाजन कर लिया जाये तो दिन १२ घण्टे का होगा अर्थात् प्रातः ६ बजे से सायं ६ बजे तक। १२ घण्टे का दिन का आठवाँ भाग १½ घण्टे का होगा। इस आधार पर प्रथम आठवाँ भाग ६ से ७½ बजे तक तथा दूसरा आठवाँ भाग ७ बजे से ९ बजे तक का होगा। विवदमाना-नाम् = झगड़ा करती हुई (झगड़ालू)। अन्योन्यम् = परस्पर, एक-दूसरे से झगड़ा करने वाली। प्रजानाम् = प्रजाओं का। आक्रोशात् = (चीत्कार शब्दात्) चिल्लाहट से। प्रजा = जब-जब आपस में लड़ा करते हैं तब वे एक दूसरे को भला-बुरा कहते हुए, जोर-जोर से चिल्लाते हुए, एक-दूसरे को दोषी ठहराते हुए राजा के समीप आया करते हैं। दह्यमानकर्णः = जले जाते हैं कान जिसके ऐसा राजा। कष्टम् = कष्टपूर्वक, महान् कष्ट से। राजा प्रजा-जनों के झगड़ों (मुकदमों) को सुनते-सुनते परेशान हो जाता है। उनको सुन-सुनकर उसे फैसला भी देना पड़ा करता है। इस भाँति इन मुकदमों को सुनते-सुनते उसके कान पक जाते हैं—जल जाते हैं। तत्रापि = वहाँ भी उन मुकदमों में भी)। प्राड्विवाकादयः = राजाओं के दरबारों में कुछ ऐसे अधिकारी हुआ करते थे कि जो वादी तथा प्रतिवादी (मुद्दई तथा मुद्दाअलेह) दोनों पक्षों के लोगों से पूछताछ (प्रश्नपूर्वक) किया करते थे; इन्हें प्राड् या प्राट् कहा जाया करता था। तदनन्तर ये अधिकारी उन-उन मुकदमों का

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भली-भाँति परीक्षण कर फैसला दिया करते थे—इस स्थिति की दृष्टि से इसको "विवाक" कहा जाया करता था। न्यायालय में राजा अध्यक्ष के रूप में बैठा अवश्य करता था, किन्तु मुकदमों की सुनवाई करने तथा फैसला देने वाले उक्त अधिकारी ही हुआ करते थे; अतः इन्हीं को 'प्राड्विवाक' नाम से कहा जाया करता था तथा उनके द्वारा दिये गये फैसलों को राजा द्वारा भी मान्यता प्राप्त हो जाया करती थी। **स्वेच्छया**=अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार। **जयपराजय**=जीत अथवा हार। **विदधानाः**=[कुर्वाणाः] करते हुए। कहने का तात्पर्य यह है कि वे अधिकारी जिसको चाहते थे, जिता देते थे और जिसको चाहते थे, हरा दिया करते थे। न्यायपूर्वक फैसला देने की उनको तनिक भी चिन्ता न होती थी। **पापेन**=पाप से। **अकीर्त्या**=[अपयशसा] बदनामी से। **भर्त्तारं योजयन्ति**=स्वामी (राजा) को युक्त करते हैं, अर्थात् ये लोग राजा को ही पाप का भागी बनाते हैं तथा बाद में उसकी बदनामी भी किया करते हैं। जैसा कि मनु महाराज ने भी कहा है—

"अदण्डयन् दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्।
अयशो महदवाप्नोति नरकं चैव गच्छति।"

अर्थात् जो राजा दण्ड न दिये जाने योग्य व्यक्तियों को दण्डित तथा दण्डनीय व्यक्तियों को एकदम छोड़ दिया करता है वह महान् अपयश का भागी होता है तथा नरक को भी प्राप्त किया करता है। **आत्मानं च अर्थैः योजयन्ति**=अपने आप को धन से युक्त करते हैं। अर्थात् रिश्वत इत्यादि लेकर स्वयं सम्पत्तिशाली बनते हैं। **भुक्तस्य**=भोजन कर चुके हुए राजा का। **अन्धः परिणामः**=अन्धस—अन्न का। **परिणामः**=पच जाना, परिपाक हो जाना। **विषभयन्**=(गरल-शंका) विष से भय। **न शाम्यति**=शान्त नहीं होता, दूर नहीं होता जैसा कि कामन्दकी नीति में कहा भी गया है—

"यानैः शय्यासने पाने, भोज्ये, वस्त्रे, विभूषणे।
सर्वत्रैवाप्रमत्तः स्याद् वर्जयेत् विषदूषितम्॥"

वस्तुतः—उपर्युक्त श्लोक में वर्णित वस्तुओं से सदैव विष सम्बन्धी आशंका हुआ करती है। **तृतीये**=तृतीय आठवें भाग में अर्थात् ९ बजे से १०$\frac{1}{2}$ बजे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
तक। लभते=प्राप्त होता है। चतुर्थे=१०½ बजे से १२ तक। हिरण्यप्रतिग्रहाय=हिरण्य अर्थात् सोना—यहाँ पर स्वर्ण से अभिप्राय धन अथवा रुपया-पैसों से ही है। प्रतिग्रहाय=लेने के लिए। धन लेने के लिए। प्रसारयन्नेव=फैलाये हुए ही। उत्तिष्ठति=उठता है (उठना पड़ा करता है)। राजा को प्रतिदिन धन प्राप्ति की अभिलाषा के साथ उठना पड़ा करता है अर्थात् हाथ पसारना पड़ता है। पञ्चमे=१२ बजे से १½ बजे तक। मन्त्रचिन्तया=मन्त्र अर्थात् विचार-विमर्श की चिन्ता से अर्थात् मन्त्रियों के साथ बैठकर विचार-विनिमय भी करना पड़ता है। आयासम्=महान् क्लेश, मानसिक व्यथा। मध्यस्था इव=उदासीन (निष्पक्ष) पुरुषों के समान—यह प्रकट करते हुए कि वस्तुतः हम किसी भी पक्ष में नहीं हैं—न तो हम वादी के ही पक्ष में हैं और न प्रतिवादी के ही पक्ष में। सम्भूय=मिलकर। दूतचारवाक्यानि=राजदूत और गुप्तचरों की बातों को। शक्याशक्यताम्=साध्यता और असाध्यता=कोई (अमुक) राजनीतिक योजना साध्य है अर्थात् कार्यान्वित की जा सकती है तथा कोई (अमुक) असाध्य है अर्थात् कार्यान्वित नहीं की जा सकती है इस प्रकार अच्छे-अच्छे तथा लाभप्रद विषयों को उलट-पुलट दिया करते हैं। देशकालकार्यावस्थाः=देशकाल तथा कार्यों की स्थितियों को अथवा इनके बारे में। अमुक योजना के लिए अमुक स्थान (देश) उचित होगा अर्थात् अमुक स्थान पर अमुक योजना को लागू करने में सफलता मिल सकेगी तथा अमुक देश में उसको चालू करने में सफलता प्राप्त नहीं होगी इस भाँति कुछ का कुछ (ऊटपटाँग) समझा दिया करते हैं। अमुक काल में अमुक योजना चालू करने से कार्य में सफलता प्राप्त होगी तथा अमुक काल में चालू करने से कार्य में सिद्धि प्राप्त नहीं होगी। उक्त योजना द्वारा अमुक कार्य ठीक चलेगा, अमुक कार्य ठीक नहीं चलेगा। उस भाँति काल तथा कार्य से भी उल्टा-सीधा समझाकर अपना कार्य सिद्ध किया करते हैं। विपरिवर्त्तयन्तः=उलटते-पुलटते हुए। विचार-विमर्श में वे धूर्त्त लोग राजा को गलत-गलत समझा दिया करते हैं। यदि कोई राजनीतिक योजना प्रजा के लिए अत्यन्त लाभप्रद होती है तो उसे दोषयुक्त बताकर हानिप्रद रूप से सिद्ध कर देते हैं और जो वस्तुतः हानिप्रद होती है, उसे अत्यन्त लाभप्रद रूप में समझा दिया करते हैं। स्वपरमित्रमण्डलानि=अपने मित्रों की मण्डली

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को तथा अपने शत्रुओं की मण्डली से भी। **उपजीवन्ति**=(धोखा देकर) उनसे भी धनों को प्राप्त कर (अपना) जीवन निर्वाह किया करते हैं। **बाह्याभ्यन्तरान् च कोपान्**=बाहरी तथा आन्तरिक (भीतरी) झगड़ों को। बाहरी झगड़े वे हैं—जो सीमा पर विदेशियों द्वारा किये जाते हैं। भीतरी झगड़े वे हैं कि जो अपनी प्रजा के लोगों द्वारा अथवा मन्त्रि-परिषद् के सदस्यों द्वारा उठाये जाया करते हैं। **गूढम्**=(गुप्तरूपेण) छिपे रूप से। यह अव्यय है कि जो यहाँ क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है—यह "उत्पाद्य" की विशेषता को प्रदर्शित कर रहा है। **प्रकाशम्**=स्पष्ट (प्रकट) रूप से यहाँ यह भी एक क्रियाविशेषण अव्यय ही है। **प्रशमयन्तः इव**=(शान्ति प्रापयन्तः इव) शान्ति प्राप्त कराते हुए के सदृश। लोक को दिखलाते हैं कि देखो हम यह झगड़े शान्त कर रहे हैं—पर वस्तुतः विपरीत ही आचरण करते हैं। **अवशम्**=जो स्वयं अपने आपको अपने वश में न रख सके अर्थात् निस्सहाय होकर जो (राजा) उन धूर्तों के वश (आधीनता) को प्राप्त कर ले—इस रूप में वे धूर्त। **अवगृह्णन्ति**=(राजा का) अनादर किया करते हैं—अथवा उसे अपने वश में कर लिया करते हैं।

(११) षष्ठे स्वैरविहारो मन्त्रो वा सेव्यः। सोऽस्यैतावान्स्वैरविहारकालो यस्य तिस्रस्त्रिपादोत्तरा नाडिकाः सप्तमे चतुरङ्गबलप्रत्यवेक्षणप्रयासः। अष्टमेऽस्य सेनापतिसखस्य विक्रमचिन्ताक्लेशः। पुनरुपास्यैव संध्यां, प्रथमे रात्रिभागे गूढपुरुषा द्रष्टव्याः। तन्मुखेन चातिनृशंसाः शस्त्राग्निरसप्रणिधयोऽनुष्ठेयाः। द्वितीये भोजनानन्तरं श्रोत्रिय इव स्वाध्यायमारभेत। तृतीये तूर्यघोषेण संविष्टश्चतुर्थपञ्चमौ शयीत किल। कथमिवास्याजस्रचिन्तायासविह्वलमनसो वराकस्य निद्रासुखमुपनमेत्? पुनः षष्ठे शास्त्रचिन्ताकार्यचिन्तारम्भः। सप्तमे तु मन्त्रग्रहो दूताभिप्रेषणानि च, दूताश्च नामोभयत्र प्रियाख्यानलब्धानर्थान्नु वीतशुल्कबाधवर्त्मनि वाणिज्यया वर्धयन्तः कार्यमविद्यमानमपि

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेशेनोत्पाद्यानवरतं भ्रमन्ति।

हिन्दी—छठे पहर में या तो स्वेच्छापूर्वक विहार करना चाहिये (विहार कर सकता है) अथवा परामर्श (सम्पत्ति आदि) का सेवन करना चाहिये (सेवन करे)। उनके स्वेच्छाविहार (मनोरंजन) का यह इतना ही समय होता है जिसकी ३ नाड़ी (घड़ी) अवधि होती है। सातवें (पहर) में चतुरङ्गिणी सेना का निरीक्षण करते रहने का प्रयास करना पड़ा करता है। (आठवें पहर) में सेनापति के साथ विक्रय की चिन्ता का कष्ट उठाना पड़ा करता है। [राजाओं के लिए यह परमावश्यक होता है कि वे प्रधान सेनापति को अपना मित्र बनाये रखें तथा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें; क्योंकि उनको यह सोचना पड़ा करता है कि उन्हें किस राजा के ऊपर कब तक किस प्रकार से आक्रमण करना चाहिये, ताकि उनकी शक्ति बढ़े।]

फिर सायंकालीन संध्या-पूजन करके रात्रि के प्रथम पहर में गुप्तचरों को देखना चाहिये [अर्थात् उनसे मिलकर आवश्यक वार्तालाप किया जाना चाहिये तथा उनके कार्यों को भी देखा जाना चाहिये और उन्हीं के द्वारा अत्यन्त क्रूर, दुराचारियों के शस्त्रप्रहार, अग्निदाहको और विषदाताओं की गूढ़ चेष्टाओं के प्रतिकार के निमित्त दूत नियुक्त किये जाने चाहियें]। दूसरे पहर भोजन के पश्चात् वेदपाठी छात्र की भाँति (वह) स्वाध्याय (अपना अध्ययन) प्रारम्भ कर देता है। [अर्थात् वह पुस्तकें लेकर शास्त्रों का मनन करे]। तीसरे पहर वाद्यों (बाजों) के साथ सोया हुआ (वह) चौथे और पाँचवें पहर तक सोवे। [राजाओं के शयन के लिए जाते समय बाजे बजा करते हैं कि जिससे जनता को ज्ञात हो जाये कि अब राजा साहब सोने के लिए गये। निरन्तर चिन्ता के क्लेश से व्याकुल उस बेचारे के पास किस भाँति निद्रा का सुख आवे]? फिर छठे प्रहर में शास्त्र के चिन्तन करने तथा कार्यों की चिन्ता का आरम्भ हो जाता है सातवें पहर में अमात्यों के साथ विचार-विनिमय करके दूतों को भेजने का कार्य उपस्थित होता है और दूत लोग दोनों स्थानों पर (अपने यहाँ तथा शत्रु राजाओं के यहाँ)—मीठी-मीठी बातों द्वारा प्राप्त किये हुए धन को, शुल्क (महसूल) की बाधा से रहित मार्ग द्वारा व्यापार द्वारा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृद्धि को प्राप्त करते हुए; कार्यरत होने पर भी कपट-छल से नये-नये कार्यों को उत्पन्न कर (अथवा कार्यों की व्यवस्था कर) निरन्तर घूमते रहा करते हैं।

व्याकरण—सेव्यः = सेव् + यत्। सेनापतिसखस्य = यदि तत्पुरुष समास (सेनापतेः सखा इति सेनापति सखा) के अन्त में राजन्, अहन् अथवा सखि-शब्द आवे तो वहाँ "राजहः सखिभ्यष्टच्" से "टच्" प्रत्यय हो जाया करता है। उक्त नियम के अनुसार यहाँ भी—'टच्' हुआ है। अनुष्ठेयाः = अनु + स्था + यत्—यहाँ "अचोयत्" से 'यत्' प्रत्यय हुआ है। संविष्टः = सम् + विश् + क्त। वराकस्य = वृ + षाकन्। यहाँ "जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन्" से "षाकन्" प्रत्यय हुआ है। लब्धान् = लभ् + क्त। वीत = वि + इ + क्त। वाणिज्यया = वणिज् + यत् + टाप्। वर्धयन्तः = वृध् + णिच् + शतृ—प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का रूप। उत्पाद्य = उत् + पद् + णिच् + ल्यप्।

समास—स्वैरविहारः = स्वैरं यथा स्यात्तथा विहारः। त्रिपादोत्तराः = त्रयः पादाः उत्तराः यासां ताः। चतुरङ्गबलप्रत्यवेक्षणप्रयास = चत्वारि अङ्गानि विद्यन्ते यस्मिन् तत् चतुरङ्गम् (बहुव्रीहि समास), चतुरङ्गं च तद् बलं इति चतुरङ्गबलम् (कर्मधारय), तस्य प्रत्यवेक्षणं इति चतुरङ्गबलं प्रत्यवेक्षणम् तस्य प्रयासः इति चतुरङ्गबलम् (षष्ठी तत्पुरुष)। विक्रमचिन्ता क्लेशः = विक्रमस्य चिन्ता इति विक्रमचिन्ता तस्याः क्लेशः (षष्ठी तत्पुरुष)। तूर्यघोषेण = तूर्याणां घोषः इतितूर्यघोषः तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। अजस्रचिन्तायासविह्वलमनसः = अजस्रं (निरन्तरं) चिन्ता इति अजस्रचिन्ता तस्याः आयासः इति अजस्रचिन्तायासः (षष्ठी तत्पुरुष), तेन विह्वलं मनः यस्य सः अजस्रचिन्तायासविह्वलमनाः तस्य अजस्रचिन्तायासविह्वलमनसः (बहुव्रीहि)। निद्रासुखम् = निद्रायाः सुखम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। मन्त्रग्रहः = मन्त्रस्य ग्रह इति (षष्ठी तत्पुरुष)। दूताभिप्रेषणानि = दूतानां अभिप्रेषणानि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। प्रियाख्यानलब्धान् = प्रियं च तदाख्यानं इति प्रियाख्यानम् (कर्मधारय), तैः लब्धाः इति प्रियाख्यानलब्धाः (तृतीया तत्पुरुष) तान्। वीत-शुल्कबाधवर्त्मनि = शुल्कस्य बाधा इति शुल्क बाधा (षष्ठी तत्पुरुष), वीता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुल्क बाधा यस्मिन् तत् वीतशुल्कबाधम् (बहुव्रीहि), वीतशुल्कबाधं च तत् वर्त्म (इति कर्मधारय) वीतशुल्कबाधवर्त्म तस्मिन्। **वाणिज्यया**=वणिजः भावः वाणिज्यम् तया।

टिप्पणियाँ—**षष्ठे**=१½ बजे से ३ बजे तक। **स्वैरविहारः**=अपनी इच्छानुसार मनोरंजन (आमोद-प्रमोद) करना। **मन्त्रः वा सेव्यः**=अथवा (मन्त्रियों के साथ) विचार-विमर्श करे। इस छठे पहर में अवश्य ही राजा को इतनी स्वतन्त्रता मिल पाती है कि वह अपनी इच्छानुसार मनोरंजन में समय बितावे अथवा मन्त्रियों के साथ परामर्श करे। **तिस्रः त्रिपादोत्तराः नाडिकाः**=तीन पाद (चरण) हैं बाद जिसके ऐसी तीन घड़ी अर्थात् ३ घड़ी। २½ घड़ी का एक घण्टा हुआ करता है; अतः १½ घण्टे में २ घड़ियाँ हुईं। अतः ३ घड़ी=१ घण्टा हुआ। **सप्तमे**=३ बजे सायं से ४ बजे सायं तक। इस पहर में राजा को अपनी चतुरङ्गिणी सेना का निरीक्षण करना होता है। **चतुरङ्गबलप्रत्यवेक्षणप्रयासः**=चतुरङ्गिणी सेना का निरीक्षण (देखभाल) करने की परेशानी (क्लेश)। सेना के अङ्ग माने गये हैं:—(१) हस्ति सेना, (२) अश्वसेना, (३) पैदल सेना, (४) रथ सेना, ये चारों मिलकर चतुरङ्गिणी सेना कही जाया करती थीं। **अष्टमे**=आठवें पहर अर्थात् ४ बजे से ६ बजे सायं तक। **सेनापतिसखस्य**=सेनापति के साथ (सेनाध्यक्षेण सहेत्यर्थः)। **विक्रमचिन्ताक्लेशः**=विक्रम पराक्रम दिखलाने की चिन्ता का कष्ट अर्थात् कब तथा किस प्रकार से किस राजा के ऊपर पराक्रम दिखलाना है? इत्यादि विषयक चिन्ता का कष्ट। **उपास्य एव संध्याम्**=संध्योपासना करने के पश्चात् ही—अर्थात् ६ बजे सायं से ७ बजे सायं तक। **गूढपुरुषाः**=गुप्तचर, जासूसी दूत। **तन्मुखेन**=उन दूतों के द्वारा। (तेषां मुखेन इति तन्मुखेन)। **अतिनृशंसा**=अत्यन्त क्रूर अथवा अतिनिर्दयी। **प्रणिधयः**=गुप्त दूत। **शस्त्राग्निरसप्रणिधय**=शस्त्र-प्रहार करने वालों, आग लगाकर दूसरों को हानि पहुँचाने वालों विषदाताओं की छिपी हुई चेष्टाओं का पता लगाने वाले गुप्त दूत। **अनुष्ठेयाः**=नियुक्त करनी चाहिये। **द्वितीये**=रात्रि के दूसरे पहर में अर्थात् ६ बजे से ६ बजे तक। **श्रोत्रियः इव**=वेद का अध्ययन करने वाले छात्रों के सदृश।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
वेदाध्यायी भवेद् विप्रः त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते॥"

स्वाध्यायम्—वेद का पढ़ना अथवा ब्रह्म का चिन्तन करना। **तृतीये**=तीसरे पहर में अर्थात् ९ बजे से १० बजे [रात्रि] तक। **तूर्यघोषेण**=बाजों की आवाज के साथ। **तूर्य**=बाजा (वाद्य)। **घोष**=आवाज शब्द। **संविष्टः**=सोया हुआ। जब राजा शयन करने जाया करता था तो उस समय बड़े तीव्र शब्दों में बाजे बजा करते थे जो इस बात के प्रतीक होते थे कि अब राजा शयन करने के निमित्त शयन-कक्ष में चले गये हैं। **चतुर्थपञ्चमौ शयीत**=चौथे तथा पाँचवें पहर तक (अर्थात् १० बजे से १ बजे तक) सोवे। **कथम् इव**=कैसे? **अस्य**=इसके (राजा के)। **अजस्रचिन्तायासविह्वलमनसः**=सतत् चिन्ता के क्लेश से जिसका मन व्याकुल है ऐसा राजा। **अजस्र**=सतत्, निरन्तर। **आयास**=क्लेश। **विह्वल**=व्याकुल। **वराकस्य**=बेचारे का—यह 'अस्य नृपस्य' का विशेषण है। **उपनमेत**=समीप में आवे [आगच्छेत्]। **निद्रासुखम्**=नींद का आनन्द। **मन्त्रग्र**:=मन्त्रियों से विचार-विमर्श करना। **दूताभिप्रेषणानि**=दूतों को भेजना। **दूताः च नाम**=यह तो सबको ज्ञात ही है कि दूत लोग। **उभयत्र**=दोनों स्थानों में—अर्थात् अपने राजा के यहाँ तथा शत्रु राजा के यहाँ भी (कि जहाँ उनको जाना पड़ा करता है। **प्रियाख्यानलब्धान्**=मीठी-मीठी नाना प्रकार की बातें कह-कह कर प्राप्त किये हुए धन को। **प्रिय**=अच्छी लगाने वाली अर्थात् प्रिय या मीठी। **आख्यान्**=कथन, बातें। **लब्धान्**=प्राप्त किये हुए। **अर्थान्**=धनों की। **वीतशुल्कबाधवर्त्मनि**=(चुङ्गी) महसूल लगने की बाधा से रहित मार्ग में—अर्थात् वे लोग उन मार्गों से आया करते हैं कि जिन मार्गों पर चुङ्गी (महसूल) आदि न देना पड़ता होगा। **वाणिज्यया**=व्यापार के द्वारा। **वर्धयन्तः**=बढ़ाते हुए। **लेशेन**=[कपटेन] कपट या छल से। **अनवरतम्**=निरन्तर। **उत्पाद्य**=पैदा करके।

(१२) अष्टमे पुरोहितादयोऽभ्येत्यैनमाहुः "अद्य दृष्टो दुःस्वप्नः। दुःस्था ग्रहाः, शकुनानि चाशुभानि। शान्तयः क्रियन्ताम्। सर्वमस्तु

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
सौवर्णमेव होमसाधनम् । एवं सति कर्म गुणवद् भवति । ब्रह्मकल्पा इमे ब्राह्मणाः । कृतमेभिः स्वस्त्ययनं कल्याणतरं भवति । ते चामी कष्टदारिद्र्या बह्वपत्या यज्वानो वीर्यवन्तश्चाद्याप्यप्राप्तप्रतिग्रहाः । दत्तं चैभ्यः स्वर्ग्यमायुष्यमरिष्टनाशनं च भवति" इति बहु-बहु दापयित्वा तन्मुखेन स्वयमुपांशु भक्षयन्ति । तदेवमहर्निशमविहितसुखलेशमायासबहुलमविरलकदर्थनं च नयतोनयज्ञस्यास्तां चक्रवर्तिता स्वमण्डलमात्रमपि दुरारक्ष्यं भवेत् । शास्त्रज्ञसमाज्ञातो हि यददाति, यन्मानयति, यत् प्रियं ब्रवीति, तत्सर्वमतिसंधातुमित्यविश्वासः । अविश्वास्यता हि जन्मभूमिरलक्ष्म्याः । यावता च नयेन विना याति लोकयात्रा स लोकत एव सिद्धः । नात्र शास्त्रेणार्थः । स्तनंधयोऽपि हि तैस्तैरुपायैः स्तनपानं जनन्या लिप्सते, तदपास्यातियन्त्रणामनुभूयन्तां यथेष्टमिन्द्रियसुखानि ।

हिन्दी—आठवें पहर में पुरोहित आदि उसके (राजा के) पास आकर कहते हैं—"आज मैंने एक बड़ा खराब स्वप्न देखा है । (इस समय) नक्षत्र बुरे पड़े हैं और शकुन (भी) अशुभ हुए हैं, [अतः यज्ञ इत्यादि के द्वारा इनका] शमन किया जाना चाहिये । होम (यज्ञ) की सम्पूर्ण सामग्री स्वर्ण की होवे (होनी चाहिये) ऐसा होने पर काम (फल) सार्थक हुआ करता है । ये ब्राह्मण ब्रह्म के सदृश हैं । इनके द्वारा किया गया स्वस्त्यय बड़ा कल्याणकारी होता है (होगा) ये कष्ट तथा दरिद्रता का अनुभव कर रहे हैं, [ये] अनेक बाल-बच्चों वाले, यज्ञ करने वाले, [बड़े] पराक्रमी हैं तथा इन्होंने आज तक दान भी [किसी से] नहीं लिया है । इनको दिया हुआ दान स्वर्गप्रदाता, आयुवर्द्धक तथा अरिष्ट (दुर्भाग्य) नाशक होता है (होगा) । इस प्रकार कहकर बहुत-सा धन दिलाकर उनके द्वारा स्वयं ही एकान्त में खा जाया करते हैं । तब इस प्रकार, रात-दिन, थोड़ा (तनिक) भी दुःख प्राप्त किये बिना, क्लेशों (मुसीबतों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथवा परेशानियों से परिपूर्ण) से भरा हुआ, सतत् कष्टों से युक्त जीवन को व्यतीत करने वाले नीतिज्ञ राजा की चक्रवर्तिता तो दूर रही, (उस बेचारे राजा के लिए तो) अपने राज्य की ही रक्षा करना कठिन हो जाता है। शास्त्रज्ञ नामक प्रसिद्ध पुरुष जो भी (शास्त्रानुसार परामर्श) देते हैं, जो (कुछ) भी (राजा) का सम्मान करते हैं, जो भी प्रिय वचन बोलता है (चिकनी-चुपड़ी) बातें बनाते हैं। ये सब (कार्य उन भोले-भाले राजाओं को) ठगने के लिए होता है; अतएव उन पर विश्वास नहीं होता है। (अपने ऊपर लोगों का) विश्वास न होना अलक्ष्मी (दरिद्रता) की जन्मभूमि है (अर्थात् जहाँ विश्वास नहीं रहता वहाँ दारिद्र्य का आगमन अनिवार्य हो जाता) है। जितनी नीति के बिना जीविका (लोकयात्रा) नहीं चल पाया करती उतनी नीति तो संसार से ही ज्ञात हो जाती है। उसके लिए शास्त्र से क्या प्रयोजन ? (अर्थात् शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं हुआ करती है)। (अपनी माँ का दूध पीने वाला) बच्चा उन-उन उपायों (भिन्न-भिन्न उपायों) के द्वारा अपनी माँ का स्तन पान करने की इच्छा करता ही है; अतः अनियन्त्रण (अत्यधिक कष्टों, परेशानियों) का त्याग कर अपनी इच्छानुसार इन्द्रियजनित सुखों को भोगिये (अनुभव कीजिये)।

व्याकरण—**अभ्येत्य** = अभि + आ + इण् + ल्यप्। **स्थिता:** = स्था + क्त। **सौवर्णम्** = (सुवर्णस्य विकारः सौवर्णम्) = सुवर्ण + अण्। **गुणवद्** = गुण + मतुप्। **ब्रह्मकल्पा** = ब्रह्म + कल्पप्—यहाँ ईषदसमाप्तौ कल्पप्देश्य-देशीयरः, से ईषत् न्यून अर्थ में कल्पप् प्रत्यय हुआ है। **कष्टदरिद्रचवन्त:** = कष्टदारिद्र्य + मतुप्। **यज्वान्** = यज् + वनिप्—इस यज्वन् शब्द के रूप इस भाँति चलते हैं—यज्वा, यज्वानो, यज्वानः इत्यादि। **वीर्यवन्त:** = वीर्य + मतुप्। **स्वर्ग्यम्** = स्वर्ग + यत्। **आयुष्यम्** = आयुस् + यत्। **नयत:** = नी + शतृ—षष्ठी विभक्ति के एकवचन का रूप। **ज्ञ:** = क। **चक्रवर्तिता** = चक्रवर्तिन् + तल्। **दुरारक्ष्यं** = दुर् + आ + रक्ष् + यत्। **अतिसन्धातुम्** = अति + सम् + धा + तुमुन्। **नयेन विना** = यहाँ "पृथग्विनानाभिस्तृतीया-न्यतरस्याम्" सूत्र से विना के योग में 'नयेन' में तृतीया विभक्ति हुई है।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यावता = तृतीया विभिक्ति के एकवचन का रूप है। यह 'नयेन' का विशेषण है। लोकतः = लोक + तसिल्। लिप्सते = लभ् + सन् + लट्। अपास्य = अप् + अस् + ल्यप्। अनुभूयन्ताम् = अनु + भू (कर्मवाच्य) में लोट् लकार के प्र० पु० के बहुवचन का रूप है। इसका कर्त्ता 'इन्द्रियसुखानि' हैं।

समास आदि—**दुःस्वप्नः** = दुष्टः स्वप्नः इति (कर्मधारय)। **दुःस्थित** = दुष्टे स्थाने स्थिताः। **होमसाधनम्** = होमस्य साधनम् (षष्ठी तत्पुरुष)। **गुणवतः** = गुणा विद्यन्ते अस्मिन् इति गुणवत्। **ब्रह्मकल्पाः** = ब्रह्मणः ईषत् न्यूना इति ब्रह्मकल्पा। **कष्टदारिद्र्यवन्तः** = कष्टं च दारिद्र्यं च कष्टदारिद्र्ये (द्वन्द्व), कष्टदारिद्र्ये विद्येते एषामिति। **बह्वपत्याः** = बहुनि अपत्यानि येषां ते (बहुव्रीहि)। **वीर्यवन्तः** = वीर्यं विद्यते एषां ते। **अप्राप्तप्रतिग्रहाः** = न प्राप्तः प्रतिग्रहः यैः ते (बहुव्रीहि) **स्वर्ग्यम्** = स्वर्गाय हितम् इति। **आयुष्यम्** = आयुषे हितम्। **अरिष्टनाशनम्** = अरिष्टस्य नाशनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **तन्मुखेन** = तेषां मुखेन इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अहर्निशम्** = अहनि निशि च इति। **अविदितसुखलेशम्** = सुखस्य लेशः (सुखलेशः) (षष्ठी तत्पुरुष) न विद्यते सुखलेशः यस्मिन् तत्। **आयासबहुलम्** = आयासः बहुलः यस्मिन् कर्मणि तत्। **अविरलकदर्थनम्** = अविरलं (अत्यधिकं निरन्तरं वा) कदर्थनं यस्मिन् कर्मणि तत्। **नयज्ञस्य** = जानातीति ज्ञः नयज्ञः ज्ञः इति नयज्ञः तस्य। **स्वमण्डलमात्रम्** = स्वमण्डलमेव स्वमण्डलमात्रम्। **दुरारक्ष्यम्** = दुःखेन आरक्षितुं योग्यम् इति। **शास्त्रज्ञसमाज्ञातः** = शास्त्रं जानातीति शास्त्रज्ञः, शास्त्रज्ञः इति समाज्ञातः इति। **अविश्वासः** = न विश्वासः इति अविश्वासः (नञ् तत्पुरुष)। **अविश्वास्यता** = न विश्वास्यः इति अविश्वास्यः तस्य भावः अविश्वास्यता। **अलक्ष्म्याः** = न लक्ष्मी इति अलक्ष्मीः तस्याः। **लोकयात्रा** = लोकस्य यात्रा। **अतियन्त्रणाम्** = अतिशयिता यन्त्रणा इति अतियन्त्रणा ताम्। **यथेष्टम्** = इष्टमनतिक्रम्य इति यथेष्टम् (अव्ययीभाव) **इन्द्रियसुखानि** = इन्द्रियाणां सुखं इति इन्द्रियसुखं, तानि।

टिप्पणियाँ—**दुःस्वप्नः** = बुरा स्वप्न। **अभ्येत्य** = (समीपं गत्वा) पास जाकर। **दुःस्थिताः** = बुरे स्थान पर बैठे हुए। **सौवर्णम्** = स्वर्ण निर्मित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होमसाधनम्=होम (यज्ञ) का सामान, सामग्री आदि। गुणवत्=लाभप्रद। ब्रह्मकल्पाः=ब्रह्म के सदृश। स्वस्त्ययनम्=मंगलपाठ। कष्टदारिद्र्यवन्तः=कष्ट तथा दरिद्रता (गरीबी) वाले। बह्वपत्याः=अनेक सन्तानों से युक्त। यज्वानः=यज्ञ करने वाले, यज्ञकर्त्ता लोग। वीर्यवन्तः=पराक्रमशाली। अद्यापि=आज तक भी, इस समय तक भी। अप्राप्तप्रतिग्रहाः=जिन्होंने आज तक दान प्राप्त नहीं किया है ऐसे अर्थात् ये ब्राह्मण बड़े स्वाभिमानी हैं, इसी कारण इन्होंने आज तक किसी से भी दान नहीं लिया है; अतः ऐसे ब्राह्मणों को दिया गया हुआ दान महान् पुण्य का जनक होगा। स्वर्ग्यम्=स्वर्ग प्रदाता स्वर्ग लोक की प्राप्ति कराने वाला। आयुष्यम्=आयुवर्द्धक, आयु को बढ़ाने वाला। अरिष्टनाशनम्=दुर्भाग्य का नाशक। बहु-बहु=बहुत-सा। दापयित्वा =दिलाकर। तन्मुखेन=उन (ब्राह्मणों) के द्वारा। उपांशु=एकान्त में अथवा छिपकर। अहर्निशम्=रात-दिन। अविदितसुखलेशम्=जिसमें थोड़ा-सा भी (तनिक भी) सुख विदित नहीं हो सका ऐसा जीवन व्यतीत करना। आयास-बहुलम्=अत्यधिक कष्ट से परिपूर्ण। अविरलकदर्थनम्=सतत परेशानी को सहन करते हुए। अविरल=अत्यधिक, निरन्तर। कदर्थनम्=परेशानी। नयतः=(जीवनं यापयतः) जीवन को बिताते हुए। नयज्ञस्य=राजनीतिशास्त्र को जानने वाले राजा की। चक्रवर्तिता=चक्रवर्त्तीपन। आस्ताम्=रहे अर्थात् दूर रही। स्वमण्डलमात्रम्=केवल अपना राज्य। दुरारक्ष्यम्=जिसकी रक्षा अति कठिनता से ही की जा सके। अर्थात् (उसको) अपने राज्य तक की रक्षा करना भी दुस्तर हो जाता है। शास्त्रज्ञसमाज्ञातः=राजनीतिशास्त्र का ज्ञाता—इस रूप में प्रसिद्ध। अतिसन्धातुम्=ठगने के लिए (वञ्चयितुम्) अविश्वासः=अविश्वास, विश्वास न करना—प्रजा के लोगों के मन में ऐसी धारणा के साथ अविश्वास उत्पन्न हो जाता है कि यह (अमुक व्यक्ति) राजा को जो कुछ (परामर्श आदि) देता है अथवा सम्मान करता है अथवा प्रिय वचन बोलता है वह सब ठगने के लिए ही किया करता है। अविश्वास्यता= विश्वास का न किया जाना। अलक्ष्म्याः=दरिद्रता की, गरीबी की। यावता =जितनी। लोकयात्रा=संसार में अपने जीवन को बिताना। सिद्धः=सिद्ध हो जाता है, प्राप्त हो जाया करता है। अर्थः=प्रयोजन। न शास्त्रज्ञेन अर्थः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

=शास्त्र पढ़ने से कोई प्रयोजन नहीं। स्तनन्धय:=स्तन पीने वाले ब भी—दुधमुँहे बच्चे भी। तैः तैः=उन-उन (नाना प्रकार के उपायों द्वारा) लिप्सते=प्राप्त करने की इच्छा करता है। अपास्य=दूरीकृत्य [दूर करके] अतियन्त्रणाम्=महान् कष्ट को। अनुभूयन्ताम्=अनुभव की जावे अथा भोग किये जावें। यथेष्टम्=अपनी इच्छानुसार। इन्द्रियसुखानि=इन्द्रियों सुखों को।

---

(१३) येऽप्युपदिशन्ति—"एवमिन्द्रियाणि जेतव्यानि, एवमरि षड्वर्गस्त्याज्यः, सामादिरुपायवर्गः स्वेषु परेषु चाजस्रं प्रयोज्यः संधि- विग्रहचिन्तयैव नेयः कालः, स्वल्पोऽपि सुखस्यावकाशो नदेयः" इति तैरप्येभिर्मन्त्रिवकर्युष्मत्तश्चौर्यार्जितं धनं दासीगृहेष्वेव भुज्यते। चैते वराकाः ? येऽपि मन्त्रकर्कशास्तन्त्रकर्त्तारः शुक्राङ्गिरसविशाल क्षबाहुदन्तिपुत्रपराशरप्रभृतयस्तैः किमरिषड्वर्गो जितः, कृतं वा शास्त्रानुष्ठानम् ? तैरपि हि प्रारब्धेषु कार्येषु दृष्टे सिद्ध्यसिद्धी पठन्तश्चापठद्भिरतिसन्धीयमाना बहवः। नन्विदमुपपन्नं देवस्य, यद् सर्वलोकस्य वन्द्या जातिः, अयातयामं वयः, दर्शनीयं वपुः, अपरिमा विभूतिः। तत्सर्वं सर्वाविश्वासहेतुना सुखोपभोगप्रतिबन्धिना बहुमा विकल्पनात्सर्वकार्येष्वमुक्तसंशयेन तन्त्रावापेनैव मा कृथा वृथा। सि हि ते दन्तिनां दश सहस्राणि, ह्यानां लक्षत्रयम्, अनन्तं च पादातम् अपि च पूर्णान्येव हेमरत्नैः कोशगृहाणि! सर्वश्चैव जीवलोकः सम मपि युगसहस्रं भुञ्जानो न ते कोष्ठागाराणि रेचयिष्यति। किमिद पर्याप्तं यदन्यार्जितायासः क्रियते। जीवितं हि नाम जन्मवतां चतु पञ्चाप्यहानि। तत्रापि भोगयोग्यमल्पाल्पं वयःखण्डम्। अपण्डित पुनर्जयन्त एव ध्वंसन्ते। नार्जितस्य वस्तुनो लवमप्यास्वादयितुमीह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी—जो (व्यक्ति राजा को) ऐसा उपदेश देता है "इस भाँति इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की जानी चाहिये" इस भाँति छहों शत्रुओं (कामक्रोधादि) को त्यागना चाहिये, साम आदि (साम, दाम, दण्ड, भेद) उपायों का प्रयोग अपने तथा शत्रु पक्ष के लोगों पर निरन्तर किया जाना चाहिये, सन्धि और विग्रह की चिन्ता में ही समय बिताना चाहिये, तनिक-सा (क्षण मात्र) भी सुख को अवकाश नहीं दिया जाना चाहिये, ऐसे उन बगुला-सदृश मन्त्रियों द्वारा आपके चोरी द्वारा पैदा किया गया हुआ धन, वेश्याओं के घरों में ही भोगा जाया करता है [अर्थात् ये बगुला-भगत उपदेशक मन्त्री आदि राज्य से चोरी करके प्राप्त किये हुए धन से वेश्याओं के घरों को भर दिया करते हैं और आनन्द लूटा करते हैं।] अब ये बेचारे (तो) क्या हैं ? और जो ये नीतिशास्त्रकार तथा तन्त्रशास्त्रकार शुक्राचार्य अङ्गिरस, विशालाक्ष, बाहुदन्तिपुत्र, पराशर इत्यादि थे, क्या इन लोगों के द्वारा छः शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) पर विजय प्राप्त कर ली गयी थी ? क्या उनके द्वारा शास्त्र का अनुष्ठान किया गया था ? (अर्थात् क्या वे लोग शास्त्रानुसार चलते थे ?) क्या प्रारम्भ किये हुए कार्यों में उनके द्वारा भी सिद्धियाँ (सफलताएँ) अथवा असिद्धियाँ (असफलताएँ) पहले से ज्ञात कर ली गयी थीं। पहले से पढ़े-लिखे लोग (भी) न पढ़े-लिखे लोगों द्वारा ठग लिये जाया करते हैं। देव को (महाराज को) ये (वस्तुएँ तो) प्राप्त ही हैं—सम्पूर्ण लोक द्वारा वन्दनीया जाति (कुल-वंश), नवीन आयु, दर्शनीय शरीर तथा असीम ऐश्वर्य; अतः इन सब को ऐसे स्वराष्ट्रचिन्ता (तन्त्र) तथा पदचिन्ता के द्वारा व्यर्थ न कीजिये जो सभी लोगों के अविश्वास के कारण हैं, जो सुखों के उपभोगों के विरोधी हैं, जो अनेक मार्गों के बतलाने के कारण सभी कार्यों में संशय उत्पन्न करने वाले हैं। आपके पास दस हजार हाथी हैं, तीन लाख घोड़े हैं और असंख्य पैदल सिपाही (सेना) है। और भी—अपना कोष (खजाना) सुवर्ण तथा रत्नों से भरा पड़ा है। समस्त प्राणिवर्ग हजारों युगों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तक खाता हुआ भी आपके भण्डारगृहों को खाली नहीं करेगा। (अर्थात्) नहीं कर सकता है।) क्या यह पर्याप्त नहीं कि और (भी) अधिक उपार्जन करने के निमित्त प्रयत्न किया जाता है (अर्थात् किया जाये) ? [क्या आपके पास पर्याप्त धन नहीं है, जो आप और अधिक धन पैदा करने के लिए प्रयत्न करेंगे ?] (संसार में) जन्म लेने वाले प्राणियों का जीवन तो चार-पाँच दिन का ही होता है [अर्थात् मानव-जीवन अस्थायी हुआ करता है।] उसमें भी भोग-विलास करने योग्य जो आयु का भाग हुआ करता है, वह तो (और भी) स्वल्पातिस्वल्प ही हुआ करता है। फिर मूर्ख लोग तो (धन) पैदा करते ही करते मर जाया करते हैं।

व्याकरण—**जेतव्यानि**=जि+तव्य। **त्याज्यः**=त्यज्+ण्यत्। **प्रयोज्यः**=प्र+युज्+णत्। **सन्धि**=सम्+धा+कि। **नेयः**=नी+यत्। यहाँ "अचोयत्" से सूत्र 'यत्' होता है। **युष्मत्तः**=युष्मद्+तसिल्। **अर्जितम्**=अर्ज+क्त। **प्रारब्धेषु**=प्र+आ+रभ्+क्त। **दृष्टे**=दृश्+क्त+टाप्=दृष्टा (प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में), द्विवचन में 'दृष्टे' रूप बनता है। **अतिसंधीयमानाः**=अति+सम्+धा+शानच्। **विभूतिः**=वि+भू+क्तिन्। **मा कृथा**=यहाँ पर "न माङ् योगे" में बतलाये गये नियम अनुसार 'मा' के योग में "आ कृथाः" का 'अ' लुप्त हो जाता है। **प्रतिबन्धी**=प्रति+बन्ध+णिनि। **पादातम्**=पदाति+अण्। **युगसहस्रम्**=यहाँ पर "कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे" सूत्र में वर्णित नियम के अनुसार द्वितीया विभक्ति हुई है। **भुञ्जान**=भुज्+शानच्। **अर्जनाय**=अर्जन्+ल्युट्। **जीवितम्**=जीव+क्त। इस 'क्त' प्रत्यय के होने से भाववाचक संज्ञा बन गयी है। **जन्मिनाम्**=जन्मन्+इति। **अहानि**=यहाँ "कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे द्वितीया" से द्वितीया हुई है। **आस्वादयितुम्**=आ+स्वद्+णिच्+तुमुन्।

समास—**अरिषड्वर्ग**=षण्णां वर्गः इति षड्वर्गः, अरीणां षड्वर्गः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **सामाद्युपायवर्ग**=साम आदिः येषां ते समादयः (बहुव्रीहि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समादयश्च ते उपायाः इति समाद्युपायाः (कर्मधारय), तेषां = वर्गः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **सन्धिविग्रहचिन्तया** = सन्धिश्च विग्रहश्च इति सन्धिविग्रहौ (द्वन्द्व समास) तयोः चिन्ता इति सन्धिविग्रहचिन्ता तया (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन्त्रिवकैः** = मन्त्रिणः वकाः इव इति मन्त्रिवकाः। **चौर्याजितम्** = चौर्येण अर्जितम् इति चौर्यार्जितम् (तृतीया तत्पुरुष)। **दासीगृहेषु** = दासीनां गृहेषु इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **मन्त्रकर्कशाः** = मन्त्रेषु कर्कशाः इति। **शुक्राङ्गिरसविशालाक्षबाहुदन्तिपुत्रपराशरप्रभृतयः** = शुक्रश्च अङ्गिरसश्च विशालाश्च बाहुदन्तिपुत्रश्च पराशरश्च प्रभृतिः आदिः येषां ते (बहुव्रीहि)। **शास्त्रानुष्ठानम्** = शास्त्राणां अनुष्ठानम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **सिध्यसिद्धी** = सिद्धिश्च असिद्धिश्च इति सिध्यसिद्धी (द्वन्द्व समास)। **सर्वलोकवन्द्याः** = सर्वे च ते लोकाः इति सर्वलोकाः (कर्मधारय), तैः वन्द्या इति (तृतीया तत्पुरुष)। **अयातयामम्** = न यातः यामः यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **अपरिमाणः** = न विद्यते परिमाणं यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **तन्त्रावापेन** = तन्त्रं च आवापश्च इत्यनयोः समाहारः तन्त्रावापः (द्वन्द्व) तेन। **सर्वाविश्वासहेतुना** = सर्वेषां अविश्वासः इति सर्वाविश्वासः तस्य हेतुः (षष्ठी तत्पुरुष) तेन। **सुखोपभोगप्रतिबन्धिनः** = प्रतिबन्धतीति; प्रतिबन्धी सुखानां उपभोगः इति (षष्ठी तत्पुरुष) सुखोपभोगः तस्य प्रतिबन्धो इति सुखोपभोगप्रतिबन्धी तेन। **बहुमार्गविकल्पनाम्** = बहवश्च ते मार्गाः इति बहुमार्गाः (कर्मधारय), बहुमार्गाणां विकल्पनम् इति बहुमार्गविकल्पनम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मात्। **सर्वकार्येषु** = सर्वाणि च कार्याणि इति सर्वकार्याणि तेषु। **अमुक्तसंशयेन** = न मुक्तः संशयः यस्मिन् सः अमुक्तसंशयः, तेन (बहुव्रीहि)। **अनन्तम्** = न विद्यते अन्तः यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **पादातम्** = पादाभ्यां अतति इति पदातिः, पदातीनां समूहः पादातम्। **कोशगृहाणि** = कोशानां गृहाणि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **हेमरत्नैः** = हेमानि च रत्नानि च इति हेमरत्नानि तैः (द्वन्द्व)। **जीवलोकः** = जीवानां (प्राणिनां) लोकः इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **युगसहस्रम्** = युगानां सहस्रम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **कोष्ठागाराणि** = कोष्ठानां आगाराणि इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अन्यार्जनाय** = अन्यस्य (अधिकस्य धनस्य) 'अर्जनम्' इति अन्यार्जनम् तस्मै (षष्ठी तत्पुरुष)। **जन्मिनाम्** = जन्म एषां अति इति जन्मी, तेषां जन्मिनाम्। **चतुःपञ्चानि** = चत्वारि पञ्च वा परिमाणं संख्या वा एषां इति चतुःपञ्चानि। **भोगयोग्यम्** = भोगस्य योग्यम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अल्पाल्पम्** = अल्पात्

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अल्पम् इति । वयः खंडम् = वयसः खंडम् इति वयः खंडम् (षष्ठी तत्पुरुष)। अपण्डिताः = न पण्डिताः इति (नञ् तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—**ये अपि उपदिशन्ति** = जो (लोग) भी (यह) उपदेश देते हैं। **एवम्** = इस प्रकार से अथवा इस भाँति । **जेतव्यानि** = विजय प्राप्त की जानी चाहिये । **अरिषड्वर्गः** = छः शत्रुओं का समूह । ये छः शत्रु हैं :—(१) काम, (२) क्रोध, (३) लोभ, (४) मोह, (५) मद, (६) मत्सर (डाह, ईर्ष्या)। मनुष्य के मस्तिष्क को विकृत करने वाले ये हुआ करते हैं। **सामाद्युपायवर्गः** = सामादि उपायों का समूह । ये उपाय चार प्रकार के माने गये हैं—(१) साम, (२) दाम, (३) दण्ड, (४) भेद । राजा को समयानुसार इन चारों का प्रयोग करना पड़ा करता है। **स्वेषु** = अपने व्यक्तियों पर । **परेषु** = शत्रु पक्ष के लोगों पर (शत्रुपक्षीयेषु जनेषु) । **अजस्रम्** = सतत्, निरन्तर । **प्रयोज्यः** = प्रयोग किया जाना चाहिये । **सन्धिविग्रहचिन्तया** = सन्धि तथा युद्ध की चिन्ता से—किस राजा के साथ सन्धि करना श्रेयस्कर होगा तथा किससे युद्ध ? **नेयः कालः** = समय बिताया जाना चाहिये । **मन्त्रिवकैः** = बगुलों के सदृश, धूर्त्त धोखेबाज मन्त्रियों के द्वारा (धूर्त्तसचिवैः) । **युष्मत्तः** = आप से । **चौर्यार्जितम्** = चोरी के द्वारा पैदा किया गया हुआ । **अर्जितम्** = पैदा या कमाया गया हुआ । **वासीगृहेषु** = (वेश्याभवनेषु) वेश्याओं के घरों में । **भुज्यते** = भोगा जाया करता है (कर्मवाच्य) । **वराका** = बेचारे । **मन्त्रकर्कशाः** = मन्त्रों के विषय में बड़े कठोर नियमों का पालन करते हुए जीवन-यापन करने वाले । **शास्त्रतन्त्रकराः** = शास्त्रों के निर्माता तथा तन्त्रशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों के रचयिता (शास्त्रकराः तन्त्रकाराश्च)। **शुक्राङ्गिरसविशालाक्षबाहुदन्तिपुत्रपराशरप्रभृतयः** = शुक्र, अङ्गिरस, विशालाक्ष, बाहुदन्तिपुत्र, पराशर आदि ने—इनमें से शुक्र ने 'शुक्रनीति', अङ्गिरस, (अङ्गिरसः अपत्यं पुमान् आङ्गिरसः) अर्थात् बृहस्पति ने ('अङ्गिरसस्मृति' अथवा 'बृहस्पति-स्मृति' विशालाक्ष (शिव) ने 'शिवस्मृति' तथा पराशर ने 'पराशर-स्मृति' बनायी । **शास्त्रानुष्ठानम्** = शास्त्रों का अनुसरण । **प्रारब्धेषु** = प्रारम्भ किये हुए कार्यों में । **दृष्टे** = देखी गयी है (कर्मवाच्य में) । **सिद्धयसिद्धीः** = सफलता तथा असफलता । अर्थात् क्या उन लोगों को किसी कार्य में सफलता तथा किसी में असफलता प्राप्त हुई है ? यह तो हो ही नहीं सकता है कि उनको

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभी कार्यों में सदैव सफलता ही प्राप्त हुई हो असफलता कभी न हुई हो। **अतिसन्धीयमाना:**=ठगे जाते हुए। **बहव:**=अनेक पुरुष। **ननु इदं उपपन्नं देवस्य**=क्या आपको (महाराज को) ये बातें प्राप्त नहीं हैं ? अथवा आपको तो प्राप्त हैं ही। **सर्वलोकवन्द्या**=सभी लोगों के द्वारा वन्दनीय अथवा पूज्य। **जाति:**=कुल अथवा जन्म। **अयातयामम्**=जिसके उपभोग का समय बीता नहीं है अथवा प्रारम्भ ही नहीं हुआ है अर्थात् नवीन। **वय:**=आयु। **वपु:**=शरीर। **अपरिमाणा**=अपरिमित। **विभूति:**=ऐश्वर्य। **तत् सर्वम्**=उन सबको अर्थात् कुल, नवीन आयु तथा दर्शनीय शरीर को। **मा कृथा**=मत कीजिये। **वृथा**=व्यर्थ निरर्थक। **सर्वाविश्वासहेतुना**=जो सभी लोगों के अविश्वास का कारण है। **तन्त्रावापेन**=तन्त्र अर्थात् अपने राष्ट्र के विषय में विचार करना और उनकी देखभाल करना तथा आवाप (अर्थात् शत्रु के सम्बन्ध में सोचना) के द्वारा। **सुखोपभोगप्रतिबन्धना**=सुखों के उपभोग में अड़चन पैदा करने वाले (तन्त्रावाप से)। **बहुमार्गविकल्पनात्**=अनेक तरीकों के निर्माण करने (बतलाने) के कारण। तन्त्रावाप इष्टसिद्धि के निमित्त एक के स्थान पर अनेक प्रकार (साधन या कथन अथवा विधि) बतलाता है। निश्चयरूप से किसी एक तरीके) मार्ग का उल्लेख नहीं करता है; अत: स्थिति सदैव संशयास्पद ही रहा करती है। **सर्वकार्येषु**=सभी कार्यों में। **अमुक्तसंशयेन**=नहीं त्यागा (छोड़ा) गया है संशय (सन्देह) जिसमें से—अर्थात् जिसके बारे में सदैव संशय बना रहता है। यह 'तन्त्रावापेन' का विशेषण है। **दन्तिनाम्** (हस्तिनाम्)=गजों अथवा हाथियों का। **हयानाम्**=(अश्वानाम्) घोड़ों का। **अनन्तम्**=असंख्य। **पादातम्**=पैदल सिपाही (सेना)। **कोशगृहाणि**=खजानों के घर। **हेमरत्नै:**=सोने तथा रत्नों से। **हेम**=सुवर्ण। **रत्न**=हीरा, जवाहरात आदि। **जीवलोक:**=जीवों का लोक अर्थात् संसार के सभी प्राणी। **समग्रमपि**=सम्पूर्ण। **युगसहस्रम्**=हजारों युगो तक—अनन्तकालपर्यन्त। **भुञ्जान्**=खाता हुआ। **कोष्ठागाराणि**=भण्डारों के घर—(धान्यगृहाणि)। **न रेचयिष्यति**=नहीं खाली करेगा अथवा सकता है। **अन्यार्जनाय**=अधिक धन के उपार्जन (कमाना—पैदा करना) के लिए। **आयास**=क्लेश, प्रयत्न, दुःख। **जीवितम्**=जीवन। **जन्मिनाम्**=प्राणियों का (प्राणिनाम्)। **चतुःपञ्चानि**=चार या पाँच। **अहानि**=दिनों को। **भोगयोग्यम्**=भोग करने में समर्थ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अल्पाल्पम् = अत्यल्प, बहुत थोड़ा । वयःखण्डम् = आयु का भाग । अपंडिता = मूर्खता । ध्वंसन्ते = मर जाते हैं (म्रियन्ते) । वसुनः = धन का । वस्तुनः = चीज का । लवमपि = अणुमात्र भी, थोड़ा-सा भी । आस्वदयितुम् = भोगने के लिए (उपभोक्तुम्) । ईहन्ते = चाहते हैं (इच्छन्ति) ।

(१४) किं बहुना । राज्यभारं भारक्षमेष्वन्तरङ्गेषु भक्तिमत्सु समर्प्य, अप्सरः प्रतिरूपाभिरन्तःपुरिकाभीरममाणो गीतसंगीतपान-गोष्ठीश्च यथर्तुबध्नन् यथार्हं कुरु शरीरलाभम्' इति पञ्चाङ्गीस्पृष्ट-भूमिरञ्जलिचुम्बितचूडश्चिरमशेत् । प्राहसीच्च प्रतिफुल्ललोचनोऽन्तः पुरप्रमदाजनः ।

हिन्दी—अधिक क्या कहा जाये ? भारवहन करने में समर्थ, अपने प्रति श्रद्धा रखने वाले तथा विश्वसनीय मन्त्री आदि व्यक्तियों को (राज्य का भार) सौंपकर अप्सराओं के सदृश सुन्दर अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ रमण करते हुए, ऋतु के अनुसार गाना बजाना, शराब प्रयोग के साथ मित्रगोष्ठी करते हुए शरीर लाभ (इस मनुष्य-जन्म) को सार्थक करें ('ऋतु के अनुसार से'—भाव है कि जैसी ऋतु हो उसके अनुसार अर्थात् गाने के समय गाना, बाजा सुनने के समय वाद्य सुनना, शराब पीने के समय शराब पीना, मित्रमण्डली के साथ गप्पसप्प तथा हास्य विनोद करने के समय गप्पसप्प तथा हास्य करना इत्यादि करते हुए जीवन बिताइये) । ऐसा कहकर, (शरीर के) पांचों अङ्गों से पृथ्वी का स्पर्श करता हुआ, सिर पर अंजलि लगाकर (अर्थात् हाथ जोड़कर) विहारभद्र बहुत समय तक लेटा रहा । प्रसन्नता के कारण विकसित नेत्रों वाली अन्तःपुर की स्त्रियाँ (गद्गद होकर) हँस पड़ीं ।

व्याकरण—अन्तःपुरिकाभीरममाण = अन्तःपुरिकाभिर् रममाणः—इस स्थिति में "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः" सूत्र से 'भिर्' के 'र्' का लोप होकर विसर्ग सम्बन्धी 'र' के पूर्व स्थित 'इ' को दीर्घ होकर "पुरिकाभी" बन गया है । रममाणः—रम् + शानच् । पान—पा + ल्युट् । बध्नन्—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बन्ध् + शतृ । अशेत् शी (अदादिगणी) + लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप (आत्मनेपदी) है । प्राहसीत्—प्र + हस् + लुङ् (प्रथम पुरुष, एकवचन) ।

समास—भार क्षमेषु=भारे क्षमाः इति भारक्षमाः तेषु । **अप्सरः प्रतिरूपाभिः**=अप्सरसां इव प्रतिरूपं यासां ता अप्सरः प्रतिरूपाः ताभिः । **गीतसंगीतपानगोष्ठीः**=गीतं च संगीतं च पानं च इति गीतसंगीतपानानि (द्वन्द्व) तेषां गोष्ठ्यः इति गीतसंगीतपानगोष्ठ्यः ताः गीतसंगीतपानगोष्ठीः । **यथार्तु**=ऋतुमनतिक्रम्य इति यथर्तु (अव्ययीभाव समास) । **यथार्हम्**=यथा अहः यस्य सः यथार्हः तम् (बहुव्रीहि) । **पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिः**=पञ्चानां अङ्गानां समाहारः इति पञ्चाङ्गी (द्विगु समास), पञ्चाङ्ग्या स्पृष्टाः भूमिः येन सः (बहुव्रीहि) **अञ्जलि चुम्बितचूडः**=अञ्जलिनां चुम्बिता चूडा येन सः (बहुव्रीहि) । **प्रीतिफुल्लंलोचनः**=प्रीत्या फुल्लानि लोचनानि यस्य सः (बहुव्रीहि) । **प्रमदाजनः**=प्रमदानां जनः इति (षष्ठी तत्पुरुष) ।

टिप्पणियां— किं बहुना=अधिक कहने से क्या ? [अधिक कथनेन न किमपि प्रयोजनम्—अधिक कहने से कोई लाभ नहीं] । **भारक्षमेषु**—राज्य का भार उठाने में जो समर्थ हों ऐसे राजपुरुषों (मन्त्री आदि) के ऊपर [राज्यपालनसमर्थेषु राजपुरुषेषु । **अन्तरङ्गभूतेषु**=जो अन्दर के भी अङ्ग बन चुके हों अर्थात् जो विश्वासपात्र बन चुके हों ऐसे मन्त्रियों आदि के ऊपर । **समर्प्य**=सौंपकर । **अप्सरः प्रतिरूपाभिः**=अप्सराओं के सदृश जिनमें सौन्दर्य है ऐसी स्त्रियों के साथ । **प्रतिरूप**=सौन्दर्य । **अन्तःपुरिकाभिः**=अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ । **रममाणः**=रमण करते हुए=आमोद-प्रमोद करते हुए । **पान**=शराब पीना । **गोष्ठी**=मडली । **यथर्तु**=ऋतु (समय) के अनुसार । **बन्धन्**=बांधते हुए, करते हुए (कुर्वन्) । **यथार्हम्**=सार्थक । **शरीरलाभम्**=जन्म । **पञ्चाङ्गीस्पृष्टभूमिः**=अपने शरीर के पांचों अङ्गों (दोनों घुटने, दोनों भुजाएँ और मस्तक) से पृथ्वी का स्पर्श करता हुआ । **अञ्जलिचुम्बितचूडः**=अपनी अञ्जलि से चूमा (स्पर्श किया) गया था, मस्तक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसका ऐसा विहारभद्र अर्थात् माथे पर अञ्जलि रखकर (हाथ जोड़कर)। चिरम्=बहुत समय तक। अशेत्=लेटा रहा। प्राहसीत्=हँस पड़ा। प्रीतिफुललोचनः=जिनके नेत्र प्रसन्नता के कारण पूर्णतया विकसित थे ऐसी। प्रमदाजनः—स्त्रियाँ।

(१५) जननाथश्च सस्मितम् 'उत्तिष्ठ, ननु हितोपदेशाद् गुरवो भवन्तः। 'किमिति गुरुत्वविपरीतमनुष्ठितम्' इति तमुत्थाप्य क्रीडारसनिर्भरमतिष्ठत्। अथैषु दिनेषु भूयोभूयः प्रस्तुतेऽर्थे प्रेर्यमाणो मन्त्रिवृद्धेन, वचसाऽभ्युपेत्य मनसँवाचित्तज्ञ इत्यवज्ञातवान्।

हिन्दी—ईषद्हास्य (मुस्कराहट के साथ) राजा ने भी "उठिये, हितकर बात का उपदेश देने के कारण आप (मेरे) गुरु हैं। आपने बड़प्पन (गुरुत्व) के विपरीत आचरण क्यों किया ?" ऐसा कहकर उसे उठाकर (स्वयं भी) भोग-विलास के रस में स्थित हो गया अर्थात् निमग्न हो गया। इन दिनों प्रस्तुत (हाथ में विद्यमान) कार्य के निमित्त बार-बार वृद्धमन्त्री (वसुरक्षित) द्वारा प्रेरित किया जाता हुआ वह राजा (अनन्तवर्मा), वाणीमात्र से स्वीकार कर, किन्तु मन में यह समझकर कि "यह (वृद्धमन्त्री) मेरे हृदय (की बातों) को न जानने वाला है, उस (मन्त्री) का निरादर करने लगा।

व्याकरण—हितोपदेशात्=यहाँ हेतु अर्थ में पञ्चमी विभक्ति हुई है। उत्थाप्य=उत्+स्था+णिच्+ल्यप्। प्रेर्यमाणः=प्र+इर्+शानच् (कर्म में)। अभ्युपेत्य=अभि+उप्+इण्+ल्यप्। ज्ञः=ज्ञ+क- यहाँ "इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः", से 'क' प्रत्यय हो जाता है। अवज्ञातवान्=अव+ज्ञा+क्तवतु।

समास—सस्मितम्—विद्यमानं स्मितं यस्मिन् कर्मणि तत्। हितोपदेशात्=हितस्य उपदेश (षष्ठी तत्पुरुष) हितोपदेशः, तस्मात्। गुरुत्वविपरीतम्—गुरुत्वस्य विपरीतम् इति (षष्ठी तत्पुरुष), क्रीडारसनिर्भरमति.=क्रीडायाः रसः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(षष्ठी तत्पुरुष), तस्मिन् निर्भरा मतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)। **मन्त्रिवृद्धेन**= मन्त्रिणां मन्त्रिषु वा वृद्धः इति मन्त्रिवृद्धः तेन। **अचित्तज्ञः**=जानातीतिज्ञः, चित्तस्य ज्ञः इति चित्तज्ञः (षष्ठी तत्पुरुष), न चित्तज्ञः अचित्तज्ञः (नञ् तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—सस्मितम्=ईषत् हास्य (मुस्कराहट) से युक्त या मुस्कराहट के साथ। **हितोपदेशात्**=हितकारी बातों का उपदेश देने के कारण। **गुरवः**=बड़े। **किमिति**=क्यों ? किस कारण ? **गुरुत्वविपरीतम्**=बड़प्पन के विपरीत। **उत्थाप्य**=उठाकर। **क्रीडारसनिर्भरमतिः**=(सांसारिक) भोग-विलास में निमग्न थी बुद्धि जिसकी ऐसा राजा। **भूयः भूयः**=बारम्बार। **प्रस्तुतेऽर्थे**= प्रस्तुत कार्य (हाथ में लिये हुए कार्य) में। **प्रेर्यमाणः**=प्रेरित किया जाता हुआ। **मन्त्रिवृद्धेन**= वृद्ध मन्त्री के द्वारा—इसका 'प्रेर्यमाणः' के साथ सम्बन्ध है। **वचसा**=वाणीमात्र। **अभ्युपेत्य**=स्वीकार करके (स्वीकृत्य)। **अचित्तज्ञः**= मेरे चित्त (मन) की वृत्ति (भावनाओं) को न जानने वाला। राजा अनन्तवर्मा ने अपने मन में सोचा—कि वह वृद्ध मन्त्री वस्तुतः मेरे मन की बातों को नहीं समझता है; अतः यह मूर्ख है। इस कारण उसके द्वारा कही गयी बातों की ओर ध्यान न देते हुए राजा ने। **अवज्ञातवान्**=तिरस्कार (अपमान) किया।

(१६) अथैवं मन्त्रिणो मनवस्यभूत्—अहो मे मोहाद्बालिशयम्। अरुचितेऽर्थे चोदयन्नर्थीवाक्षिगतोऽहमस्य हास्यो जातः। स्पृष्टमस्य चेष्टानामयथापूर्व्यम्। तथा हि– न मां स्निग्धं पश्यति, न स्मितपूर्वं भाषते, न रहस्यानि विवृणोति, न हस्ते स्पृशति, न व्यसनेष्वनुकम्पते, नोत्सवेष्वनुगृह्णाति, न विलोभनवस्तूनि प्रेषयति, न मत्सुकृतानि गणयति, न मे गृहवार्ता पृच्छति, न मत्पक्ष्यान्प्रत्यवेक्षते, न मामासन्नकार्येष्वभ्यन्तरीकरोति, न मामन्तःपुरं प्रवेशयति। अपि च मामनर्हेषु कर्मसु नियुङ्क्ते, मदासनमन्यैरवष्टभ्यमानमनुजानाति, मद्वैरिषु विश्रम्भं दर्शयति, मदुक्तस्योत्तरं न ददाति, मत्समानदोषान्विगर्हयति, मर्मणि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मामुपहसति, स्वमतमपि मया वर्ण्यमानं प्रतिक्षिपति, महार्हाणि वस्तूनि मत्प्रहितानि नाभिनन्दति, नयज्ञानां स्खलितानि मत्समक्षं मूर्खैरुद्घोषयति। सत्यमाह चाणक्यः—'चित्तज्ञानानुवर्तिनोऽनर्थ्या अपि प्रियाः। दक्षिणा अपि तद्भावबहिष्कृता द्वेष्या भवेयुः' इति। तथापि का गतिः। अविनीतोऽपि न परित्याज्यः पितृपैतामहैरस्मादृशैरयमधिपतिः। अपरित्यजन्तोऽपि कमुपकामश्रूयमाणवाचः कुर्मः। सर्वथा नयज्ञस्य वसन्तभानोरश्मकेन्द्रस्य हस्ते राज्यमिदं पतितम्। अपि नामापदो भाविन्यः प्रकृतिस्थमेनमापादयेयुः। अनर्थेषु सुलभव्यलीकेषु क्वचिदुत्पन्नोऽपिद्वेषः सद्वृत्तमस्मै न रोचयेत्। भवतु। भविता तावदनर्थः। स्तम्भितपिशुनजिह्वो यथाकथञ्चिद्भ्रष्टपदस्तिष्ठेयम्' इति।

हिन्दी—इसके अनन्तर मन्त्रियों के मन में (ऐसा विचार) उद्भूत हुआ—अहा, अज्ञान के कारण मेरी (यह) मूर्खता ! (इस राजा का) अरुचिकर कार्य के प्रति प्रेरणा प्रदान करता हुआ मैं भिखारी के सदृश इसका शत्रु बन कर हास्य का पात्र हो चुका हूँ। यह तो स्पष्ट ही है कि इस (राजा) के व्यवहार पहले जैसे नहीं रहे। जैसे कि—(यह) मुझे प्रेम भरी दृष्टि से नहीं देखता है, मुस्कराते हुए मुझसे नहीं बोलता है, रहस्यपूर्ण (छिपाने योग्य) बातों को नहीं खोलता (प्रकट करता) है। मुझे (अपने) हाथ से नहीं छूता है, मेरे ऊपर आयी हुई) आपत्तियों में (भी) दया नहीं करता है, उत्सवों में भी (मेरे ऊपर) अनुग्रह नहीं करता है, लुभाने वाली वस्तुओं को (मेरे लिए) नहीं भेजता है मेरे द्वारा किये गये अच्छे कार्यों को भी नहीं गिनता है, मेरे घर की बात (हाल-चाल) नहीं पूछता है, मेरे पक्ष के लोगों की ओर नहीं देखता है, अपने समीपस्थ कार्यों में (मुझे) सम्मिलित नहीं करता है (अर्थात् मेरा विश्वास नहीं करता है)। मुझे (महल में स्थित) अन्तःपुर में प्रवेश नहीं करने देता है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और भी, अयोग्य कार्यों में मुझे नियुक्त करता है। मेरे आसन पर अन्य व्यक्तियों द्वारा अधिकार किये जाने की आज्ञा देता है, मेरे दुश्मनों के प्रति विश्वास दिखलाता है, मेरे द्वारा कही हुई बात का उत्तर नहीं देता, मुझ जैसे निर्दोष लोगों की निन्दा करता है, मर्मस्थल (हृदय) में चुभने वाली बातों को कह-कहकर मेरा हास्य करता है, मेरे द्वारा कथन किये गये हुए अपने मत (विचार) का भी तिरस्कार करता है, मेरे द्वारा प्रेषित बहुमूल्य वस्तुओं का (भी) अभिनन्दन नहीं करता है, मेरे समक्ष मूर्ख व्यक्तियों द्वारा राजनीतिज्ञ लोगों के दोषों की घोषणा करवाता है। चाणक्य ने ठीक ही कहा है कि (राजा के) मन को पहचान कर (राजा के मनोनुकूल) चलने वाले व्यक्ति अनर्थकारी होते हुए भी (राजा को) प्रिय लगा करते हैं, किन्तु (राजा की चित्तवृत्ति) के विपरीत कार्य करने वाले व्यक्ति, चतुर होते हुए भी (उसके) शत्रु हो जाया करते हैं। तो भी (अन्ततोगत्वा) चारा ही क्या है? अविनीत (शिष्टाचारविहीन) होने पर भी यह राजा पिता, पितामह से (मन्त्री के पद पर कार्य करते हुए चले आते हुए) मेरे द्वारा छोड़ देने योग्य नहीं है, किन्तु जब हमारी बातों को सुना ही नहीं जा रहा है तो (इस राजा को) न छोड़ते हुए भी हम (इसकी) क्या भलाई कर सकते हैं। पूर्णरूप से यह राज्य अश्मक-देशीय नीतिज्ञाता राजा वसन्तभानु के हाथों में चला गया (अर्थात् चला जायेगा)। सम्भव है कि भावी (भविष्य में आने वाली) आपत्तियाँ (ही) इसे (इस राजा को) प्रकृतिस्थ (अपनी बुद्धि में स्थित ठीक-ठीक रूप में) कर दें। (किन्तु यह भी हो सकता है कि) जिनमें दुःख मिलना ही स्वाभाविक है ऐसे अनर्थों की ओर से उत्पन्न हुआ द्वेष भी इसे (इस राजा को) सदाचार या शिष्टाचार को प्रिय (अच्छा) न लगने दे (अर्थात् यह हो सकता है कि अनर्थों और आपत्तियों के अचानक उपस्थित हो जाने पर उनके प्रति उसे द्वेष हो जावे, साथ ही अच्छे आचरण की ओर वह उन्मुख न हो)। अस्तु, अनर्थ तो होगा ही (होना ही है); अतः हमारे लिए यही उचित है कि हम अपनी जीभ में ताला लगाकर (कुछ कहे बिना ही) किसी प्रकार अपने पदों को खोये बिना ही अपने-अपने पदों पर आरूढ़ रहें।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकरण—**बालिश्यम्** = बालिश + ष्यञ् । **हास्यः** = हस् + ण्यत् । **अयथापूर्व्यम्** = अयथापूर्व + ष्यञ् । **पक्षान्** = इसमें "अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि" सूत्र में वर्णित 'प्रति' (प्रत्यवेक्षते) के योग में द्वितीया विभक्ति हुई है । **अवष्टभ्यमानम्** = अव + स्तम्भ + शानच् । **अनुजानाति** = अनु + ज्ञा + लट्—लकार—प्रथम पुरुष एकवचन का रूप । **वर्ण्यमानम्** = वर्ण + शानच् (कर्मवाच्य में) । **प्रहितानि** = प्र + धा + क्त । **चित्तज्ञानानुवर्तिनः** = चित्तज्ञान + अनु + वृत् + णिनि (ताच्छील्ये) । **द्वेष्याः** = द्विष् + ण्यत् । **अविनीतः** = नञ् + वि + नी + क्त ! **परित्याज्य** = परि + त्यज् + ण्यत् ! **पैतामहः** = पितामह + अण् । **अश्रूयमाण** = नञ् + श्रु + शानच् (कर्मणि) । **भाविन्यः** = भू + णिनि + ङीप् । **सुलभ** = सु + लभ् + खल । **अस्मै न रोचयेत्** = यहाँ पर अस्मै में "रुच्यर्थानां प्रीयमाणः" सूत्र से चतुर्थ विभक्ति हुई है । **भविता** = भू + लुट् ।

समास आदि—**बालिश्यम्** = बालिशस्य भावः बालिश्यम् । **अरुचिते** = न रुचितिः इति अरुचितः तस्मिन् (तत्पुरुष) । **अयथापूर्व्यम्** = पूर्वं अनितक्रम्य इति यथापूर्वम् (अव्ययीभाव समास), न यथापूर्वं इति अयथापूर्वम् (नञ् तत्पुरुष) तस्य भावः अयथापूर्वम् । **स्मितपूर्वम्** = स्मितं पूर्वं यस्मिन् तत् । **विलोभनवस्तूनि** = विलोभनानि च तानि वस्तूनि इति विलोभनवस्तूनि (कर्मधारय) । **सुकृतानि** = शोभनानि कृतानि (कार्याणि) इति सुकृतानि । **आसन्नकार्येषु** = आसन्नानि च तानि कार्याणि इति आसन्नकार्याणि (कर्मधारय) । तेषु । **मदासनम्** = मम आसनम् इति (षष्ठी तत्पु०) । **मत्समानदोषान्** = मम समानाः मत्समानाः (षष्ठी तत्पु०), तेषां दोषाः इति मत्समानदोषाः तान् (षष्ठी तत्पुरुष) । **स्वमतम्** स्वस्य मतम् इति (षष्ठी तत्पु०) । **महार्हाणि** = महान् अर्हः येषां तानि (बहुव्रीहि) । **मत्प्रहितानि** मया प्रहितानि (तृ० तत्पु) । **नयज्ञानां** = नयान् जानातीति नयज्ञाः तेषाम् । **चित्तज्ञानानुवर्तिनः** = चित्तस्य ज्ञानमिति चित्तज्ञानम् (षष्ठी तत्पुरुष), चित्तज्ञानं अनुवर्तितुं शीलं एषां ते चित्तज्ञानानुवर्त्तिनः । **तद्भावबहिष्कृताः** = तस्य भावाः इति तद्भावाः (षष्ठी तत्पुरुष), तेभ्यः बहिष्कृताः (पञ्चमी तत्पुरुष) । **अविनीतः** = न विनीतः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अविनीतः (नञ् तत्पु०)। पितृपैतामहैः = पितामहात् आगताः इति पैतामहाः, पितुः पैतामहाः इति पितृपैतामहाः तैः (षष्ठी तत्पुरुष)। अश्मकेन्द्रस्य = अश्मकानां इन्द्रः अश्मकेन्द्र तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। सुलभव्यलीकेषु = सुखेन लब्धुं शक्यानि इति सुलभानि, सुलभानि व्यलीकानि येषु ते सुलभव्यलीकाः तेषु (बहुव्रीहि)। सद्वृत्तम् = सत् च तद् वृत्तम् इति सद्वृत्तम् (कर्मधारय समास)। स्तम्भितपिशुनजिह्वा = पिशुना चासौ जिह्वा इति च इति पिशुनजिह्वा (कर्मधारय), स्तम्भिता पिशुनजिह्वा येन सः (बहुव्रीहि)। अभ्रष्टपदः = न भ्रष्ट पदं यस्य सः (बहुव्रीहि)।

टिप्पणियाँ— मोहात् = अज्ञान अथवा मूर्खता के कारण। बालिश्यम् = मूर्खता। अरुचिते अर्थे = न चाहे गये हुए कार्य के लिए। चोदयन् = प्रेरित करता हुआ (प्रेरयन्)। अक्षिगतः = क्रोध अथवा घृणा का पात्र—"द्वेष्योऽक्षिगत उच्यते"। हास्य = मजाक का विषय अथवा पात्र। चेष्टानाम् = व्यवहारों अथवा कार्यों को—(व्यवहाराणाम्)। अयथापूर्व्यम् = जैसा (इस समय के पूर्व) पहले था वैसा (इस समय) न होना। अस्य चेष्टानां अयथापूर्व्यम् स्पष्टम् = इसके व्यवहारों का पहले जैसा न होना स्पष्ट ही है। तथाहि = जैसे कि। स्निग्धम् = प्रेम से परिपूर्ण। स्मितपूर्वम् = मुस्कराहट से युक्त। रहस्यानि = छिपी हुई (गुप्त) बातें। विवृणोति = प्रकट करता है। व्यसनेषु = विपत्तियों में, आपदाओं में। न अनुकम्पते = दया अथवा सहानुभूति नहीं दिखलाता है। विलोभनवस्तूनि = अपनी ओर आकर्षित करने वाली वस्तुएँ। सुकृतानि = उत्तम अथवा शोभन कार्यों को। प्रगणयति = गिनता है, मानता है। पक्षान् = (मेरे) पक्ष के लोगों को। न अवेक्षते = नहीं देखता है। आसन्नकार्येषु = समीपस्थ कार्यों में अर्थात् गोपनीय कामों में अथवा जो कार्य राजा के हृदय के अन्दर ही रहा करते हैं—(वैयक्तिक कार्य) उनमें। न अभ्यन्तरीकरोति = [न विश्वसिति नियोजयति वा] विश्वास नहीं करता है। अनर्हेषु = अनुचित, अयोग्य में [अयोग्येषु]। मदासनम् = मेरे आसन को। अवष्टभ्यमानम् = जबरदस्ती अधिकार किया जाता हुआ। अनुजानाति = स्वीकृति देता है (अनुमोदते)। विश्रम्भम् = विश्वास को। मत्समानदोषान् = मुझ जैसे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोगों के । विगर्हयति = निन्दा करता है (निन्दति) । मर्मणिमां उपहसति = मेरे मर्म पर हँसता है । मर्म हर हँसने का भाव है कि जिसे सुनकर हँसी उड़ाये जाने वाले व्यक्ति का मर्मस्थल बिंध जाता है अर्थात् उसके हृदय पर उस हास्य की चोट लगती है—तीव्र वेदना अथवा पीड़ा हुआ करती है। स्वमतम् = अपनी राय (सम्मति) को । वर्ण्यमानम् = कहा जाता हुआ। प्रतिक्षिपति = तिरस्कृत अथवा अपमानित किया करता है । महार्हाणि = बहु-मूल्य — अर्हः = मूल्य । मत्प्रहितानि = मेरे द्वारा प्रेषित । न अभिनन्दति = अभिनन्दन (स्वागत) नहीं करता है अर्थात् देखकर प्रसन्न नहीं होता है। नयज्ञानाम् = [नीतिविदाम्] राजनीति जानने वालों के । स्खलितानि = दोषों को । चित्तज्ञानानुवर्तिनः = (राजा के) चित्त (मन) का ज्ञान प्राप्त करके (अर्थात् उसके चित्त में क्या है, इस बात को भली-भाँति समझ करके) अनुवर्तन करने वाले (तदनुकूल कार्यों को करने वाले) । अनर्था = अनर्थ अथवा अनर्थकारी व्यक्ति । दक्षिणः = चतुर, योग्य, पुरुष । तद्भावबहिष्कृताः = राजा की चित्त-वृत्ति से बाहर रहने वाले अर्थात् उसके चित्त की वृत्तियों को न पहचानने वाले । द्वेष्याः = द्वेष कहने योग्य— शत्रु अथवा घृणा के पात्र । का गतिः = क्या उपाय ? अर्थात् कोई अन्य उपाय भी नहीं है । अविनीतः = नम्रता विहीन, असभ्य अथवा अशिष्ट । न परित्याज्यः = त्याग देने योग्य नहीं है । पितृपैतामहैः अस्मादृशैः अयं अधिपतिः - इन (राजा) के पिता तथा पितामह के समय से मैं मन्त्री के पद पर काम करता चला आया हूँ अथवा मुझे यह मन्त्री का पद मेरे ही जीवन से प्राप्त नहीं हुआ है, अपितु यह पद मेरे पिता तथा पितामह के समय से ही चला आ रहा है । कहने का तात्पर्य यह है कि मेरा यह पद तो पुश्तैनी है - मेरे पिता तथा दादा आदि भी इसी पद पर कार्य करते चले आये हैं । अश्रूयमाणवाचः = नहीं सुनी जाया करती हैं बातें जिनकी इस प्रकार के हम लोग—अर्थात्— जब यह राजा मेरी बातों को सुनता ही नहीं है । अपरित्यजन्तोऽपि कं उपकारं कर्मः = न छोड़ते हुए होने पर भी हम इस (राजा) का क्या उपकार कर सकते हैं । तात्पर्य यह है कि हम इस राजा को भी न छोड़ें और इसके ही मन्त्री पद पर बने ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहें तो भी हम इस राजा का क्या लाभ कर सकते हैं; क्योंकि यह राजा मेरी तो किसी बात को सुनता ही नहीं है अथवा हम इस राजा का वस्तुतः कोई भी उपकार नहीं कर सकते हैं; क्योंकि वह हमारी बात की ओर ध्यान ही नहीं देता है। ऐसी स्थिति में हमारा वश ही क्या है? **अश्मकेन्द्रः**=आधुनिक भारत में ट्रावनकोर नाम का प्रदेश है इसी को पहले 'अश्मक' नाम से पुकारा जाया करता था। इस अश्मक देश का इन्द्र अर्थात् अधिपति (स्वामी)। इसका नाम 'वसन्तभानु' था। यह एक अच्छा राजनीतिज्ञ था। **भाविन्यः**=भाविनी अर्थात् भविष्य में होने वाली। **प्रकृतिस्थम्**=अपनी प्रकृति में स्थित अथवा अपनी बुद्धि में स्थित अथवा स्वस्थ एवं उत्तम बुद्धि से युक्त। अर्थात् राजा को ऐसा बना दे कि वह फिर गलत कार्य कर ही न सके तथा सदैव उत्तम और यशस्वी कार्यों को ही सम्पन्न करे। **आपादयेयुः**=(कुर्युः) कर दे। **अनर्थेषु**= कुत्सित कार्यों में अथवा पापों में। **सुलभव्यलीकेषु**=जिनमें दुःखों का प्राप्त होना बहुत सरल था ऐसे प्राकृतिक अनर्थों में। **क्वचित्**=शायद। **द्वेष**= (उन अनर्थों से) विरक्ति अथवा घृणा। **सद्वृत्तम्**=अच्छा आचरण। **अस्मै न रोचयत्**=इस राजा को रुचिकर न हो। **भविता**=होगा। **अनर्थः**=विपत्ति **स्तम्भितपिशुनजिह्वः**=इसका अर्थ दो प्रकार से किया जाता है (१) अपनी इस क्षुद्र (नीच) जिह्वा को रोककर (दबाकर) अथवा शान्त रखकर (बिना कुछ बोले हुए ही) (२) चुगलखोरों की जिह्वा को दबाकर अर्थात् मैं ऐसे कार्य करूँ कि जिससे चुगलखोरों को चुगली करने का अवसर ही प्राप्त न हो सके। **यथाकथञ्चित्**=जिस किसी भाँति। **अभ्रष्टपदः**=जिसका मन्त्रिपद समाप्त न होने पावे, ऐसा मैं—अर्थात् मन्त्रिपद पर आरूढ़ रहते हुए ही मैं। **तिष्ठेयम्** =(अपने पद पर ही) स्थित रहूँ अथवा बना रहूँ।

---

(१७) एवं गते मन्त्रिणि राजनि च कामवृत्ते चन्द्रपालितो नामाश्मकेन्द्रामात्यस्येन्द्रपालितस्य सूनुः, असद्वृत्तः पितृनिर्वासितो नाम भूत्वा, बहुभिश्चारणगुणैर्बह्वीभिरनल्पकौशलाभिः शिल्पकारिणीभिरनेकच्छन्नकिंकरैश्च गूढपुरुषैः परिवृतोऽभ्येत्य विविधाभिः क्रीडाभिः विहारभद्रमात्मसाद्करोत्। अमुना चैव संक्रमेण स राज-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न्यास्पदमलभत् । लब्धरन्ध्रश्च स यद्यद्व्यसनमारभते तत्तत्थेत्यवर्णयत्—देव यथा मृगया ह्युपकारिकी न तथान्यत् । अत्र हि व्यायामोत्कर्षादापत्सूपकर्त्ता दीर्घाध्विलङ्घनक्षमोजङ्घाजव:, कफापचयादारोग्यैकमूलमाशयाग्निदीप्ति:, मेदोऽपकर्षादङ्गानां स्थैर्यकार्कश्यातिलाघवादीनि, शीतोष्णवातवर्षक्षुत्पिपासासहत्वम्, सत्त्वानामवस्थान्तरेषु चित्तचेष्टितज्ञान हरिणगवलगवयादिवधेन सस्यलोपप्रतिक्रिया, वृकव्याघ्रादिघातेन स्थलपथशल्यशोधनम् शैलाटवीप्रदेशानां विविधकर्मक्षमाणामालोचनम्, आटविकवर्गविश्रम्भणम् उत्साहशक्तिसंधुक्षणेन प्रयत्नीकवित्रासनमिति बहुतमा गुणा: ।

हिन्दी—(इस भाँति) मन्त्री के तटस्थ हो जाने पर तथा राजा के भी स्वेच्छाचारी हो जाने पर अश्मक देश के राजा वसन्तभानु के मन्त्री इन्द्रपालित के दुराचारी पुत्र चन्द्रपालित ने स्वयम् को (अपने को) पिता द्वारा निष्कासित घोषित कर, अनेक चारणों (भाटों), अतिचातुरी-सम्पन्न चित्र-निर्माण में कुशल, स्त्रियों तथा अनेक नौकरों से युक्त गुप्तचरों द्वारा घिरे हुए, (उस राजा) के पास आकर, नाना-प्रकार की क्रीड़ाओं द्वारा विहारभद्र को अपने वशीभूत कर लिया। (इस भाँति राजदरबार में प्रविष्ट होने का) सुअवसर पाकर उस (चन्द्रपालित) ने उस विहारभद्र के साथ मिलकर राजा के हृदय में अथवा राजदरबार में स्थान प्राप्त कर लिया। अवसर पाकर वह (चन्द्रपालित) राजा (अनन्तवर्मा) जिस-जिस व्यसन को प्रारम्भ करता था, उसी के बारे में "ऐसा ही ठीक है अथवा ऐसा होना उचित ही है" कह कहकर (उसका) अनुमोदन कर देता था। हे देव ! आखेट (शिकार) करना जितना अधिक लाभकारी है उतना (लाभकारी) अन्य कुछ भी नहीं (है)। इसमें (शिकार खेलने में) व्यायाम के उत्कर्ष के कारण, आपत्तियों में उपकार करने वाला तथा लम्बे-लम्बे मार्गों को पार (तै) करने में समर्थ जङ्घाओं की गति में वेग आता है (उत्पन्न हो जाया करता है), कफ का नाश हो जाने से (कफ का विनाश हो कर) आरोग्यता की एकमात्र जड़ जठराग्नि (पेट की अग्नि—भोजन का पाचन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने वाली शक्ति) उद्दीप्त होती है। मेद (चर्बी) की कमी होकर (चर्बी के छँट जाने से) अङ्गों में दृढ़ता (स्थिरता), अधिक परिश्रम को सहन करने की सामर्थ्य तथा अत्यधिक फुर्ती इत्यादि आ जाया करती है। शीत, गर्मी, वायु, वर्षा, भूख और प्यास (इन सब) को सहन करने की शक्ति आती है। भिन्न-भिन्न दशाओं में (वन में निवास करने वाले) प्राणियों की मनोवृत्ति तथा (नाना प्रकार की चेष्टाओं का ज्ञान भी (प्राप्त) होता है। हरिण, जंगली-भैंस तथा नीलगाय आदि (जन्तुओं के) वध हो जाने से फसल को नष्ट होने से बचाने का उपाय, भेड़िये आदि के वध होने के कारण स्थल-मार्ग के कंटकों (विघ्न-बाधाओं) की सफाई, नाना प्रकार के कार्यों के निमित्त उपयोगी पर्वतीय स्थानों तथा प्रदेशों का पता लगाना, वन में रहने वाली प्रजाओं के हृदय में विश्वास उत्पन्न करना और उत्साह शक्ति के बढ़ जाने से शत्रुओं की सेनाओं के हृदयों में भय का उत्पादन करना इत्यादि अनेक गुण हैं।

व्याकरण—मन्त्रिणि—में "यस्य च भावेन भावलक्षणम्" सूत्र से सप्तमी विभक्ति होती है। **निर्वासितः**=निर्+वस्+णिच्+क्त। **कौशल**=कुशल+अण्। **छन्न**=छद्+क्त। **परिवृत्तः**=परि+वृ+क्त। **अभ्येत्य**=अभि+आ+इण+ल्यप्। **आत्मसात्**=आत्मन्+साति—यहाँ आधीन अर्थ में 'साति' प्रत्यय हुआ है। **औपकारिकी**=उपकार+अण्+इक+ङीप्। **उपकर्त्ता**=उप+कृ+तृच्। **लङ्घन**=लङ्घ+ल्युट्। **अपचय**=अप+चि+अच्। यहाँ "एरच्" सूत्र से चि धातु से भाववाचक संज्ञा बनाने हेतु 'अच' प्रत्यय होता है। **दीप्तिः**=दीप्+क्तिन्। **स्थैर्यम्**=स्थिर+ष्यञ् (भावे)। **कार्कश्यम्**=कर्कश+ष्यञ् (भावे)। **लाघवम्**—लघु+अण् (भावे)। **घात**=हन्+घञ्। **शोधनम्**=शुध्+ल्युट्। **आटविक**=अटवी+ठक्।

समास आदि—कामवृत्ते=कामेन (अपनी इच्छा) वृत्त (व्यवहार अथवा आचरण करना) यस्य सः कामवृत्त: तस्मिन्। (बहुव्रीहि)। **अश्मकेन्द्रामात्यस्य**=अश्मकानां इन्द्रः इति अश्मकेन्द्रः (षष्ठी तत्पु०), तस्य अमात्यः इति अश्मकेन्द्रामात्यः, तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। **असद्वृत्तः**=सत् (शोभनं) वृत्तं यस्य सः

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सद्वृत्तः (बहुव्रीहि),न सद्वृत्तः असद्वृत्तः (नञ् तत्पुरुष) । **पितृनिर्वासितः**=पित्रा निर्वासितः इति पितृनिर्वासितः (तृतीया तत्पुरुष) । **अनल्पकौशलाभि**=कुलस्य भावः कौशलम् न अल्पमिति अनल्पम् (नञ् तत्पु०), अनल्पं कौशलं यासु ताः अनल्पकौशलाः ताभिः (बहुव्रीहि) । **अनेकच्छन्नकिङ्करैः**=न एके इति अनेके (नञ् तत्पु०), अनेके छन्नाः किङ्कराः येषां ते अनेकच्छन्नकिङ्कराः तैः (बहुव्रीहि)। **गूढपुरुषैः**=गूढाश्च ते पुरुषाः इति गूढपुरुषाः तैः (कर्मधारय) । **आत्मसात्**= आत्मना अधीनम् इति आत्मसात् । **लब्धरन्ध्रः**=लब्धं रन्ध्रं येन सः (बहुव्रीहि) **औपकारिकी**=उपकाराय अर्हा इति । **व्यायामोत्कर्षात्**=व्यायामस्य उत्कर्षः इति व्यायामोत्कर्षः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष) । **दीर्घाध्वलंघनक्षमः**=दीर्घश्चासौ अध्वा च इति दीर्घाध्वा (कर्मधारय), दीर्घाध्वनः लंघनम् इति दीर्घाध्वलंघनम् (षष्ठी तत्पु०) तस्मिन् क्षमः इति (सप्तमी तत्पुरुष) । **कफापचात्**=कफस्य अपचयः इति कफापचयः (षष्ठी तत्पु०), तस्मात् । **आरोग्यैकमूलम्**=आरोग्यस्य एक मूलं इति आरोग्यैकमूलम् (षष्ठी तत्पुरुष) । **आशयाग्निदीप्तिः**=आशयस्य अग्निः इति अशयाग्निः (षष्ठी तत्पु०), आशयाग्नेः दीप्तिः इति (षष्ठी तत्पु०)। **मेदोऽपकर्षात्**=मेदसः अपकर्षः इति मेदोपकर्षः तस्मात् (षष्ठी तत्पु०) । **स्थैर्यम्**= स्थिरस्य भावः स्थैर्यम् । **कार्कश्यम्**=कार्कशस्य भावः कार्कश्यम् । **अतिलाघवम्**= लघोः भावः लाघवम्, अतिशयितं लाघवम् इति अतिलाघवम् । **स्थैर्यकार्कश्याति-लाघवादीनि**=स्थैर्यं च कार्कश्यं च अतिलाघवं च आदिः येषां तानि (बहुव्रीहि)। **शीतोष्णवातवर्षक्षुत्पिपासासहत्वम्**=शीतं च उष्णं वातश्च वर्षश्च क्षुत् च पिपासा च इति शीतोष्णवातवर्षक्षुत्पिपासाः (द्वन्द्व) ताः सहते इति शीतोष्ण-वातवर्षक्षुत्पिपासासहः, तस्य भावः तम् शीतोष्णवातवर्षक्षुत्पिपासासहत्वम् । **अवस्थान्तरेषु**=अन्याः अवस्थाः इति अवस्थान्तराणि तेषु । **चित्तचेष्टितज्ञानम्** =चित्तं च चेष्टितानि च क्रियाये चित्तचेष्टितानि (द्वन्द्व) तासां ज्ञानम् इति (षष्ठी तत्पु०) । **हरिणगवलगवयादिवधेन**=हरिणाश्च, गवलाश्च, गवयाश्च इति हरिणगवलगवयाः (द्वन्द्व), ते आदयः येषां ते हरिणगवलगवयादयः (बहुव्रीहि), तेषां वधः तेन (षष्ठी तत्पुरुष) । **सस्यलोपप्रतिक्रिया**=सस्यानां लोपः इति सस्यलोपः (षष्ठी तत्पु०) तस्य प्रतिक्रिया इति (षष्ठी तत्पु०) । **वृकव्याघ्रादि-घातेन**=वृकाश्च व्याघ्राश्च इति वृकव्याघ्राः द्वन्द्व ते आदयः येषां ते वृक-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याघ्रादय: (बहुव्रीहि) तेषां घात: वृकव्याघ्रादिघात: तेन (षष्ठी तत्पु०)। **स्थलपथशल्यशोधनम्**=स्थलस्य पन्थान इति स्थलपथा:, तेषां शल्यानि इति स्थलपथशल्यानि तेषां शोधनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **शैलाटवीप्रदेशानाम्**=शैलाश्च अटव्यश्च इति शैलाटव्य: (द्वन्द्व), तासां प्रदेशा इति तेषां (षष्ठी तत्पु०)। **विविधकर्मक्षमाणाम्**=विविधानि च तानि कर्माणि इति विविध-कर्माणि (कर्मधारय) तेषु क्षमा इति तेषां (सप्तमी तत्पुरुष)। **आटविकवर्गविश्रम्भणम्**=अटव्यां चरन्तीति आटविका: तेषां वर्ग: इति आटविकवर्ग:, तस्मिन् विश्रम्भणम् इति (सप्तमी तत्पु०)। **उत्साहशक्तिसंधुक्षणेन**=उत्साहशक्ते: संधुक्षणम् इति उत्साहशक्तिसंधुक्षणम्, तेन। **प्रत्यनीकवित्रासनम्**=प्रीतिकूलानि अनीकानि इति प्रत्यनीकानि तेषां वित्रासनम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—**एवं गते**=ऐसा हो जाने पर। **कामवृत्ते**=अपनी इच्छानुसार काम करने वाला हो जाने पर। **अश्मकेन्द्रामात्यस्य**=अश्मक देश के अधिपति (राजा) के मन्त्री का। अश्मक देश के राजा का नाम वसन्तभानु था तथा उसका मन्त्री इन्द्रपालित था। **अत:**=इन्द्रपालित का। **असद्वृत्त:**=गलत या बुरा आचरण करने वाला। **पितृनिर्वासितै:**=(अपने) पिता द्वारा निकाल दिया गया हुआ। **भूत्वा**=होकर (प्रसिद्ध बनकर)। उसने सर्वत्र यह सूचना देकर अपने को प्रसिद्ध कर दिया था कि उसे पिता द्वारा घर से निकाल दिया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह वस्तुतः घर से निकाला नहीं गया था, किन्तु उसने झूठ-मूठ जनता में ऐसा प्रचार कर रखा था। केवल राजा अनन्तवर्मा का विश्वासपात्र बनने के निमित्त उसने यह जाल रचा था। **चारण**=भाट—अर्थात् जो लोग राज-दरबार में राजा का यशगान किया करते हैं। **अनल्पकौशलाभि:**=अत्यधिक चतुर। **शिल्पकारिणीभि:**=चित्र बनाने वाली स्त्रियों के साथ। कुछ विद्वानों ने इनका अर्थ "नाचने वाली स्त्रियों के साथ" भी किया है। **अनेकच्छन्नकिंकरै:**=जिनके समीप अनेक छिपे हुए नौकर रहा करते थे ऐसे—**गूढपुरुष:**=गुप्तचरों से। **छन्न**=छिपे हुए, गुप्त। **किङ्कर**=नौकर। **परिवृत्त:**=घिरा हुआ। **अभ्येत्य**=समीप आकर। **आत्मसात्**=अपने वश में

Funding by IKS-MoE

अथवा अपने आधीन। संक्रमेण=उपाय से। राजनि=राजा में अर्थात् राज-दरबार में अथवा राजा के हृदय में। लब्धरन्ध्रकः=(प्राप्यावसरः) अवसर पाकर। रन्ध्र=छिद्र, दोष—इस स्थल पर इसका भाव 'अवसर' ही लिया जायेगा। जिसके द्वारा अवसर प्राप्त कर लिया गया था ऐसा वह। यद्यद्=जो-जो। व्यसनम्=व्यसन (बुरे काम)। आरभते=आरम्भ करता था। तत् तथा इति=वह वैसा ही है—अर्थात् "ठीक है" ऐसा। अवर्णयत्=कह दिया करता था। मृगया=शिकार, आखेट। महाव्यसनों के अन्तर्गत मृगया भी एक महाव्यसन माना गया है :—

स्त्रियोऽक्षा मृगया पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणम्।
दण्डपारुष्यमित्येतत् महाव्यसनसप्तकम्॥ वैजयन्ती।

(१) अनेक स्त्रियों के साथ भोग करना, (२) जुआ खेलना, (३) शिकार करना, (४) शराब पीना, (५) कठोर वाणी बोलना, (६) धन सम्बन्धी अपराध—बेईमानी अथवा धोखे से किसी का धन लेना, घूस लेना अथवा चोरी कर लेना इत्यादि, (७) अधिक कठोर दण्ड देना- ये सात प्रकार के 'महाव्यसन' कहे गये हैं। औपकारिकी=उपकार करने वाली अथवा लाभप्रद। अत्र=इसमें—शिकार में। व्यायामोत्कर्षात्=बहुत अधिक व्यायाम होने के कारण। उत्कर्ष=अत्यधिक। कहने का तात्पर्य यह है; अतः व्यायामोत्कर्षात् का भाव होगा—शारीरिक परिश्रम के कारण। आपत्सु-उपकर्त्ताः=आपत्तियों में उपकार करने अर्थात् लाभ पहुँचाने वाला। दीर्घाध्वलंघनक्षमः=लम्बा मार्ग पार करने में समर्थ। उपर्युक्त दोनों ही विशेषण 'जंघाजव.' के हैं। अध्वन्=मार्ग। अध्वन शब्द है। इसके रूप चलते हैं=अध्वा, अध्वनो, अध्वानः इत्यादि। लंघन=पार करना। क्षमः=समर्थ। जंघाजवः=जंघाओं में वेग (फुर्ती)। कफापचयात्=कफ के विनाश से (कफनाशात्), अपचय=नाश, ह्रास। शिकार के खेलने में किये गये परिश्रम के कारण कफ का नाश हो जाता है। परिणामस्वरूप जठराग्नि तीक्ष्ण बनी रहा करती है; अतः मनुष्य को पूर्ण स्वस्थ कहा जा सकता है। आरोग्यैकमूलम्=स्वस्थता का प्रधानभूत कारण। आशयाग्निदीप्तिः=

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पेट की अग्नि का तीक्ष्ण होना। आशय=पेट, उदर। दीप्ति=जलना, तीक्ष्ण रहना। मेदोपकर्षात्=मेद (चर्बी) के नाश हो जाने से। स्थैर्यकार्कश्यातिलाघवादीनि=(अङ्गों में) दृढ़ता, कठोरता तथा अत्यधिक फुर्ती का आ जाना-इत्यादि, जब मेद (चर्बी) कम हो जाती है तब फुर्ती का आ जाना स्वाभाविक ही है। क्षुत्=भूख। सहत्वम्=सहन करने की क्षमता। सत्वानाम्=प्राणियों का (जीवानाम्, प्राणिनाम्)। अवस्थान्तरेषु=भिन्न-भिन्न दशाओं में। चित्तचेष्टितज्ञानम्=(उनके) मन तथा क्रियाओं का ज्ञान=भाव यह है कि विभिन्न दशाओं में पड़कर पशुओं की मानसिक वृत्ति तथा चेष्टाओं में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं तथा किस-किस अवस्था में वे क्या-क्या चेष्टा किया करते हैं, इसका सम्यक् ज्ञान उपलब्ध हो जाया करता है। गवल=जंगली भैंसा। गवय=नील गाय। सस्यलोपप्रतिक्रिया=अन्न के विनाश से रक्षा करने का उपाय। नील गाय आदि वन्य प्राणी फसल को रौंदकर या खाकर नष्ट कर दिया करते हैं। आखेट=शिकार में इनका वध हो जाया करता है; अतः फसल नष्ट हो जाने से बच जाया करती है। वृक=भेड़िया। स्थलपथशल्यशोधनम्=स्थल में विद्यमान मार्गों में विघ्नों की सफाई (समाप्ति)। शल्य=काँटा। विघ्न=बाधा। अटवी=वन। विविध-कर्मक्षमाणम्=नाना प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त (ठीक) शिकार के निमित्त वन, पर्वतों आदि में घूमना पड़ा करता है। इन भ्रमणों में कुछ ऐसे स्थानों का भी पता लग जाया करता है कि जिसमें लाभप्रद योजनाओं को चलाया जा सकता है अथवा कुछ लाभकारी उद्योग भी चालू किये जा सकते हैं। आटविकवर्गविश्रम्भणम्=वनवासी लोगों के हृदयों में विश्वास की उत्पत्ति हो जाया करती है। आटविकः=वनवासी। वर्ग=समूह। विश्रम्भणम्=विश्वास की उत्पत्ति हो जाना। सन्धुक्षणेन=संवर्द्धन से उमड़ने अथवा बढ़ने से। प्रत्यनीकवित्रासनम्=शत्रु सेना के हृदय में भय की उत्पत्ति करना, तात्पर्य यह है इस प्रकार के राजा के उत्साह को देखकर शत्रुओं की सेना भी हृदय से भयभीत रहा करती है।

(१८) श्रूतेऽपि द्रव्यराशेस्तृणवत्त्यागादनुपमानमाशयौदार्यम्, जयपराजयानवस्थानाद्धर्षविषादयोरविधेयत्वम्, पौरुषैकनिमित्तस्या-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मर्षस्य वृद्धिः। अक्षहस्तभूम्यादिगोचराणामत्यन्तदुरुपलक्ष्याणां कूटकर्मणामुपलक्षणादनन्तबुद्धिनैपुण्यम्, एकविषयोपसंहाराच्चित्तस्यातिचित्रमैकाग्रयम्, अध्यवसायसहचरेषु साहसेष्वतिरतिः, अतिकर्कशपुरुषप्रतिसंसर्गादनन्यधर्षणीयता मानावधारणमपकृपणं च शरीरयापनमिति।

हिन्दी—जुए में भी द्रव्य की राशि का तिनके के सदृश त्याग (खर्च) करने के कारण चित्त में अतुलनीय उदारता आती है। जय तथा पराजय (हार) के अनिश्चित रहने के कारण हर्ष तथा शोक (दुःख) का अभाव रहा करता है। पुरुषार्थ के प्रधानभूत कारण क्रोध की वृद्धि होती है। पाँसा, हाथ तथा (पांसा फेंकने वाली) भूमि पर होने वाले अत्यन्त कठिन (जिनका समझना वस्तुतः अति दुरूह है) कपट (छल) के व्यापारों को जानने से बुद्धि में अत्यधिक निपुणता आती है। अपने मन को एक ही विषय की ओर लगाने से अत्यधिक आश्चर्योत्पादक मानसिक एकाग्रता आती है। अध्यवसाय (परिश्रम, प्रयास) के साथी साहस (अथवा साहसिक कार्यों) में अभिरुचि (प्रेम) उत्पन्न होती है। अति कठोर स्वभाव वाले पुरुषों के संसर्ग में रहने के कारण वह गुण प्राप्त हो जाता है कि जिनसे दूसरा व्यक्ति अपने को दबा न सके। स्वाभिमान की उत्पत्ति होती है तथा कृपणता-रहित जीवन व्यतीत हुआ करता है।

व्याकरण—औदार्य = उदार + ष्यञ्। अनवस्थानम् = नञ् + अव + स्था + ल्युट्। विषाद = वि + षद् + घञ्। विधेयत्वम् = वि + धा + यत्—यहाँ 'अचो यत्' सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ है। पौरुषम् = पुरुष + अण्। उपलक्ष्य = उप + लक्ष् + यत्। उपसंहार = उप + सम् + हृ + घञ्। ऐकाग्रचम् = एकाग्र + ष्यञ्। अध्यवसाय - अधि + अव + षो + घञ्। धर्षणीय = धृष् + अनीयर्।

समास—द्रव्यराशेः = द्रव्यानां राशिः द्रव्यराशिः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। अनुपमानम् = न विद्यते उपमानं यस्य तत् (बहुव्रीहि)। आशयौदार्यम् = उदारस्वभावः औदार्यम्, आशयस्य, औदार्यम् इति (षष्ठी तत्पु०)। जयपराज-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यानवस्थानात् = जयश्च पराजयश्च, जयपराजयौ (द्वन्द्व) तयोः अनवस्थानम् इति जयपराजयावस्थानम् तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष)। **हर्षविषादयोः** = हर्षश्च विषादश्च इति हर्षविषादौ (द्वन्द्व) तयोः। **अविधेयत्वम्** = विधेयस्य भावः विधेयत्वम्, न विधेयत्वम् इति अविधेयत्वम्। **पौरुषैकनिमित्तस्य** = एकं निमित्तम् इति **एकनिमित्तम्**, (कर्मधारय) पौरुषस्य एकनिमित्तमिति पौरुषैकनिमित्तम् तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। **अक्षहस्तभूम्यादिगोचराणाम्** = अक्षाश्च हस्तश्च भूमिश्च इति अक्षहस्तभूमयः (द्वन्द्व), ते आदयः येषां ते (बहुव्रीहि), अक्ष-हस्तभूम्यादय गोचराः येषां ते अक्षहस्तभूम्यादिगोचराः तेषाम् (बहुव्रीहि)। **अत्यन्तदुरुपलक्ष्याणम्** = उपलक्षितुं योग्यानि उपलक्ष्याणि, दुःखेन उपलक्ष्याणि, इति दुरुपलक्ष्याणि, अत्यन्तं दुरुपलक्ष्याणि इति अत्यन्तदुरुपलक्ष्याणि इति अत्यन्तदुरुपलक्ष्याणि तेषाम् (कर्मधारय)। **कूटकर्मणाम्** = कूट (कपट) युक्तानि कर्माणि इति कूटकर्माणि तेषाम् (कर्मधारय)। **एकविषयोपसंहारात्** = एकश्चासौ विषयः इति एकविषयः (द्विगु) तस्मिन् उपसंहारः इति एकविषयोपसंहारः तस्मात् (सप्तमी तत्पुरुषः)। **अतिचित्रम्** = अतिशयितं चित्रमिति अतिचित्रम। **ऐकाग्रयम्** = एकमेव अग्रम् यस्यः सः एकाग्रः (बहुव्रीहि) तस्यभागः ऐकाग्रयम्। **अध्यवसायसहचरेषु** = अध्यवसायः सहचरः येषां तानि अध्यवसाय सहचराणि तेषु (बहुव्रीहि)। **अतिकर्कशपुरुषसंसर्गात्** = अतिकर्कशपुरुषैः सह संसर्गः इति अतिकर्कशपुरुषसंसर्गः तस्मात्। **अनन्यधर्षणीयता** = धर्षयितुं योग्यः धर्षणीयः, अन्यैः धर्षणीयः इति अन्यधर्षणीयः तस्य भावः अन्यधर्षणीयता, न अन्यधर्षणीयता इति अनन्यधर्षणीयता (नञ् तत्पुरुष)। **मानावधारणम्** = मानस्य अवधारणम् इति (षष्ठी तत्पुरुष)। **अकृपणम्** = न कृपणम् इति (नञ् तत्पुरुष)। **शरीरयापनम्** = शरीरस्ययापनिमित्त शरीरयापनम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—इस अवतरण में वह जुए के लाभों को बतला रहा है। **द्रव्यराशेः** = धनसमूह के। **तृणवत्** = तिनके के सदृश। **त्यागात्** = त्याग करने से—अर्थात् व्यय कर देने से। **अनुपमानम्** = उपमा से रहित अर्थात् जिसका कोई उपमान नहीं है—अनुपमेय। **आशयौदार्यम्** = चित्त की उदारता। आशय-चित्त। **जयपराजयानवस्थानात्** = जीत और हार (पराजय) के निश्चित न होने के कारण। **अनवस्थानम्** = अस्थिरता, अनिश्चितता।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषाद=शोक । अविधेयत्वम्=वश में न होना । हर्षविषादयोः अविधेयत्वम् =हर्ष तथा शोक के वश में होना, नहीं हुआ करता है । पौरुषैकनिमित्तस्य= पुरुषार्थ के प्रधानभूत (एकमात्र) कारण होने का । अमर्ष=क्रोध, गुस्सा । जुआरियों में जुआ खेलते समय, हार-जीत होते समय क्रोध का आना स्वाभाविक हुआ करता है । उसके कहने का तात्पर्य यह है कि क्रोध के द्वारा पुरुषार्थ की उत्पत्ति हुआ करती है । अक्षहस्तभूम्यादिगोचराणाम्=पाँसा, हाथ और जुआ खेले जाने वाली भूमि के विषय । अक्ष=पाँसा । हस्त=हाथ । भूमि= जिस स्थल पर जुआ खेला जाया करता है, वह भूमि—स्थान । गोचर= विषय । यह "कूटकर्मणाम्" का विशेषण है । उन कूट (छल से परिपूर्ण) कर्मों का कि जिनका विषय है—पाँसा, हाथ और भूमि अर्थात् वे कार्य, वे कर्म कि जो पाँसा, हाथ और जुए के खेलने के स्थान में निहित रहा करते हैं । जुआ खेलने वाले लोग पाँसे के द्वारा अथवा अपने हाथों की करामात से अथवा पाँसा फेंके जाने वाले स्थान पर कोई ऐसी अदर्शनीय करामात अथवा सफाई इत्यादि कर दिया करते हैं कि जिसे कोई भी साधारण व्यक्ति समझने में सर्वथा असमर्थ ही रहा करता है । पाँसा को इस ढंग से फेंकते हैं कि जिससे इन्हीं का दाव रहे और विजयी हों । ऐसे ही हाथ की भी विचित्र चाल चलते हैं कि उससे विजय ही होती है । इसी भाँति भूमि में भी कुछ ऐसी चालाकियाँ रखा करते हैं कि जिसके आधार पर उनकी अपनी ही जीत और दूसरे की हानि अथवा हार हुआ करती है । अत्यन्तदुरुपलक्ष्याणाम्=जिनको देख सकना अथवा समझना बहुत ही अधिक दुरूह हुआ करता है (ऐसे कूट कर्मों का) । उपलक्षणात्=देखने अथवा निरीक्षण करने से । कूटकर्मणाम्=छल से भरे (परिपूर्ण) कार्यों का । एकविषयोपसंहारात्=प्रधान रूप से एक ही विषय (कार्य) में मन के लगे रहने के कारण । उपसंहार=लगा रहना, मन का संलग्न रहना । तात्पर्य यह है कि जुआरियों का मन पूर्णरूप से एकाग्र होकर जुए के अक्षादिकों की ओर ही निरन्तर संलग्न रहा करता है । अतिचित्रम्=अति अद्भुत, आश्चर्योत्पादक । एकाग्रचम्=एकाग्रता—सब ओर से हटाकर एक में लगा देना । साहसेषु=साहस से युक्त कार्यों में, शौर्यपूर्ण कार्यों में । अरतिः=प्रेम का न होना । अध्यवसायसञ्चरेषु=(ऐसे साहसपूर्ण

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य कि) जिनका सहायक विशेष रूप से 'अध्यवसाय' (उद्योग) ही है। अर्थात् जो केवल प्रयत्न द्वारा ही साध्य हैं। **अभिरतिः** = अभिरुचि, रुचि। **अतिकर्कशपुरुषसंसर्गात्** = अत्यन्त क्रूर स्वभाव वाले व्यक्तियों के घनिष्ठ संसर्ग से। **अनन्यधर्षणीयता** = वह गुण कि जिसके होने से अन्य व्यक्ति अपने को दबा न सकें अर्थात् दूसरों द्वारा न दबाये जा सकने की शक्ति। **मानावधारणम्** = आत्माभिमान (स्वाभिमान) का उत्पन्न होना। जुआरी लोग जीतने पर तो अभिमान किया करते हैं, किन्तु हारने पर भी वे अपने गौरव तथा धन का घमण्ड किया करते हैं। जब जीते हुए लोग हारे हुओं को व्यंग्यपूर्ण बातें कहने लगा करते हैं तब हारे हुए लोग उस समय स्वाभिमान की डींग मारा ही करते हैं। **अकृपणम्** = कंजूसों से रहित। यह "शरीरयापनम्" का विशेषण है। **शरीरयापनम्** = (अपना) जीवन-निर्वाह।

(१९) उत्तमाङ्गनोपभोगेऽप्यर्थधर्मयोः सफलीकरणम्, पुष्कलः पुरुषाभिमानः, भावज्ञानकौशलम्, अलोभक्लिष्टमाचेष्टितम्, अखिलासु कलासु वैचक्षण्यम् अलब्धोपलब्धिब्धानरक्षणरक्षितोपभोगभुक्तानुसंधानरुष्टानुनयादिष्वजस्रमभ्युपायरचनया बुद्धिवाचोः पाटवम्, उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्सुभगवेषतया लोकसम्भावनीयता परं सुहृत्प्रियत्वम्, गरीयसी परिजनव्यपेक्षा, स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्, उत्तद्रिसत्त्वता, दाक्षिण्यानुवर्त्तनम्। अपत्योत्पादनेनोभयलोकश्रेयस्करत्वमिति।

हिन्दी—उत्तम अङ्गनाओं (स्त्रियों) का उपभोग करने से अर्थ (धन) और धर्म (दो पुरुषार्थ) सफल हो जाते हैं। (पुरुषत्व) का अभिमान भी अत्यधिक बढ़ जाता है। किसी के भी (स्त्री अथवा पुरुष) मानसिक भावों को जानने का चातुर्य आ जाता है। लोभ से व्यथित न होने वाला (लोभरहित) व्यवहार (चेष्टाएँ) हुआ करता है। सम्पूर्ण कलाओं में विलक्षणता आती है। अप्राप्त (वस्तु) की प्राप्ति, प्राप्त (वस्तु) की रक्षा, रक्षित का उपभोग, भोगी गयी हुई (वस्तुओं) के बारे में अनुसन्धान की प्रवृत्ति, क्रोधित हुओं को

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसन्न करना इत्यादि बातों में सतत् उपाय करते रहने से बुद्धि तथा वाणी में चतुरता आती है। (अपने) शरीर को सदैव सुन्दर रूप से सजाकर रखने के कारण वेश-सुन्दरता आती है (फिर) वेश-सौन्दर्य से लोक में आदर प्राप्त हुआ करता है, मित्रों के प्रति (हृदय से) महान् स्नेह की उत्पत्ति हुआ करती है। परिजनों (सेवकों-भृत्यों) की अत्यधिक देखभाल, ईषद् हास्य (मुस्कराहट) के साथ (सभी से) बोलना, पराक्रमशीलता की वृद्धि, उदारतापूर्वक व्यवहार करना इत्यादि हुआ करता है। सन्तानों के उत्पन्न करने से इस लोक तथा परलोक, दोनों में कल्याण होता है।

व्याकरण—**अभिमानः**=अभि+मन+घञ्। **भावज्ञानकौशलम्**—भाव =भू+घञ्, ज्ञान—ज्ञा+ल्युट्। **कौशलम्**=कुशल+ष्यञ्। **वैचक्षण्यम्**= विचक्षण+ष्यञ्। **अलब्धः**=नञ्+लभ्+क्त। लब्धि+क्तिन्। **अनुनय**= अनु+नी+अच्। **बुद्धि**=बुध+क्तिन्। **पाटवम्**=पटु+अण्। **संस्कारात्** =सम्+कृ+घञ्। **गरीयसी**=गुरु+ईयसुन्+ङीप्। **दाक्षिण्य**=दक्षिण +ष्यञ्।

समास—**उत्तमाङ्गनोपभोगे**=उत्तमाश्च ता अंगनाः इति उत्तमाङ्गनाः (कर्मधारय) तासां उपभोग उत्तमाङ्गनोपभोगः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। **अर्थधर्मयो**=अर्थश्च धर्मश्च इति अर्थधर्मौ (द्वन्द्व) तयोः। **सफलीकरणम्** — न सफलम् इति असफलम् असफलस्य सफलं करणं इति सफलीकरणम्। **पुरुषाभिमानः**=पुरुषस्य अभिमानः इति (षष्ठी तत्पु०)। **भावज्ञानकौशलम्** =भावानां ज्ञानं इति भावज्ञानम् (षष्ठी तत्पु०) तस्मिन् तत्र वा कौशलम् इति भावज्ञानकौशलम्। **अलोभक्लिष्टम्**=लोभेन क्लिष्टमिति लोभ क्लिष्टम् (तृतीया तत्पुरुष), न लोभक्लिष्टमिति अलोभक्लिष्टम् (नञ् तत्पु०)। **वैचक्षण्यम्**=विचक्षणस्य भावः वैचक्षण्यम्। अलब्धोपलब्धि लब्धानुरक्षण— रक्षितोपभोग—भुक्तानुसन्धान—रुष्टानुनयादिषु=न लब्धम् इति अलब्धम्, अलब्धस्य उपलब्धिः इति अलब्धोपलब्धिः (षष्ठी तत्पुरुष), लब्धस्य अनुरक्षणम् लब्धानुरक्षणम् (षष्ठी तत्पुरुष), रक्षितस्य उपभोगः रक्षितोपभोगः (षष्ठी तत्पुरुष), भुक्तस्य अनुसन्धानम्=भुक्तानुसन्धानम् (षष्ठी तत्पुरुष), रुष्टस्य अनुनयः रुष्टानुनयः (षष्ठी तत्पुरुष), अलब्धोपलब्धिश्च लब्धानुरक्षणञ्च

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्षितोपभोगाश्च भुक्तानुन्धानं च रुष्टानुनयश्च इति अलब्धोपलब्धिलब्धानुरक्षणरक्षितोपभोगभुक्तनुसन्धानरुष्टानुनयादयः (द्वन्द्व), ते आदयः येषां ते अलब्धोपलब्धिलब्धानुरक्षणरक्षितोपभोगभुक्तानुसन्धानरुष्टानुनयादयः (तेषु बहुव्रीहि)। **अभ्युपायतरचनया**—अभ्युपायस्य रचना अभ्युपायरचना तया (षष्ठी तत्पु०) **बुद्धिवाचोः**=बुद्धिश्च वाक् च इति बुद्धिवाचौ तयोः (द्वन्द्व) **पाटवम्** =पटो भावः कर्म वा पाटवम्। **उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्**=शरीरस्य संस्कार इति शरीरसंस्कारः (षष्ठी तत्पुरुष), उत्कृष्टश्चासौ शरीरसंस्कारश्च उत्कृष्टः शरीरसंस्कारः, तस्मात् (कर्मधारय)। **सुभगवेषतया**=सुभगः वेषः इति सुभगवेषः तस्य भावः सुभगवेषतया तया (कर्मधारय)। **लोकसम्भावनीयता**= सम्भावनीयस्य भावः सम्भावनीयता, लोकैः सम्भावनीयता इति लोकसम्भावनीयता (तृतीया तत्पु०) तया। **सुहृत्प्रियत्वम्**=सुहृदां प्रियः इति सुहृत्प्रियः (षष्ठी तत्पु०) तस्य भावः सुहृत्प्रियत्वम्। **परिजनव्यपेक्षा**=परिजनानां व्यपेक्षा परिजनव्यपेक्षा (षष्ठी तत्पु०)। **स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्**=स्मितं पूर्वं यस्मिन् कर्मणि तत् स्मितपूर्वम्, स्मितपूर्वं अभिभाषते उच्छीलः इति स्मितपूर्वाभिभाषी तस्य भावः स्मितपूर्वम्, स्मितपूर्वम् अभिभाषते उच्छीलः इति स्मितपूर्वाभिभाषी तस्य भावः स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्। **उद्रिक्तसत्वता**=उद्रिक्तं सत्वं यस्य सः उद्रिक्तसत्वः (बहुव्रीहि) तस्य भावः उद्रिक्तसत्वता। **दाक्षिण्यानुवर्त्तनम्**— दाक्षिणस्य भावः दाक्षिण्यम्, दाक्षिण्यस्य अनुवर्त्तनम् इति (षष्ठी तत्पु०)। ...न। **अपत्योत्पादनेन**—अपत्यानां उत्पादनम् इति अपत्योत्पादनम् (षष्ठी तत्पु०) तेन। **उभयलोकश्रेयस्करत्वम्**—उभयौ च तौ लोकौ इति उभयलोकौ (कर्मधारय) तयोः श्रेयः करोति इति उभयलोकश्रेयस्करत्वम्।

टिप्पणियाँ—अब वह स्त्रियों से भोग करने के लाभों की चर्चा करता ...आ कह रहा है। **उत्तमाङ्गना**=श्रेष्ठ (स्त्रियों के, **उपभोगे**=भोग ...रने में अथवा रमण करने में। सुन्दर स्त्रियों के साथ भोग इत्यादि करने ...। **अर्थधर्मयोः**=धन और धर्म का। **सफलीकरणम्**=सफल करना अर्थात् ...स्त्रियों के साथ रमण करने से धन का सदुपयोग होने के कारण धन का सफल ...ना सिद्ध हो जाता है और स्त्रियों की कामवासना को शान्त करना भी

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनुष्य का धर्म है; अतः इसमें धर्म का भी सदुपयोग हो जाता है। **पुष्कलः**=अत्यन्त, अत्यधिक। **पुरुषाभिमानः**=पुरुषत्व का गौरव, अभिमान। **भावज्ञान-कौशलम्**=चित्तवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करने का चातुर्य=स्त्रियों तथा पुरुषों के हृद्गत भावों को जान सकने की सामर्थ्य। **अलोभक्लिष्टम्**=लोभ के जारण पीड़ित न होने वाला व्यवहार अर्थात् लोभ-रहित व्यवहार। **आचेष्टितम्**=चेष्टाएँ—व्यवहार। यहाँ चन्द्रपालित के कहने का तात्पर्य यही है कि स्त्रियों के साथ भोगविलास करने वाला मनुष्य कभी भी लोभ के वशीभूत होकर कोई भी कार्य नहीं किया करता है। **रुष्टानुनय**=क्रोधित हुए व्यक्ति को अनुनय विनय द्वारा मना लेना। **अजस्रम्**—निरन्तर। **अभ्युपायरचनया**—(नाना प्रकार के) उपायों के करने का अभ्यास हो जाने से। **अलब्धो पाटवम्**—अर्थात् जो स्त्रियाँ इस समय तक भोगने के निमित्त प्राप्त नहीं हो सकती हैं, उनकी प्राप्ति के निमित्त नाना प्रकार के उपायों का आश्रय लेना पड़ा करता है—इससे बुद्धि तथा वाणी दोनों के ही कौशल में वृद्धि हुआ करती है। इसी भाँति जो स्त्रियाँ अपने चंगुल में आ चुकी हैं उनके भली-भाँति रक्षक का भी उपाय करना पड़ता है। इसी भाँति आप जिन स्त्रियों की रक्षा में संलग्न हैं उनके साथ भोग करने के निमित्त भी नाना प्रकार के उपायों का आश्रय लेना पडा करता है। फिर जिन स्त्रियों के साथ आप भोगादि में तल्लीन हैं उनकी रात-दिन देखभाल भी करनी होती है, ताकि वे कहीं चली न जावें अथवा कोई धूर्त्त व्यक्ति उनको भगाकर न ले जाये। एतदर्थ भी उपाय करने होते हैं। जो स्त्रियाँ यदा-कदा क्रोधित होकर मान दिखलाने लगा करती हैं, उनको भी मनाने हेतु आपको नाना प्रकार के उपाय करने पड़ा करते हैं। इन सभी कार्यों में बुद्धि तथा वाणी का विशेष रूप से उपभोग करना पड़ा करता है, अतएव उनकी पटुता में वृद्धि का होना स्वाभाविक ही है। **बुद्धिवाचोः**=बुद्धि तथा वाणी की। **उत्कृष्टशरीरसंस्कारात्**=शरीर सम्बन्धी उत्कृष्ट सजावट से। **उत्कृष्ट शरीरसंस्कारात् सुभगवेषतया**=उत्तम रीति से शरीर की सजावट करने के कारण वेश सुन्दर दृष्टिगोचर हुआ करता है। कहने का भाव यह है कि अन्य स्त्रियों के साथ रमण करने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए आपको स्वयं को सजाकर रखना पड़ा करता है, ताकि उससे आकृष्ट होकर स्त्रियाँ आपके समीप आवें। **लोकसम्भावनीयता**=(उत्तम वेशभूषा से युक्त होने के कारण) लोगों के द्वारा सम्मान प्राप्त होने के कारण। **सुहृत्प्रियत्वम्**=(अपने) मित्रों का प्रिय बन जाना। **गरीयसी**=महती, बड़ी। **परिजनव्यपेक्षा**=नौकरों (भृत्यों) का सम्मान करना। **व्यपेक्षा**=सम्मान। **स्मितपूर्वाभिभाषित्वम्**=मुस्कराहट के साथ बात करने का वैशिष्टय अथवा गुण। हँस-हँसकर वार्त्तालाप करने का अभ्यास। **उद्रिक्तसत्वता**=उच्च विचार अथवा महान् पुरुषार्थ अथवा पराक्रम। **दाक्षिण्यानुवर्त्तनम्**=उदारतापूर्वक व्यवहार करना। **अपत्योत्पादनेन**=सन्तानों की उत्पत्ति के द्वारा। **उभयलोकश्रेयस्करत्वम्**=इस लोक तथा परलोक दोनों में कल्याण का होना (अथवा हुआ करता है)।

(२०) पानेऽपि नानाविधरोगभङ्गपटीयसामासवानामासेवनात्स्पृहणीयवयोव्यवस्थापनम्, अहकारप्रकर्षादशेषदुःख- तिरस्करणम्, अङ्गरागदीपनादङ्गनोपभोगशक्तिसंधुक्षणन्, अपराधप्रमार्जनान्मनः शल्योन्मार्जनम्, अश्राव्यशंसिभिरनर्गलप्रलापैर्विश्वासोपबृंहणम्, मत्सराननुबन्धादानन्दैकतानता, शब्दादीनामिन्द्रियार्थानां सातत्येनानुभवः संविभागशीलतयासुहृद्वर्गसंवर्गणम्, अनुपमानमङ्गलावण्यम् अनुत्तराणि विलसितानि, भयार्तिहरणाच्च साङ्ग्रामिकत्वमिति।

वाक्पारुष्यं दण्डो दारुणो दूषणानि चार्थनामेव यथावकाशमौपकारिकाणि। नहि मुनिरिव नरपतिरुपशमरतिरभिभवितुमरिकुलमलम्, अवलम्बितुं च लोकतन्त्रम् इति।

हिन्दी--मद्यपान में भी, विविध प्रकार के रोगों को नाश करने की सामर्थ्य से युक्त आसवों के सेवन से मनचाही आयु की रचना होती है, अहङ्कार

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के बढ़ जाने के कारण सम्पूर्ण दुःखों को तिरस्कृत करने की सामर्थ्य आ जाती है, काम-वासनाओं के उमड़ जाने से स्त्रियों से सम्भोग करने की क्षमता बढ़ जाया करती है, (अन्य लोगों के) अपराधों को क्षमा करते रहने के कारण मानसिक कष्टों (पीड़ाओं) का विनाश हो जाता है, न सुनाने योग्य बातों का उद्घाटन करने वाले अनियन्त्रित प्रलापों के कारण लोगों का (अपने में) विश्वास बढ़ जाया करता है। ईर्ष्या (डाह) के (शराब के नशे में) विद्यमान रहने के कारण आनन्द की अनन्यवृत्तिता आती है, शब्द आदि इन्द्रियों के विषयों का निरन्तरता के साथ अनुभव हुआ करता है, समान रूप से हिस्सा बांटने की प्रकृति पड़ जाने के कारण मित्रसमूह का एकत्रित होना हुआ करता है (अर्थात् मित्र लोग इकट्ठे हुआ करते हैं)। अतुलनीय शारीरिक-सौन्दर्य प्राप्त होता है, जिनसे बढ़कर (संसार में) विलास होते ही नहीं, ऐसे विलास (भोगने के निमित्त) उपलब्ध हुआ करते हैं, भय तथा शोक के दूर हो जाने से संग्राम करने का स्वभाव बन जाता है। वाणी की कठोरता (दूसरों को बुरा-भला, अपशब्द कहना इत्यादि, (दूसरों को) भयंकर दण्ड देना, दूसरों को धन-सम्पत्ति इत्यादि को हड़प कर अपने कार्य में लगा लेना, ये सभी गुण अवसर आने पर बड़े ही उपकारी होते हैं (अर्थात् काम आते हैं)। मुनि के सदृश, शान्तिप्रिय राजा न तो अपने शत्रु-कुल को ही दबाने में समर्थ हो सकता है और न लोकतन्त्र का ही सहारा लेने में।

व्याकरण—पटीयसीस् = पटु + ईयसुन्। आसेवनात् = आ + सेव् + ल्युट्। अंगजः = अंग + जन् + ड। प्रमार्जवम् = प्र + मृज् + ल्युट्। श्राव्य = श्रु + णिच् + ण्यत्। अश्राव्यशंसिभिः = अश्राव्य + शंस् + णिनि। उपबृंहणम् = उप + बृंह् + ल्युट्। अनुभवः = अनु + भू + अप्। यहाँ "ऋदोरप्" से 'अप्' प्रत्यय होता है। लावण्यम् = लवण + ष्यञ्। भयम् = भी + अच्—यहाँ "एरच" से 'अच्' प्रत्यय हुआ है। साङ्ग्रामिक = संग्राम + ठक्। पारुष्यम् = परुष + ष्यञ्। औपकारिकाणि उपकार + ठक्।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समास—नानाविधरोगभङ्गपटीयसीम्=नाना विधा येषां ते नानाविधः (बहुव्रीहि), नानाविधाश्च ते रोगाः इति नानाविधरोगाः (कर्मधारय) तेषां भङ्ग इति नानाविधरोगभङ्गः (षष्ठी तत्पु०) यस्मिन् पटियांसः इति नानाविधरोगभङ्गपटीयांस तेषाम् (सप्तमी तत्पु०)। **स्पृहणीयवयः**=स्पृहणीयश्च तद् वयः इति स्पृहणीयवयः (कर्मधारय)। **अहंकारप्रकर्षात्**=अहंकारस्य प्रकर्षः इति अहंकारप्रकर्षः तस्मात् (षष्ठी तत्पु०)। **अशेषदुःखतिरस्करणम्**=न विद्यते शेषो येषु तानि अशेषाणि, अशेषाणि च तानि दुःखानि इति अशेषदुःखानि (कर्मधारय), तेषां तिरस्करणम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अंगजरागदीपनात्**—अङ्गात् जायते इति अङ्गज, अङ्गजश्च रागश्च इति अङ्गजरागौ (द्वन्द्व) तयोः दीपनम् इति अङ्गजरागदीपनम् तस्मात् (षष्ठी तत्पु०), **अङ्गनोपभोगशक्तिसंधुक्षणम्**=अङ्गनानां उपभोगः इति अङ्गनोपभोगः (षष्ठी तत्पु०), तस्य शक्तिः इति अङ्गनोपभोगशक्तिः तस्या सन्धुक्षणम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अपराधप्रमार्जनात्**=अपराधानां प्रमार्जनम् इति अपराधप्रमार्जनम्, तस्मात् (षष्ठी तत्पु०)। **मनःशल्योन्मूलनम्**=मनसः शल्यम् इति मनःशल्यम् (षष्ठी तत्पु०) तस्य उन्मूलनम् इति (षष्ठीतत्पु०)। **अश्राव्यशंसिभिः**=श्रावयितुं योग्यानि इति श्राव्याणि न इति अश्राव्याणि, अश्राव्याणि शंसितुं शीलमेषाम् ते अश्राव्यशंसिनः तैः। **अनर्गलप्रलापैः**=न विद्यन्ती श्राव्याणि अर्गलाः येषु ते अनर्गलाः, (बहुव्रीहि), अनर्गलाश्च ते प्रलापाः इति अनर्गलप्रलापाः, तैः (कर्मधारय)। **विश्वासोपबृंहणम्**=विश्वासस्य उपबृंहणम् इति (षष्ठ तत्पु०)। **मत्सराननुबन्धात्**=न अनुबन्धः अननुबन्धः मत्सरस्य अननुबन्धः, मत्सराननुबन्धः (षष्ठी तत्पु०) तस्मात्। **आनन्दैकतानता**=आनन्दस्य एकतानता इति (षष्ठी तत्पु०)। **इन्द्रियार्थानाम्**=इन्द्रियाणां अर्थाः इन्द्रियार्थाः तेषां (षष्ठी तत्पु०)। **सातत्येन**—सततस्य भावः सातत्यम् तेन। **संविभागशीलतया**=संविभागः शीलः यस्य सः संविभागशीलः (बहुव्रीहि) तस्य भावः संविभागशीलता तया। **सुहृद्वर्गसंवर्गणम्**=सुहृदां वर्गः सुहृद्वर्गः, तस्य संवर्गणम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अनुपमानम्**=न विद्यते उपमानं यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **अङ्गलावण्यम्**=अङ्गेषु अङ्गानां वा लावण्यम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अनुत्तराणि**=न विद्यन्ते उत्तराः (श्रेष्ठ) येषां तानि (बहुव्रीहि)। **भयार्तिहरणात्**=भयं च आर्तिश्च इति भयार्ती (द्वन्द्व) तयो हरणम् इति भयार्तिहरणम्,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तस्मात् (षष्ठी तत्पु०)। साङ्ग्रामिकत्वम्=संग्रामे साधुः इति साङ्ग्रामिकः, तस्य भावः साङ्ग्रामिकत्वम्। वाक्पारुष्यम्=परुषस्य भावः पारुष्यम्, वाचः पारुष्यम् इति (षष्ठी तत्पु०)। यथावकाशम्=अवकाशम् अनतिक्रम्य इति यथावकाशम् (अव्ययीभाव)। औपकारिकाणि=उपकारे साधूनि इति। उपशमरतिः=उपशमे रतिः यस्य सः (बहुव्रीहि)। अरीकुलम्=अरीणां कुलम् (षष्ठी तत्पु०)।

टिप्पणियाँ—पाने=शराब पीने में। नानाविधरोगभंगपटीयसीम्=नाना भाँति के रोगों के नाश करने में समर्थ। आसवानाम्=शराबों का। आसेवनात्=सेवा करने से, पीने से। स्पृहणीयवयोव्यवस्थापनम्=मनचाही उम्र की रचना, इच्छानुसार अपनी वायु की रचना अर्थात् यदि चाहे कि मैं २० वर्ष के युवा पुरुष की भाँति दिखलायी पड़ूँ तो उसी प्रकार की उम्र बना सकता है, उसी प्रकार के शरीर की रचना कर सकता है। यदि चाहे कि ३०-३५ वर्ष का दिखायी दूँ तो वैसा भी कर सकता है। इत्यादि-इत्यादि। अहंकारप्रकर्षात्=अभिमान के आधिक्य के कारण। अशेषदुःखातिरस्करणम्=सम्पूर्ण दुःखों की (ओर से) उपेक्षा—अर्थात् सब प्रकार के दुःखों को कुछ भी न समझना। अनजरागदीपनात्=काम-वासनाओं के उमड़ने के कारण। अंगजः=कामदेव। राग=वासना-इच्छा। दीपन=वृद्धि होना, उमड़ना। अंगनोपभोगशक्तिसन्धुक्षणम्=स्त्रियों के साथ सम्भोग करने की क्षमता (सामर्थ्य)। सन्धुक्षण=वृद्धि होना, उत्तेजित होना। अपराधप्रमार्जनात्=दोषों अथवा शत्रुओं के अपराधों को क्षमा करने से। प्रमार्जन=क्षमा करना। मनःशल्योन्मूलनम्=मानसिक व्यथा का विनाश। शल्य=काँटा (व्यथा)। अश्राव्यशंसिभिः=न सुनाये जाने योग्य बातों को भी (प्रलापों के बीच) कह देने वाले। शराब के नशे में मस्त होकर शराबी व्यक्ति नाना प्रकार के प्रलाप किया करते हैं। इन्हीं के बीच वे उन बातों को भी कह दिया करते हैं कि जिनका कहना उन्हें अभीष्ट नहीं हुआ करता है। अनर्गलप्रलापैः=रुकावट से रहित (किसी प्रकार के प्रतिबन्ध से रहित) प्रलापों के द्वारा—अर्थात् अनियन्त्रित निरर्थक वचनों द्वारा। विश्वासोपबृंहणम्=विश्वास की वृद्धि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शराब के नशे में चूर होकर यह अकथनीय बातों को भी कह जाया करता है; अतः सुनने वालों के हृदय में यह विश्वास उत्पन्न हो जाता है कि अमुक व्यक्ति कितने सरल स्वभाव का तथा निष्कपट है, वह अपनी गोपनीय बातों को भी कहे दे रहा है । **मत्सरानुबन्धनात्**=ईर्ष्या धारण न करने अथवा न होने देने से । **आनन्दैकतानता**=आनन्द को अनन्यवृत्तिता अथवा आनन्द में लीन हो जाना । नशे में चूर होने पर शराबी व्यक्ति अपने को ही भूल जाया करता है । ऐसी स्थिति में वह रागद्वेष से पृथक् रहते हुए आनन्दमात्र की ही अनुभूति किया करता है । **इन्द्रियार्थानाम्**=इन्द्रियों के विषयों का । ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं :--कान, नेत्र जीभ, नाक तथा त्वचा । इन पाँच के क्रमशः विषय हैं :— शब्द, रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श । **सातत्येन**=सतत, निरन्तर । **अनुभवः**= उपभोग । **संविभागशीलतया**=बराबर-बराबर हिस्सा बाँट देने वाला स्वभाव बन जाने के कारण । **सुहृद्वर्गसंवर्गणम्**=मित्र समूह का एकत्रित होना । **संवर्गण**=संयोग, एकत्रीकरण । शराब का पान करते समय शराबी लोगों के समीप जितने भी व्यक्ति बैठे रहा करते हैं, उन सभी को हिस्सा बाँटकर तब शराबी लोग स्वयं शराब पिया करते हैं; अतः ऐसे समय पर मित्रमंडली के समस्त सदस्य स्वयं ही उपस्थित हो जाया करते हैं । **अनुपमानम्**=अतुलनीय, अद्वितीय । **अङ्गलावण्यम्**=शारीरिक सौन्दर्य । **अङ्ग**=शरीर अथवा शरीर सम्बन्धी अथवा शरीर के अङ्गों का । **अनुत्तराणि**=जिससे श्रेष्ठ न हो । **विलसितानि**=मनोविनोद, आमोद-प्रमोद । **भयार्तिहरणात्**=भय तथा शोक के दूर हट जाने से । **आर्ति**=दुःख, शोक । शराब के नशे में जब मनुष्य के होश-हवाश ही ठीक नहीं रहा करते हैं तो उनको भय तथा दुःख आदि की अनुभूति नहीं हुआ करती है । **साङ्ग्रामिकत्वम्**=लड़ाई लड़ने (संग्राम) का स्वभाव । उपर्युक्त स्थिति में मनुष्य में लड़ाई लड़ने के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाया करती है । **वाक्पारुष्यम्**=वाणी की कठोरता अर्थात् अपशब्द कहने, डाँट—फटकार तथा लाल आँखें कर तथा त्यौरियाँ चढ़ाकर बोलने की आदत । यह व्यक्ति शिष्टाचार तथा लोकमर्यादा की पूर्ण उपेक्षा किया करता है तथा दूसरों को बुरा-भला करने और गालियाँ आदि देने में भी तनिक भी संकोच नहीं किया करता है । **अर्थानां दूषणानि**=धन का गलत-सलत उपयोग

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

—दूसरों की भूमि, सम्पत्ति आदि को गलत तरीके से हड़प लेना तथा अप उपयोग में ले आना। शराबी व्यक्ति की ऐसी आदत भी हो जाया करती है इस प्रकार के कार्यों के करने पर भी उसे लज्जा नहीं आती। **यथावकाशम्**= अवसर पड़ने पर। **औपकारिकाणि**=उपकारक। **उपशमरतिः**=शान्ति प्रिय **अभिभवितुम्**=दबाने के लिए।

(२१) असावपि गुरुदेशमिवात्यादरेण तस्य मतमन्वर्त्तत तच्छीलानुसारिण्यश्च प्रकृतयो विशृङ्खलमसेवन्त व्यसनानि। सर्व समानदोषतया न कस्यचिच्छिद्रान्वेषणायायतिष्ट। समानभर्तृ प्रकृ यस्तन्त्राध्यक्षाः स्वानि कर्मफलान्यभक्षयन्। ततः क्रमादायद्वारा व्यशीर्यन्त। व्ययमुखानि विटविधेयतयातयाविभोविभोरहरहर्व्यवर्ध सामन्तपौरजानपदमुख्याश्च समानशीलतयोपारूढविश्रम्भेण रा सजानयः पानगोष्ठीष्वभ्यन्तरीकृताः स्वं स्वमाचारमत्यचारिषुः।

हिन्दी—उस (राजा अनन्तवर्मा) ने भी उस (चन्द्रपालित) के उपदेश गुरु के उपदेश के सदृश आदर के साथ स्वीकार कर लिया (अनुसरण किया) तदनन्तर राजा के ('यथा राजा तथा प्रजा' के सिद्धान्तानुसार) आचरण अनुसरण करने वाली प्रजा नियन्त्रण रहित होकर (अपनी इच्छानुसार) व्यस का सेवन करने लगी। सभी व्यक्ति एक समान दोषों से युक्त हो जाने के का एक-दूसरे के छिद्रान्वेषण के निमित्त प्रयत्न नहीं करते थे। (इस भांति) प्र तथा राजा एक जैसे हो गये। विभिन्न विभागों के अधिकारी (जिनका स्वभ राजा के सदृश ही हो चुका था) भी अपने-अपने कार्यों का फल भोगने (अर्थात् प्रजा से धन इत्यादि लूट-खसोट अथवा रिश्वत के रूप में लेकर अप कार्य-सिद्धि करने लगे)।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकरण—**तच्छीलानुसारिण्य**=तच्छील+अनु+सृ+णिनि+ङीप् । **अयतिष्ट**=यत्+लङ् (प्र० पु०, एकवचन) । **अनभ्यन्तरीकृताः**=अन्+अभ्यन्तर+च्वि+कृ+क्त । **पौराः**=पुर+अण् ।

समास—**गुरूपदेशम्**=गुरोः उपदेशः, गुरूपदेशः, तम् (षष्ठी तत्पुरुष) । **तच्छीलानुसारिण्यः**=तस्य शीलमिति तच्छीलम् (षष्ठी तत्पुरुष), तच्छीलमनुसरन्ति इति तच्छीलानुसारिण्यः । **विशृङ्खलम्**=विगता शृंखला यस्मिन् तत् विशृखलम् । **स्वसमानदोषतया**=स्वस्य समानाः, स्वसमानाः स्वसमानाः दोषाः येषु ते स्वसमानदोषताः तेषां भावः स्वसमानदोषता तया । **छिद्रान्वेषणाय**=छिद्राणां अन्वेषणाय इति (षष्ठी तत्पु०) । **समानभर्तृप्रकृतयः**=भर्ता च प्रकृतयश्च इति भर्तृप्रकृतयः (द्वन्द्व) समानाः भर्तृप्रकृतयः येषां ते समानभर्तृप्रकृतयः (बहुव्रीहि) । **विटविधेयतया**=विटानां विधेयः विटविधेयः (षष्ठी तत्पु०), तस्य भावः विटविधेयतया तया । **व्ययमुखानि**=व्ययस्य मुखानि इति (ष० तत्पु०) । **अहरहः**=अहनि अहनि इति अहरहः । **पौराः**=पुरे भावः इति पौराः । **जानपदाः**=जनपदेभवाः जानपदाः, (जनपद+अण्) । **सामन्तपौरजानपदमुख्याः**=सामन्ताश्च पौराश्च जानपदाश्च इति सामन्तपौरजानपदाः (द्वन्द्व) तेषु मुख्याः इति (सप्तमी तत्पुरुष) । **समानशीलतया**=समानं शीलं येषां ते समानशीलाः (बहुव्रीहि) तेषां भावः समानशीलता तया । **उपारूढविश्रम्भेण**=उपारूढः विश्रम्भः यस्य स. उपारूढविश्रम्भः (बहुव्रीहि) तेन । **सजानयः**=विद्यमानाः जायाः येषां ते सजानयः (बहुव्रीहि) । **पानगोष्ठीषु**=पानस्य गोष्ठ्यः इति पानगोष्ठ्यः (षष्ठी तत्पु०), तासु । **अभ्यन्तरीकृताः**=न अभ्यन्तरः अनभ्यन्तराः, अनभ्यन्तराः कृता इति अभ्यन्तरीकृताः ।

टिप्पणियाँ—**असावपि**=(असौ+अपि) वह (राजा अनन्तवर्मा) भी । **गुरूपदेशम्**=गुरु के उपदेश को । जैसे शिष्य गुरु के उपदेश का पालन किया करता है । **तस्य**=उसके (चन्द्रपालित के) । **मतम्**=मत या विचार को । **अन्ववर्तत्**=पालन (किया) करता था । **तच्छीलानुसारिण्यः**=राजा के आचरण का अनुसरण करने वाली (प्रजा) । **विशृङ्खलम्**=नियन्त्रण से रहित, बिना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किसी रोक-टोक के। व्यसनानि=व्यसन, बुरे आचरण। इनकी गणना निम्न-लिखित रूपों में की गयी है :— "मृगयाक्षदिवास्वप्नाः परिवादः स्त्रियोमदः। तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशकोगुणः॥ पैशुन्यं साहसं द्रोहः ईर्ष्याऽसूयाऽर्थ-दूषणम्। वाग्दण्डजं च पौरुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः॥"

शिकार खेलना, जुआ खेलना, दिन में शयन करना, निन्दा करना, स्त्रियों के साथ भोग करना, अभिमान करना, नृत्य-गान, बजाना, निरर्थक भ्रमण करना, ये दस प्रकार के कामज व्यसन कहे गये हैं। इसके अतिरिक्त इधर की उधर लगाना (चुगली करना), अनुचित साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, अर्थदूषण जबरदस्ती किसी के धन अथवा जमीन आदि पर अधिकार कर लेना तथा अपने कार्य में लाना, कर्कश वाणी, कठोर दण्ड देना ये आठ क्रोधज व्यसन कहे गये हैं। स्वसमानदोषतया=अपने ही सदृश दोषपूर्ण होने के कारण। छिद्रान्वेषणाय=छिद्र अर्थात् दोषों को खोजने के निमित्त। प्रयतिष्ट=प्रयत्न करता था। समान-भर्तृप्रकृतयः तन्त्राध्यक्षाः=वे तन्त्रों के अध्यक्ष (विभिन्न भागों के अधिकारी कि जिनका राजा तथा प्रजा दोनों ही एक समान थीं अर्थात् जिनका राजा भी बुरे आचरण करने में संलग्न था तथा प्रजाएँ भी। भर्त्ता=स्वामी, राजा। प्रकृतयः=प्रजाएँ। तन्त्राध्यक्षाः=भिन्न-भिन्न विभागों के अधिकारी। स्वानि स्वानि=अपने-अपने। कर्मफलानि=कर्मों के फलों को अर्थात् वसूल की गयी हुई आय को। क्रमात्=क्रम से अर्थात् धीरे-धीरे। आय द्वाराणि=आमदनी के साधन। व्यशीर्यन्त=नष्ट हो गये। विट=धूर्त्त, लम्पट इत्यादि। विधेय=आज्ञापालक। विटविधेयतया=धूर्त्तों अथवा लम्पटों की आज्ञा पालन करने से। वे लोग जो कुछ कहा करते थे राजा वही-वही किया करता था। विभोः=राजा के, स्वामी के। व्ययमुखानि=खर्चे के मार्ग, साधन। अहरहः=प्रतिदिन। सामन्तपौरजानपदमुख्याः=सामन्तों, नगरवासियों तथा देशवासियों में जो मुख्य लोग थे। सामन्त=जागीरदार लोग। पौरः=नगरनिवासी। जानपदाः=देशव्यापी। समानशीलतया=समान आचरण होने के कारण। उपारूढविश्रम्भेन=उत्पन्न हो गया था (हृदय में) विश्वास जिनके। उपारूढः=उत्पन्न। विश्रम्भः=विश्वास। यह 'राजा' का विशेषण है। जिस राजा के हृदय में विश्वास उत्पन्न हो गया था, ऐसे राजा द्वारा। सजानयः=

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सपत्नीक। **पानगोष्ठीषु**=शराब पीने की गोष्ठियों में। **अभ्यन्तरीकृता**=प्रविष्ट करा लिये गये हुए अथवा सम्मिलित कर लिये गये हुए। **आचारम्**=आचार अथवा मर्यादा को। **अत्यचारिषु**=अतिक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया।

(२२) तदङ्गनासु चानेकापदेशपूर्वमपाचरन्नरेन्द्रः। तदन्तःपुरेषु चामी भिन्नवृत्तेषु मन्दत्रासो बहुसुखैरवर्त्तन्त। सर्वश्च कुलाङ्गनाजनः पांसुलजनभङ्गिभाषणरतो भग्नचारित्र्ययन्त्रणस्तृणायापि न गणयित्वा भर्तृ धातृगणमन्त्रणाश्रृणोत्। तन्मूलाश्च कलहाः सामर्षाणामुदभवन्। अहन्यन्त दुर्बलाबलिभिः अपहृतानि धनवतां धनानि तस्करादिभिः। अपहृतपरिभूतयः प्रहताश्च पातकपथाः। हतबान्धवा हृतवित्ता वधबन्धातुराश्च मुक्तकण्ठमाक्रोशन्नश्रुकण्ठ्यः प्रजाः।

हिन्दी—अनेक बहाने बनाकर राजा ने उनकी स्त्रियों के साथ (भी) दुराचार किया, तथा वे (सामन्त, नागरिक आदि) भी भयरहित होकर उसकी (राजा की) रानियों के साथ सुखपूर्वक व्यवहार करने लगे। विषयी पुरुषों की भावपूर्ण कथन शैली में निरत (आकर्षित) अन्तःपुर की सभी स्त्रियाँ चरित्र-सम्बन्धी बन्धन का उल्लंघन कर अपने स्वामी को तिनके के समान भी न गिनकर जार (आचरणभ्रष्ट धूर्तजन) पुरुषों की ही विचारधाराओं का श्रवण करने लगीं। असहनशील लोगों में (परस्पर) ऐसे झगड़े उत्पन्न हो गये (कि जिनका मूल कारण चरित्रहीनता थी)। निर्बल, बलि पुरुषों द्वारा मार दिये गये। धनी व्यक्तियों का धन चोर-डाकुओं द्वारा हर लिया गया। जिन पापों के करने से तिरस्कारित (अपमानित) होने का भय न रह गया था ऐसे पाप कुचल दिये गये। जिन प्रजाजनों (स्त्री-पुरुष दोनो) के भाई-बन्धु मार डाले गये थे तथा जिनका धन भी अपहरण कर लिया गया था, जो वध (कत्ल) तथा बन्धन (कारावास) से व्याकुल (परेशान) हो चुके थे, वे अश्रुधारा से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूरिपूर्ण गलों से युक्त होकर, मुक्तकण्ठ से (गला फाड़-फाड़कर) रोने लगे।

व्याकरण—भिन्न = भिद् + क्त । भग्न = भञ्ज् + क्त । चारित्र्यम् = चरित्र + ष्यञ् ।

समास—अनेकादेशपूर्वम् = न एके इति अनेके, च अनेके च ते अपदेशाः अनेकापदेशाः (कर्मधारय) अनेकापदेशाः पूर्वं यस्मिन् तत् । तदन्तःपुरेषुः = तस्य अन्तःपुराणि इति (षष्ठी तत्पु०) तदन्त पुराणि तेषु । भिन्नवृत्तेषु = भिन्नं वृत्तं येषां तानि भिन्नवृत्तानि तेषु (बहुव्रीहि) । मन्दत्रासाः = मन्दः त्रासः येषां ते मन्दत्रासाः (बहुव्रीहि) । पांसुलजनभङ्गिभाषणरतः = पासुलाश्च ते जना इति पांसुलजनाः (कर्मधारय) तेषां भङ्गिभाषणम् इति पांसुलजनभङ्गिभाषणम् (षष्ठी त०पु०) तस्मिन् रतः इति । भग्नचारित्र्ययन्त्रणः = चरित्रम् एव चारित्र्यम्, भग्नं चारित्र्यन्त्रणं यस्य सः (बहुव्रीहि) । कुलाङ्गना = कुले जाता इति कुलजाताः, कुलजाताः अङ्गना कुलाङ्गनाः (कर्मधारय—यहाँ पर मध्यमपद लुप्त हो गया है) । तन्मूलाः = तदेव मूल येषां ते (बहुव्रीहि) । सामर्षाणाम् = विद्यमानः अमर्षः येषां ते सामर्षा. तेषां (बहुव्रीहि) । अपहृतपरिभूतय. = अपहृताः परिभूतः येषां ते (बहुव्रीहि) । पातकपथाः = पातकानां पन्थानः पाथकपथाः (षष्ठी तत्पु०) । यहाँ 'ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे' सूत्र में वर्णित 'पथिन्' के पश्चात् समास के अन्त में "अप्" प्रत्यय हो जाता है । वधबन्धातुराः = वधश्च बन्धश्च, वधबन्धौ (द्वन्द्व) ताभ्याम् आतुरा (तृतीया तत्पु०) । मुक्तकण्ठम् = मुक्तः कण्ठः यस्मिन् तत् । अश्रुकण्ठ्यः = अश्रूणि कण्ठे यासां ताः (बहुव्रीहि) ।

टिप्पणियाँ—अनेकादेशपूर्वम् = नाना प्रकार के बहानों से । अपाचरत् = बुरे आचरण किया करता था । तदन्तःपुरेषु = राजा की रानियों में । भिन्नवृत्तेषु = पतित आचरण वाली । मन्दत्रासाः — भयरहित । पांसुलजनभङ्गिभाषणरतः = विषयी पुरुषों की ऊटपटाँग बातों को मानने में संलग्न । पांसुल = विषयी (कामुक) व्यक्ति । भग्नचारित्र्ययन्त्रणः = नष्ट कर दिया गया था, अच्छा आचरणरूपी बन्धन जिसका, तात्पर्य यह है जिसने अच्छा आचरण करना छोड़ दिया था ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यन्त्रण = बन्धन। कुलाङ्गनाजनः = कुलवधुएँ—कुल की बहुओं का समूह। तृणाय अपि न गणयित्वा = तिनके के समान अर्थात् लेशमात्र भी आदर न करके। धातृगणमन्त्राणि = जारों की सम्मति। धातृगण = जार। मन्त्रणा = राय, सम्मति। तन्मूलाः = वह भ्रष्टाचरण ही जिनकी जड़ था। सामर्षाणाम् = असहनशील व्यक्तियों का। अपहृतपरिभूतयः = जिनके अन्दर हारने अथवा डाँटने अथवा फटकारने तथा अपमानित करने का भय शेष नहीं रह गया था। पातकपथाः = पापों के मार्ग। प्रहताः = मारे गये अर्थात् कुचले गये। वधबन्धातुराः = कत्ल तथा कारागार में जाने से पीड़ित। मुक्तकण्ठम् = खुले हुए कण्ठ से—गला फाड़कर। आक्रोशन् = विलाप (रुदन) करती थीं। अश्रुकण्ठ्यः = जिनके गलों में अश्रुधारा भरी थी। जिनके गले में अश्रुधाराएँ थीं अर्थात् जिनके कण्ठ रुँधे हुए थे।

---

(२३) दण्डश्चायथाप्रणीतो भयक्रोधावजनयत्। कृशकुटुम्बेषु लोभः पदमधत्त। विमानिताश्च तेजिस्वनोऽवमानेनादह्यन्त। तेषु-तेषु चाकृत्येषु प्रासरन्परोपजायाः। तदा च मृगयुवेषमृगबाहुल्यवर्णनेनाद्रि-द्रोणीरनपसारमार्गाः शुष्कतृणवंशगुल्माः प्रवेश्य द्वारतोऽग्निविसर्गैः, व्याघ्रादिवधे प्रोत्साह्य तन्मुखपातनैः, इष्टकूपतृष्णोत्पादनेनातिदूर-हारितानां प्राणहारिभिः क्षुत्पिपासाभिर्वर्धनैः, तृणगुल्मगूढच्छन्नतट-प्रदरपातहेतुभिर्विषममार्गप्रधावनैः विषमुखीभिः क्षुरिकाभिश्चरणकण्ट-कोद्धरणैः विष्वग्विसर्वविच्छिन्नानुयातृतयैकाकीकृतानां यथेष्टघातनैः, मृगदेहापराद्धैर्नामिषुमोक्षणैः सपणबन्धमधिरुह्याद्रिशृङ्गाणि दुरधिरोहा-न्यनन्यलक्ष्यैः प्रभ्रंशनैः, आटविकच्छद्मना विपिनेषु विरलसैनिकानां प्रतिरोधनैः, अक्षद्यूतपक्षियुद्धयात्रोत्सवादिसंकुलेषु बलवदनुप्रवेशनैः इतरेषां हिंसोत्पादनैः, गूढोत्पादितव्यलीकेभ्योऽप्रियाणि प्रकाशं लब्ध्वा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
साक्षिषु तद्विख्याप्याकीर्तिगुप्तिहेतुभिः पराक्रमैः परकलत्रेषु सुहृत्त्वेनाभियोज्य जारान्भर्तृनुभयसपहृत्योतत्साहसोपन्यासैः योग्यनारीहारितानां संकेतेषु प्रागुपनिलीय पश्चादभिद्रुत्याकीर्तनीयैः प्रमापणैः, उपप्रलोभ्य बिलप्रवेशेषु निधानखननेषु मन्त्रसाधनेषु च विघ्नव्याजसाध्यैर्व्यापादनैः, मत्तगजाधिरोहणाय प्रेर्यप्रत्यपादायनिवर्तनैः, व्यालहस्तिनं कोपयित्वा लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलेष्वपक्रमणैः, दायाद्यर्थं विवदमानानुपांशु हत्वा प्रतिपक्षेष्वयशः पातनैः सामन्तपुरजनपदेष्वयथावृत्तानप्रकाशमभिप्रहृत्य तद्वैरिनामघोषणैः, योग्याङ्गनाभिरहर्निशमभिरमय्य राजयक्ष्मोत्पादनैः, वस्त्राभरणमाल्याङ्गरागादिषु रसविधानकौशलैः, चिकित्सामुखेनामयोपबृंहणैरन्यैश्चाभ्युपायैरश्मकेन्द्रप्रयुक्तास्तीक्ष्णरसदादयः प्रक्षपितप्रवीरमनन्तवर्मकटकं जर्जरमकुर्वन् ।

हिन्दी—अनुचित ढंग से दिये गये दण्ड ने (प्रजाओं के जनों में) भय तथा क्रोध को उत्पन्न कर दिया। (अनुचित रूप से दण्ड दिये जाने लगे—जो अदण्डनीय था उसे दण्ड का न दिया जाना प्रारम्भ हो गया, इसी कारण प्रजाजन भयभीत हो गये और घबराने लगे)। धनहीन परिवारों में लोभ ने पैर जमा लिया अर्थात् लोग लोभी हो गये। अपमानित व्यक्ति अपमान के कारण जलने लगे (जिन आत्माभिमानी व्यक्तियों का अपमान हुआ था वे व्यक्ति अपमान के दुःख से दुःखी होने लगे)। शत्रुओं के षड्यन्त्र अनेक प्रकार के दुष्कृत्यों के रूप में फैल गये (अर्थात् नाना प्रकार के अनाचारों से धीरे-धीरे शत्रुओं द्वारा प्रचारित भेदनीति सफल हो गयी)। बहेलियों के वेश को धारण कर जंगली प्राणियों से व्याप्त वनों में, हरिणों के आधिक्य सम्बन्धी वर्णन से (अमुक वन में मृगों की संख्या अधिक है ऐसा लोभ दिखाकर), सूखी घास, बाँस तथा झाड़ियों से परिपूर्ण और निस्सरण (निकालने) के मार्ग से रहित पर्वत की घाटियों में प्रवेश करा के (अनन्तवर्मा की सेना को नष्ट कर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया), (पुनः) घाटी के मुख (दरवाजे) पर आग लगाकर, व्याघ्र इत्यादि जन्तुओं के वध के निमित्त उत्साहित कर उनके (और इस भाँति उन लोगों को व्याघ्रादि के) मुखों में डालकर अच्छे कुएँ की प्राप्ति की तृष्णा उत्पन्न कर, अत्यन्त दूर (स्थान पर ले जाकर, प्राण ले लेने वाली भूख को बढ़ाकर, घास तथा (ऊँची-ऊँची) झाड़ियों से ढके हुए निम्नोन्नत स्थानों से (नीचे) गिरा देने के लिए विषम (ऊँचे-ऊँचे) मार्गों पर दौड़कर, विष से बुझे हुए अग्रभाग वाले चाकुओं से पैरों में लगे हुए काँटों को निकाल कर, चारों ओर चले जाने के कारण उनके अनुगामियों को छिन्न-भिन्न कर, 'ये वाण मृगों (वन्य-जन्तुओं) के शरीर पर मारे गये थे, किन्तु वे उनके लग न सके इस बहाने से उन्हीं को (उन) वाणों से मारकर, बाजी लगाकर सरलतापूर्वक न बढ़ सकने योग्य पर्वत शिखरों पर चढ़कर तथा अन्य किसी के द्वारा न दिखायी पड़ते हुए (एकान्त में अपने को छिपाये हुए—जिससे कि कोई अन्य देख न ले) उन्हें (पर्वत के उच्च शिखर से) गिराकर, वनों में वनवासियों के वेश को धारण कर, कुछ थोड़े से सैनिकों को रोक कर तथा अन्धों को जुआ खेलने में, पक्षियों की लड़ाई में, यात्रा सम्बन्धी उत्सवों की भीड़-भाड़ में बलपूर्वक (जबरदस्ती) घुसाकर और उनकी हिंसा करा कर छिपे हुए रूप में (उनको) विपत्ति में डलवाकर, उनसे स्पष्ट रूप से विरुद्ध प्रतिक्रिया पाकर तथा उस विरोध को साक्षी लोगों के समक्ष घोषित कर (अर्थात् साक्षी लोगों को उनकी बुराइयाँ और दोष दिखलाकर), पुनः (अपने) अपयश को दूर करने वाले पराक्रमों के द्वारा अन्य पुरुषों की स्त्रियों के साथ मित्र के रूप में सम्बन्ध स्थापित कराके, दुराचारियों अथवा पतियों को अथवा दोनों को मारकर, उन दुराचारियों के दुष्टतापूर्ण कार्यों को (प्रजा के समक्ष) रखकर, संकेत दिये गये स्थलों में पहले से ही छुपकर तत्पश्चात् आक्रमण कर, विश्वासघाती औरतों द्वारा लाये हुए व्यक्तियों को अकथनीय उपायों द्वारा कत्ल कराकर, कोषालयों (खजानों) को खोदने तथा मन्त्रसिद्धि के निमित्त (उन्हें उखाड़कर) गुफाओं में प्रविष्ट कराके, पुनः विघ्न के बहाने से (उनका) वध कर, मदमस्त हाथियों के ऊपर चढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान कर (उस हाथी की ओर से होने वाले) खतरों से बचने के उपायों की ओर से मुख मोड़कर, दुष्ट हाथियों को क्रोधयुक्त कर प्रमुख तथा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
उद्दिष्ट लोगों की गोष्ठी में उस हाथी को हांककर, एकान्त में अपने पूर्व पुरुषों से प्राप्त भूमि, जागीर तथा धन इत्यादि के लिए (मुकदमे) लड़ने वालों का वध कर, विरोधी पक्ष के लोगों के ऊपर (नाना प्रकार के) दोषों को लगाकर, सामन्तों के नगरों तथा जनपदों में अनुरूप से व्यवहार करने वालों को गुप्तरूप से मारकर (तथा) उनके शत्रुओं का नाम लगाकर, सुन्दरियों के साथ रात-दिन रमण कराके राजयक्ष्मा रोग पैदा कराकर, वस्त्र, आभूषण, माला, उबटन आदि में विष मिला देने की चतुरता से, चिकित्सा करने के बहाने (उल्टा) रोग को और बढ़ाकर तथा अनेक दूसरे-दूसरे उपायों के द्वारा (राजा) अश्मकेन्द्र द्वारा नियोजित तीव्र-विष देने वालों ने अनन्तवर्मा के वीर सैनिकों को नष्ट-भ्रष्ट कर (उसकी) सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

व्याकरण— प्रणीतः = प्र + नी + क्त । विमानिताः = वि + मन् + णिच् + क्त । तेजस्विनः = तेजस् + विनि । प्रवेश्य = प्र + विश् + णिच् + ल्यप् । द्वारतः = द्वार + तसिल् । विसर्गं = वि + सृज् + घञ् । प्रोत्साह्य = प्र + उत् + सह + णिच् + ल्यप् । हारितानाम् = हृ + णिच् + क्त—हारित । प्राणहरिभिः = प्राण + हृ + णिनि । अधिरुह्य = अधि + रुह् + ल्यप् । लक्ष्यैः = लक्ष् + यत् । प्रभ्रंशनैः = प्र + भ्रंश + ल्युट् (यु—अन्) । आटविकाः = अटवी + ठक् । अनुप्रवेशनैः = अनु + प्र + विश् + णिच् + ल्युट् । अभियोज्य = अभि + युज् + णिच् + ण्यत् । उपनिलीयः = उप + नि + ली + ल्यप् । विवदमानम् = वि + वद् + शानच् । अभिप्रहृत्य = अभि + प्र + हृ + ल्यप् । अभिरमय्य = अभि + रम् + णिच् + ल्यप् ।

समास आदि—कृशकुटुम्बेषु = कृशानि च तानि कुटुम्बानि इति कृशकुटुम्बानि तेषु (कर्मधारय) । परोपजापाः = परेषां (शत्रुओं के) उपजापः इति (तत्पुरुष) । मृगबाहुल्यवर्णनेन = मृगानां बाहुल्यम् इति मृगबाहुल्यम्, तस्य वर्णनम् तेन (षष्ठी तत्पुरुष) । अद्रिद्रोणीः = अद्रीणां द्रोण्यः अद्रिद्रोण्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुष) । अनपसारमार्गाः = अपसारस्य मार्गा इति अपसारमार्गा, अविद्यमानाः अपसारमार्गा यासु ताः (बहुव्रीहि) । शुष्कतृणवंशगुल्माः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

=शुष्कानि च तानि तृणानि इति शुष्कतृणानि (कर्मधारय), वंशानां गुल्मानि वंशगुल्मानि (षष्ठी तत्पुरुष), शुष्कतृणानि वंशगुल्मानि च यासु ताः (बहुव्रीहि)। **व्याघ्रादिवधे**=व्याघ्रः आदि येषां ते व्याघ्रादयः (बहुव्रीहि) तेषां वधः व्याघ्रादिवधः तस्मिन् (ष० तत्पु०)। **तन्मुखपातनैः**=तेषां मुखानि तन्मुखानि (षष्ठी तत्पु०) तेषु पातनानि इति तन्मुखपातनानि तैः (सप्तमी तत्पु०)। **इष्टकूपतृष्णोत्पादनेन**=इष्ट कूपः इति (कर्मधारय) इष्टकूपः, तस्य तृष्णा इति इष्टकूपतृष्णा, तस्या उत्पादनं इति इष्टकूपतृष्णोत्पादनम् (षष्ठी तत्पु०) तेन। **अतिदूरहारितानाम्**=अतिशयितं दूरं इति अतिदूरम्, अतिदूरं हारिताः इति अतिदूर हारिताः तेषाम्। **क्षुत्पिपासाभिवर्धनैः**=क्षुत च पिपासा च इति क्षुत्पिपासं (द्वन्द्व); तयो अभिवर्धनानि इति क्षुत्पिपासाभिवर्धनानि (षष्ठी तत्पु०) तैः। **गुल्मतृणगूढच्छन्नतटप्रदरपातहेतुभिः**=गुल्माश्च तृणानि च इति गुल्मतृणानि (द्वन्द्व) तटाश्च प्रदराश्च इति तटप्रदराः (द्वन्द्व), गुल्मतृणैः गूढ यथास्यात्तथा छन्ना इति गुल्मतृणगूढच्छन्नाः, गुल्मतृणगूढच्छन्नाश्च ते तट—प्रदराश्च इति गुल्मतृणगूढच्छन्नतटप्रदराः (कर्मधारय), तेषु पाता इति गुल्मतृणगूढच्छन्नतटप्रदरपाताः, ते हेतवः येषां तानि तैः (बहुव्रीहि)। **विषममार्गप्रधावनैः**=विषमाश्च ते मार्गाश्च इति विषममार्गाः (कर्मधारय) तेषु प्रधावनानि तैः। **विषमुखीभिः**=विषं मुखेषु यासां ता विषमुख्यः (बहुव्रीहि) ताभिः। **चरणकण्टकोद्धरणैः**=चरणेषु लग्नानि कंटकानि इति चरणकंटकानि तेषां उद्धरणानि इति तैः (षष्ठी तत्पु०)। **विश्वग्विसरविछन्नानुयातृतया**=विष्वक् (सभी दिशाओं में) विसरः (भ्रमण करना) इति विश्वग्विसरः, तेन विच्छिन्नाः अनुयातारः येषां ते विश्वग्विसरविच्छिन्नानुयातारः (बहुव्रीहि), तेषां भावः तया। **मृगदेहापराद्धैः**=मृगाणां देहाः मृगदेहाः (षष्ठी तत्पु०) तेषु अपराद्धानिः तैः (षष्ठी तत्पु०)। **सपणबन्धम्**=विद्यमानः पणबन्धः यस्मिन् तत्। **अनन्यलक्ष्यैः**=लक्षितुं योग्यानि इति लक्ष्याणि, अन्यैः लक्ष्याणि, इति अन्यलक्ष्याणि (तृतीया तत्पु०), न अन्यलक्ष्याणि, अनन्यलक्ष्याणि तैः। **आटविकछद्मना**=अटव्यां चरन्तीति आटविकाः, आटविकानां छद्म् इति आटविछदन (षष्ठी तत्पु०) तेन। **विरलसैनिकानाम्**=विरलाश्च ते सैनिकाः (विरलसैनिकाः) (कर्मधारय) तेषाम्। **गूढोत्पादितव्यलीकेभ्यः**=गूढ उत्पादितानि व्यलीकानि येषां ते गूढोत्पा-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दितव्यलीकाः तेभ्यः (बहुव्रीहि) । **अकीर्तिगुप्तिहेतुभिः**=अकीर्तेः गुप्तिः इति अकीर्तिगुप्तिः, अकीर्तिगुप्तेः इति अकीर्तिगुप्ति हेतवः तैः (षष्ठी तत्पु) । **परकलत्रेषु**=परेषां कलत्राणि इति परकलत्राणि तेषु (षष्ठी तत्पु०) । **तत्साहसोपन्यासैः**=तेषां साहसानि इति तत्साहसानि, तेषां उपन्यासाः इति तत्साहसोपन्यासाः (षष्ठी तत्पु०) तैः । **योगनारीहारितानाम्**=योगनारीभिः (विश्वासघातिनि स्त्रियों के द्वारा) हारिताः इति योगनारीहारिताः (तृतीया तत्पुरुष) तेषाम् । **अकीर्तनीयैः**=कीर्तयितुं योग्यानि इति कीर्तनीयानि, न कीर्तनीयानि इति अकीर्तनीयानि तैः । **बिलप्रवेशेषु**=बिलेषु प्रवेशाः, बिलप्रवेषाः तेषु (सप्तमी तत्पु०) । **निधानखननेषु**=निधानानां खननानि, विधानखननानि तेषु (षष्ठी तत्पु०) । **विघ्नव्याजसाध्यैः**=विघ्नानां विघ्नव्याजाः इति विघ्नव्याजाः (षष्ठी तत्पु०) तैः साध्यानि इति विघ्नव्याजसाध्यानि तैः (तृतीया तत्पु०) । **प्रत्यपायनिवर्त्तनैः**=प्रत्यपायानां निवर्त्तनानि इति प्रत्यपायनिवर्त्तनानि तैः (षष्ठी तत्पु०) । **व्यालहस्तिनम्**=व्यालश्चासौ हस्ती च इति व्यालहस्ती तम् (कर्मधारय) । **लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलेषु**=न लक्ष्याः इति अलक्ष्याः, अलक्ष्या लक्ष्याः कृताः इति लक्ष्यीकृता, लक्ष्यीकृताश्च ते मुख्याः इति लक्ष्यीकृतमुख्या (कर्मधारय) तेषां मण्डलानि इति लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलानि (षष्ठी तत्पु०) तेषु । **दायाद्यर्थे**=दायः आदिः येषां ते दायादयः (बहुव्रीहि), तेषां अर्थः इति दायाद्यर्थः तस्मिन् । **प्रतिपक्षेषु**=प्रतिकूलाः पक्षः इति प्रतिपक्षाः तेषु । **अयशपातनैः**=अयशसः पातनानि (षष्ठी तत्पु०) । इति अयशपातनानि तैः । **सामन्तपुरजनपदेषु**=पुराणि च जनपदाश्च इति पुरजनपदाः (द्वन्द्व), सामन्तानां पुरजनपदाः सामन्तपुरजनपदा तेषु (षष्ठी तत्पु०) । **अयथावृत्तान्**=यथा वृत्तं येषां ते यथावृत्ताः (बहुव्रीहि) न यथावृत्ताः इति अयथावृत्ताः तान् । **तद्वैरिनामघोषणैः**=तेषां वैरिणः इति तद्वैरिणः (षष्ठी तत्पु०), तेषां नामानि इति तद्वैरिनामानि (षष्ठी० तत्पु०), तेषां घोषणानि तैः (षष्ठी तत्पु०) । **योग्याङ्गनाभिः**=योगाश्च ता अङ्गनाः इति योग्याङ्गनाः ताभिः (कर्मधारय) । **अहर्निशम्**=अहनि च निशि च अहर्निशम् । **वस्त्राभरणमाल्यांगरागादिषु**=वस्त्राणि च आभरणानि च माल्यानि च अंगरागाश्च इति वस्त्राभरणमाल्याङ्गरागाः (द्वन्द्व), ते आदयः येषां ते वस्त्राभरणमाल्याङ्गरागादयः तेषु (बहुव्रीहि) । **रसविधानकौशलैः**=रसस्य विधानं इति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रसविधानम् (षष्ठी तत्पु०), तस्मिन् कौशलानि इति रसविधानकौशलानि तैः (सप्तमी तत्पु०)। **चिकित्सामुखेन**=चिकित्सायाः मुखम् इति चिकित्सामुखम् तेन (षष्ठी तत्पु०) । **आमयोपबृंहणैः**=आमयानां (रोगों के) उपबृंहणानि तैः (षष्ठी तत्पु०)। **तीक्ष्णरसादयः**=तीक्ष्णाश्च ते रसाश्च इति **तीक्ष्णरसाः** (कर्मधारय), तान् ददति इति तीक्ष्णरसदाः ते आदयः येषां ते (बहुव्रीहि) । **प्रक्षपितवीरम्**=प्रक्षपिताः (नाश कर दिये गये हैं) वीराः यस्य तत् (बहुव्रीहि)। **अनन्तवर्मकटकम्**=अनन्तवर्मणः कटकम् इति (षष्ठी तत्पु०)।

टिप्पणियाँ—अयथाप्रणीतः=उचित रीति से न दिया गया हुआ (दण्ड)। **कृशकुटुम्बेषु**=दरिद्र (गरीबी) परिवारों में। **विमानिताः**=अपमानित, अनादृत। **मानेन**=स्वाभिमान से। **अदह्यन्त**=जलने लगे। **तेषु तेषु**=उन-उन में अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार के। **अकृत्येषु**=न करने योग्य कार्यों में—दुराचरण अथवा कुकर्मों में। **प्रसरन्**=फैल गये। **परोपजापाः**=शत्रुओं द्वारा किये गये हुए षड्यन्त्र। **उपजाप**=षड्यन्त्र। **मृगबाहुल्यवर्णनेन**=वन्य जन्तुओं के आधिक्य वर्णन से— अर्थात् अमुक स्थान अथवा घाटी में अनेक वन्य जन्तु पाये जाते हैं। **अद्रिद्रोणी**=पहाड़ी घाटियाँ। द्रोणी-घाटी। **अनपसारमार्गाः**=निकलने के मार्ग से रहित। **अपसार**=निष्क्रमण—निकलना। यह 'अद्रिद्रोण' का विशेषण है। **शुष्कतृणवंशगुल्माः**=जिनके अन्दर सूखी हुई घास तथा बाँसों के ढेर मौजूद थे। **प्रवेश्य**=प्रविष्ट कराके—भेजकर। **मृगबाहुल्यवर्णनेनाद्रिद्रोणी अनपसारमार्गाः शुष्कतृणवंशगुल्माः प्रवेश्य**="अमुक नामक घाटी के अन्दर अनेक वन्य जन्तु रहते हैं।" इस भाँति वर्णन करके राजा (अनन्तवर्मा) के सैनिकों के मनों में लालच उत्पन्न किया करते थे। ऐसा प्रलोभन दिखलाकर सैनिकों को पर्वतों, घाटियों के अन्दर घुसा देते थे। ये घाटियाँ इस भाँति की थीं कि जिनके अन्दर से बाहर निकलना सम्भव न था—(कोई दूसरा द्वार भी न रहा होगा)। इसके अतिरिक्त वे घाटियाँ सूखी हुई घासों, बांस के वृक्षों, घनी झाड़ियों आदि से परिपूर्ण थीं। **द्वारतः**=(घाटी के) द्वार पर। **अग्निविसर्गैः**=आग लगा-लगाकर। **प्रोत्साह्य**=उत्साह (जोश) पैदा करके। **व्याघ्रादिवधे**=व्याघ्र आदि के मारने में अर्थात् व्याघ्र आदि का शिकार करने

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के निमित्त। तन्मुखपातनैः=उनके (व्याघ्रादिकों के) मुख में फेंककर। इष्टकूपतृष्णोत्पादनेन=अभीष्ट कुएँ के जल को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न करके। 'उस स्थान पर चलो, वहाँ एक बहुत ही अच्छा कुआँ है, उसका जल भी अत्यन्त स्वादिष्ट तथा पीने योग्य है' इस प्रकार का प्रलोभन सैनिकों के अन्दर उत्पन्न करके। आतिदूरहारितानाम्=अधिक दूर तक ले जाये गये हुए (सैनिकों को)। प्राणहारिभिः=प्राण ले लेने वाले। क्षुत्=भूख। अभिवर्धनैः=बढ़ने से। अश्मकेन्द्र का पुत्र चन्द्रपालित राजा अनन्तवर्मा के सैनिकों से कहा करता था कि तुम लोग 'अमुक स्थान पर चलो, वहाँ तुमको तुम्हारे मनचाहे जल से युक्त कुआँ मिलेगा। वहाँ पानी पीकर भली-भाँति अपनी प्यास बुझा लेना।' इस भाँति मनचाहे जल से युक्त कुएँ का लोभ दिखाकर उन सैनिकों को ऐसे दूर स्थान पर ले जाता था कि जहाँ कुआँ आदि तो होता न था, दूर तक चलने के कारण उनको इतनी तीव्र प्यास तथा भूख लग जाती थी कि जिसके कारण उनके प्राण-पखेरू ही उड़ने लग जाया करते थे। गुल्मतृणगूढच्छन्नतटप्रदरपातहेतुभिः विषममार्गप्रधावनैः=झाड़ियों, सूखी घास आदि से पहाड़ों के ढाल तथा पहाड़ी दरारें ढकी रहा करती थीं। चन्द्रपालित ऐसे ही ऊँचे-नीचे स्थानों पर सैनिकों को दौड़ने के लिए प्रेरित किया करता था। जब वे सैनिक उन मार्गों पर दौड़ा करते थे, तो वे उन्हीं ढालों तथा दरारों में गिर पड़ा करते थे और मर जाया करते थे। तट=पहाड़ों का ढाल। प्रदर=दरार, दराज, फटे हुए भाग। विषममार्गं - ऊँचा-नीचा रास्ता प्रधावन=तेज दौड़ना। विषमुखीभिः = जिनके अगले भागों (नोंकों) पर जहर लगा रहता था ऐसी छुरिकाओं से। क्षुरिकाभिः=छुरियों से। विषमुखीभिः क्षुरिकाभिः चरण कण्टकोद्धरणैः=विष से बुझी हुई छुरियों से सैनिकों के पैरों में लगे हुए काँटों को निकालता था कि जिससे जहर किसी भाँति शरीर के अन्दर पहुँचकर उन सैनिकों को मार दे। विष्वग्विसरविच्छिन्नानुयातृतया एकाकीकृतानां यथेष्टघातनैः=राजा के अनुयायियों को वह चारों ओर जाने के लिए उत्साहित किया करता था। वे लोग चारों ओर चले जाते थे। परिणाम यह होता था कि चारों ओर घूमते-घूमते वे सब एक-दूसरे से अलग हो जाया करते थे और अकेले पड़ जाते थे। तब अपनी इच्छानुसार वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन सबका वध करवा दिया करता था। विष्वक्=चारों ओर, इधर-उधर। विसर=जाना, गमन करना। विछिन्न=पृथक्-पृथक्, तितर-बितर हुए। अनुयायी=सेवक आदि। एकाकीकृत=अकेले सहायक-रहित। मृगदेहापराद्धैः =हिरणों के शरीर से लक्ष्य भ्रष्ट होकर। अपराद्ध=लक्ष्य भ्रष्ट। नाम= यह 'अलीक' (झूठ) अर्थ में प्रयुक्त है—अर्थात् झूठ-मूठ। इषुमोक्षणैः=वाणों के छोड़ने से। चन्द्रपालित के गुप्तचर वन के प्राणियों (हिरण आदिकों) के शरीरों पर वाणों के छोड़ने का बहाना करते थे। ये वाण वस्तुतः जाकर लगा करते थे राजा के सैनिकों को। गुप्तचर यह घोषणा किया करते थे कि उन लोगों ने वस्तुतः ये वाण अन्य जन्तुओं के ऊपर ही छोड़े थे, किन्तु निशानों के चूक जाने से वे भूलवश सैनिकों के लग गये। इस भाँति उसने अनेक सैनिकों को मरवा डाला। सपणबन्धन्=शर्तबाजी लगाकर। पणबन्ध=बाजी, शर्त, होड़। अधिरुह्य=चढ़कर। दुरधिरोहाणि=बड़े कष्ट के साथ चढ़ने योग्य। "जो सैनिक सर्वप्रथम अमुक पहाड़ की चोटी पर चढ़ जायेगा उसको सौ रुपया पारितोषिक प्रदान किया जायेगा" इत्यादि प्रकार की घोषणाओं द्वारा वह सैनिकों को भयंकर पर्वतों की चोटियों पर चढ़ा दिया करता था। जब ये ऊपर चढ़ जाते थे तो ये लोग उन्हें ऊपर से ही छिपकर नीचे की ओर ढकेल दिया करते थे। इस भाँति वे सैनिक मर जाते थे। अनन्यलक्ष्यैः=जिसे अन्य लोग देख न सकें ऐसे। प्रभ्रंशनैः=ढकेल देने से। आटविकछद्मना=वनवासियों का वेश पहनकर। विरलसैनिकानाम्=छिन्न-भिन्न हो गये हुए। प्रतिरोधैः=रुकावटों से। संकुल=व्याप्त, समूह, भीड़। बलवत्=जबरन्। चन्द्रपालित के आदमी वनवासियों का वेश धारण कर अकेले पड़ गये हुए सैनिकों को एकान्त स्थान में रोक लेते थे, पुनः उन्हें मार डालते थे। अक्षद्यूत-पक्षियुद्धयात्रोत्सवादिसंकुलेषु बलवत् अनुप्रवेशनैः इतरेषां हिंसोत्पादनैः=जुए के खेलों, पक्षियों के (तीतर इत्यादि के) युद्धों तथा मेलों इत्यादिकों में सदैव बहुत अधिक भीड़-भाड़ हो जाया करती है। ऐसे स्थानों पर वह सर्वत्र सैनिकों को भेज दिया करता था और फिर उनको मरवा दिया करता था। अनुप्रवेशनैः=घुस जाने के लिए उत्साहित करके। इतरेषाम्=अन्य लोगों का। गूढोत्पादितव्यलीकेभ्यः=छिपे हुए रूप में जिन लोगों की हानि किया

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करते थे उन लोगों से। प्रकाशम्=स्पष्ट रूप से अथवा सबके सामने। साक्षिषु=देखने वाले लोगों के समक्ष। अप्रियाणि=अप्रिय, हानि, बुराई। तद्विख्याप्य=उस (हानि अथवा बुराई) को घोषित कर (घोषणा करके—बतला करके)। अकीर्तिगुप्तिहेतुभिः=अपयश को छुपाने के कारण से। तात्पर्य यह है कि उसके आदमी अनेक लोगों पर छिपे हुए रूप में दुःखों, आपत्तियों आदि को ढहा देते थे। जब वे लोग कष्टों से पीड़ित होकर उन दुष्टों के विरुद्ध प्रत्यक्ष रूप से कोई अप्रिय कार्य किया करते थे तो उसके आदमी उन अप्रिय कार्यों को साक्षियों को दिखाते थे। तत्पश्चात् वे अपना पराक्रम दिखलाते थे अर्थात् उन लोगों की हिंसा कर दिया करते थे और कहा करते थे कि हम अपने अपयश को दूर करने के निमित्त ऐसा हिंसापूर्ण कार्य कर रहे हैं। सुहृत्त्वेन=मित्रता के रूप से। अभियोज्य=मिलन अथवा परिचय कराके अथवा सम्बन्ध कराकर। दूसरों की स्त्रियों के साथ राजा के सैनिकों का सम्बन्ध करा देते थे और यह कहा करते थे कि ये स्त्रियाँ हमारी मित्र हैं, तुम अपनी इच्छानुसार इनके साथ रमण करो। जारान्=व्यभिचारियों को, धूर्त्तों को, बदमाशों को। तत्साहसोपन्यासैः=उन जार लोगों के साहस भरे कार्यों को जनता के समक्ष उपस्थित कर स्पष्ट रूप से यह घोषणा किया करते थे कि देखो, ये बदमाश दूसरों की स्त्रियों के साथ रमण करते हैं। योगनारीहारितानाम्=विश्वासघातिनी स्त्रियों द्वारा अपनी ओर आकर्षित कर लिये गये हुए (सैनिकों के)। प्रमापणैः=वध से। योगनारी=विश्वासघातिनी स्त्रियाँ। ये लोग विश्वासघातिनी स्त्रियों को नियुक्तकर यह कह देते थे कि तुम लोग राजा के सैनिकों को फुसलाकर तथा काम-वासना-तृप्ति का लालच दिलाकर निर्दिष्ट स्थान पर ले चलो। हम लोग उस स्थान पर छिपे हुए रूप में पहले से ही स्थित रहेंगे। सैनिकों के वहाँ आ जाने पर उनका वध कर डालेंगे। इस भाँति अनेक सैनिकों के वध कराकर। संकेतेषु=संकेत किये गये हुए स्थानों में। प्राक्=पहले से ही। उपनिलीय=छिपकर। अभिद्रुत्य=आक्रमण कर। अकीर्तनीयैः=निन्दनीय। बिलप्रवेशेषु=गुफाओं में जाने में। बिलेषु=गुफाओं के अन्दर। विधानखननेषु=पृथ्वी को खोदकर गुप्त खजानों की

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खोज में चन्द्रपालित के आदमी यह कहकर राजा के सैनिकों को गुफाओं के अन्दर घुसा देते थे। अमुक गुफा के अन्दर बहुत सम्पत्ति है अथवा अमुक गुफा में सोने-चाँदी आदि की बड़ी-बड़ी खानें हैं। यदि इस गुफा में प्रवेश कर खुदाई की जाये तो सोना, जवाहरात आदि अवश्य प्राप्त होंगे। इस प्रकार के प्रलोभनों को दिलाकर उन सैनिकों को गुफाओं के अन्दर प्रविष्ट करा देते थे। मन्त्रसाधनेषु=जप आदि के द्वारा मन्त्रों की सिद्धि करने के निमित्त। "यदि अमुक गुफा के अन्दर प्रवेश कर जाप किया जाये तो मन्त्र सिद्ध अतिशीघ्र ही हो जावेगी" ऐसा कहकर राजकर्मचारियों और सैनिकों को गुफा में घुसा देते थे और उनको बहाना बनाकर मरवा डालते थे। विघ्नव्याजसाध्यैः=विघ्नों के बहाने से सिद्ध किये जाने वाले। प्राचीनकाल में भारत के लोगों की इस प्रकार की धारणाएँ थीं कि खजाने की रक्षा बड़े-बड़े भयंकर सर्पादिकों द्वारा की जाया करती है। यदि कोई व्यक्ति उस खजाने को खोदने के लिए जाता है तो वे उस पर आक्रमण कर उसे मार डाला करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि चन्द्रपालित के आदमी जनता में यह घोषित कर देते थे कि राजा (अनन्तवर्मा) के कर्मचारी अथवा सैनिक आदि खजाना खोदने के लिए अमुक गुफा में घुसे थे। वहाँ सर्पादि ने उन्हें काट लिया; अतः उनकी मृत्यु हो गयी। इसी भाँति मन्त्रसिद्धि के लिए उनको गुफा में प्रविष्ट करके मार डाला करते थे। प्रत्यपायोनिवर्तनैः=खतरे को दूर कर देने वाले उपायों से मुख मोड़कर। प्रत्यपाय=संकट, खतरा। निवर्त्तन=मुख मोड़ लेना। ये कर्मचारियों अथवा सैनिकों को ऐसी प्रेरणा प्रदान किया करते थे कि जिसके वशीभूत होकर वे लोग मदमस्त हाथियों के ऊपर चढ़ जाया करते थे। फिर वे हाथी उन सैनिकों को मार डालते थे। उस समय ये धूर्त्त लोग हाथियों से बचने का उपाय यदि चाहते तो कर सकते थे, किन्तु वे तो इसके विपरीत उस ओर से अपना मुख ही मोड़ लिया करते थे। व्यालहस्तिनम्=दुष्ट (बिगड़े हुए) हाथी को व्यालदुष्ट हाथी 'व्यालो-दुष्ट गजः प्रोक्तः' इति हलायुधः। कोपयित्वा= क्रोधित कर। लक्ष्यीकृतमुख्यमण्डलेषु=लक्ष्य बना लिये गये मुख्य-मुख्य व्यक्तियों, समूहों पर अर्थात् जिन लोगों को मतवाले हाथियों द्वारा मरवा देने का लक्ष्य बना लिया जाता था उनके समूहों पर। अपक्रमणैः हाथियों को हाँककर।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रपालित के व्यक्ति दुष्ट हाथियों को गुस्सा दिलाकर उनको और बिगाड़ देते थे। फिर पहले से ही लक्ष्य बना लिये गये लोगों के झुण्डों के ऊपर उन हाथियों को दौड़ा दिया जाया करता था। इस भांति दुष्ट हाथियों द्वारा अनेकों का वध करा दिया गया था। दायाद्यर्थे=पैतृक सम्पत्ति में (अपना-अपना) हिस्सा ले लेने के लिए। विवदमानान्=झगड़ा करने वाले लोगों को। उपांशु= एकान्त में। प्रतिपक्षेषु=शत्रु पक्ष के लोगों के ऊपर। अयशपातनैः=अपयश (अकीर्ति) के स्थापन से। जो लोग पैतृक सम्पत्ति के बारे में विवाद किया करते थे उनको छिपे रूप में एकान्त में मरवा देता था और विपक्षी लोगों के मत्थे उसका दोष मढ़ दिया जाया करता था। सामन्त=जागीरदार। सामन्त-पुरजनपदेषु=जागीरदारों के नगरों तथा स्थानों में। अयथावृत्तान्=आचरण-विहीन लोगों का। अप्रकाशम्=गुप्त (छिपे हुए) रूप में। अभिप्रहृत्य= हनन करके, मारकर। तद्वैरिनामघोषणैः=उनके शत्रुओं के नामों को बतला-बतला कर। योग्याङ्गनाभिः=सुन्दर स्त्रियों के साथ। अभिरमय्य=सम्भोग कराके। राजयक्ष्मोत्पादनैः=क्षय रोग पैदा करके। सुन्दर स्त्रियों के साथ अत्यधिक भोगविलास करने के लिए प्रेरित किया जाता था। परिणामस्वरूप वे अत्यधिक निर्बल हो जाते थे तथा क्षीण होने के कारण वे क्षय रोग के शिकार बन जाते थे और शीघ्र ही मृत्यु के ग्रास हो जाते थे। अङ्गराग=शरीर के अङ्गों पर अथवा शरीर पर मलने का लेप। यह चन्दन, कपूर तथा कस्तूरी आदि को जल के साथ पीसकर तैयार किया जाता था। रसविधान-कौशलैः=जहर मिलाने के चातुर्य से। रस=विष। चिकित्सामुखेन=चिकित्सा करने के बहाने से। आमयोपबृंहणैः=रोगों के बढ़ा देने से। आमय=रोग। उपबृंहण=बढ़ाना। अश्मकेन्द्रप्रयुक्ताः=अश्मक देश के राजा वसन्तभानु के द्वारा नियुक्त किये गये हुए। तीक्ष्णरसदायः=तीक्ष्ण (भयंकर) विष देने वाले। प्रक्षपितवीरम्=जिस (सेना) के सभी वीर नष्ट कर दिये गये थे ऐसे (राजा अनन्तवर्मा की सेना)। प्रक्षपित=नाश कर दिये गये। कटकम्=सेना। जर्जरम्=छिन्न-भिन्न तितर-बितर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२४) अथ वसन्तभानुर्भानुवर्माणं नाम वानवास्यं प्रोत्साह्यानन्तवर्मणा व्यग्राहयत् । तत्परामृष्टराष्ट्रपर्यन्तश्चानन्तवर्मा तमभियोक्तुं बलसमुत्थानमकरोत् । सर्वसामन्तेभ्यश्चाश्मकेन्द्रः प्रागुपेत्यास्य प्रियतरोऽभूत । अपरेऽपि सामन्ताः समगंसत । गत्वा चाभ्यर्णे नर्मदारोधसि न्यविशन् । तस्मिंश्चावसरे महासामन्तस्य कुन्तलपतेरवन्तिदेवस्यात्मनाटकीयां क्ष्मातलोर्वशी नाम चन्द्रपालितादिभिरतिप्रशस्तनृत्यकौशलामाहूयानन्तवर्मा नृत्यमद्राक्षीत् । अतिरक्तश्च भुक्तवानिमां मधुमत्ताम् ।

हिन्दी—तदनन्तर वसन्तभानु ने भानुवर्मा नामक भीलों के अधिपति को उभारकर अनन्तवर्मा से लड़ा दिया । भानुवर्मा द्वारा अपने राष्ट्र का कुछ भाग दबोच लिये जाने पर अनन्तवर्मा उस पर आक्रमण करने के लिए सेना एकत्रित करने लगा । अश्मकाधिपति वसन्तभानु सभी जागीरदारों (सामन्तों) से पहले ही आकर उस (अनन्तवर्मा) का प्रीति पात्र (मित्र) बन गया । अन्य सामन्तगण भी उसकी सहायता के लिए आ गये । उन लोगों ने पास में आकर नर्मदा नदी के किनारे अपनी छावनियाँ (पड़ाव) डाल दीं । उस अवसर पर महासामन्त-कुन्तलदेशाधिपति अवन्तिदेव की अपनी नर्त्तकी (वेश्या) को, जिसे पृथ्वी तल की उर्वशी कहा जाता था तथा जिसके नृत्य-कौशल की प्रशसा चन्द्रपालित द्वारा अनेक बार की जा चुकी थी, बुलवाकर अनन्तवर्मा ने (उसका) नृत्य देखा । अत्यन्त आसक्त होकर (अनन्तवर्मा ने) उस शराब के नशे में मस्त वेश्या के साथ सम्भोग भी किया ।

व्याकरण—व्यग्राहयत्=वि+ग्रह्+णिच्+तिप् (लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप) । अभियोक्तुम्=अभि+युज्+तुमुन् । उपेत्य=उप+आ+इण्+ल्यप् । समगंसत=लुङ् लकार के प्रथम पुरुष के बहुवचन का रूप । भुक्तवान्=भुज्=क्तवतु ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समास—आदि—वानवास्याम्=वनवास्याः अधिपतिः वानवास्यः तम्। **तत्परामृष्टराष्ट्रपर्यन्तः**=तेन (भानुवर्मा के द्वारा) परामृष्टः राष्ट्रस्य (अनन्त-वर्मा के राज्य का) पर्यन्तः (प्रान्तभाग) यस्य सः (बहुव्रीहि)। **नर्मदारोधसि**= नर्मदायाः रोधः (किनारा) इति नर्मदारोधः तस्मिन् (षष्ठी तत्पु०)। **आत्मनाटकीयाम्**=आत्मनः नाटकीया इति आत्मनाटकीया ताम् (षष्ठी तत्पु०)। **क्ष्मातलोर्वशीम्**=क्ष्मायाः तलम् इति क्ष्मातलम्, तस्य उर्वशी इति (षष्ठी तत्पु०)। **अतिप्रशस्तनृत्यकौशलाम्**=अतिप्रशस्तं नृत्यस्य कौशलं यस्याः सा अतिप्रशस्त-नृत्यकौशला, ताम् (बहुव्रीहि)। **मधुमत्ताम्**=मधुना (शराब के पीने से) मत्ता इति मधुमत्ता ताम् (तृतीया तत्पुरुष)।

टिप्पणियाँ—वानवास्यः=वनप्रदेश का राजा। वनप्रदेश नामक दक्षिण भारत में एक प्रदेश था। उसके राजा का नाम भानुवर्मा था। **व्यग्राहयत्**= झगड़ा (लड़ाई—विग्रह) करा दिया। **तत्परामृष्टराष्ट्रपर्यन्तः**=उस भानुवर्मा द्वारा जिस अनन्तवर्मा के राज्य का प्रान्तभाग (अपने राज्य के समीप का भाग) ले लिया गया था अथवा दबोच लिया गया था अथवा (उस पर) अधिकार कर लिया गया था। **परामृष्ट**=दबाया गया हुआ—अपने अधिकार में कर लिया गया हुआ। **पर्यन्त**=प्रान्तभाग, सीमा पर का भाग। **अभियोक्तुम्**= आक्रमण करने के लिए, सामना करने के निमित्त। **बलसमुत्थानम्**=सेना का एकत्रित करना। समुत्थान-एकत्रिकरण। **प्राक्**=पहले ही। **समगंसत**= मिलकर एक हो गये। **अभ्यर्णे**=पास में। **नर्मदारोधसि**=नर्मदा नदी के किनारे। **न्यविशन्**=पड़ाव डाल दिया। **आत्मनाटकीयाम्**=स्वनर्त्तकीम्, अपनी वेश्या को। **क्ष्मातलोर्वशीम्**=पृथ्वी-तल पर (साक्षात्) उर्वशी के सदृश। **अतिप्रशस्तनृत्यकौशलाम्**=प्रशंसित हो चुका था नृत्य का कौशल (चातुर्य) जिसका। **अतिरिक्त**=(उसके सौन्दर्य पर) अत्यन्त आसक्त होकर। **भुक्तवान्** =संभोग (भोगविलास) किया। **मधुमत्ताम्**=शराब पीने के कारण नशे में ही मस्त।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२५) अश्मकेन्द्रस्तु कुन्तलपतिमेकान्ते समभ्यधात—"प्रमत्त एष राजा कलत्राणि नः परामृशति। कियत्यवज्ञा सोढव्या। मम शतमस्ति हस्तिनाम्, पञ्चशतानि च ते। तदावां संभूय मुरलेशं वीरसेनमृचीकेशमेकवीरं कोङ्कणपतिं कुमारगुप्तं नासिक्यनाथं च नागपालमुपजपावः। ते चावश्यमस्याविनयमसहमाना अस्मन्मतेनैवोपावर्त्तेरन्। अयं च वानवास्यः प्रियं मे मित्रम्। अमुनैन दुर्विनीतमग्रतो व्यतिषक्तं पृष्ठतः प्रहरेम। कोशवाहनं च विभज्य गृह्णीमः" इति हृष्टेन चामुनाभ्युपेते विंशतिं वरांशुकानाम् पञ्चविंशतिं काञ्चनकुंकुमकम्बलानां प्राभृतीकृत्याप्तमुखेन तैः सामन्तैः संमन्त्र्य तानपि स्वमतावस्थापयत्। उत्तरेद्युस्तेषां सामन्तानां वानवास्यास्य च अनन्तवर्मा नयद्वषादामिषत्वमगमत्। वसन्तभानुश्च तत्कोशवाहनमवशीर्णमात्माधिष्ठितमेव कृत्वा "यथान्यासं यथाबलं च विभज्य गृह्णीत। युष्मदनुज्ञया येन केनचिदंशेनाहं तुष्यामि" इति शाठ्यात्सर्वानुवर्त्ती तेनैवामिषेण निमित्तीकृतेनोत्पादितकलहः सर्वसामन्तानध्वंसयत्। तदीयं च सर्वस्वं स्वयमेवाग्रसत्। वानवास्यं केनचिदंशेनानुगृह्य प्रत्यावृत्य सर्वमनन्तवर्मराज्यमात्मसादकरोत्।

हिन्दी – अश्मक देश के अधिपति वसन्तभानु ने कुन्तल देश के राजा अवन्तिदेव से एकान्त में कहा—"उन्मत्त यह राजा (अनन्तवर्मा) हम लोगों की स्त्रियों का निरादर किया करता है अथवा बलात्कार किया करता है। कितना अपमान सहा जाये (अन्ततोगत्वा हम लोग ऐसे अपमानों को कब तक सहन करते रहें)। मेरे समीप एक सौ हाथी तथा आपके समीप पांच सौ; अतः हम लोग मिलकर, मुरलदेश के राजा वीरसेन को, ऋचीक देश के राजा एकवीर को, कोङ्कण देश के राजा कुमारगुप्त को तथा सासिक्य के स्वामी नागपाल को (इस अनन्तवर्मा की ओर से फोड़कर) अपनी ओर मिला लें। इसके

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अविनय (विनयविहीन व्यवहार) युक्त व्यवहार को सहन न करते हुए वे लोग भी हमारी ही सम्मति के अनुसार कार्य करेंगे और यह वनप्रदेश का राजा भानुवर्मा हमारा प्रिय मित्र है ही। इस विनयविहीन (अनन्तवर्मा) के ऊपर उस (भानुवर्मा) के द्वारा सामने से चढ़ाई कराके, पीछे से हम लोग भी आक्रमण कर दें तथा इसके कोष को और इसकी सेना (परस्पर) को बांटकर ले लें।" यह सुनकर उस (कुन्तलपति अवन्तिदेव) के द्वारा प्रसन्न होकर (वसन्तभानु के प्रस्ताव का) स्वीकार कर लिये जाने पर बीस श्रेष्ठ वस्त्र तथा कुंकुम (केसर) की सुगन्ध से और स्वर्ण की जरी के काम से युक्त पच्चीस दुशालों को विश्वासपात्र व्यक्ति द्वारा, भेंट के रूप में भेजकर उन (अनन्तवर्मा के पक्ष के) सामन्तों से मन्त्रणा करके उनको भी अपने मत में कर लिया। दूसरे दिन, (अनन्तवर्मा की) राजनीति से द्वेष रखने के कारण अनन्तवर्मा उन सामन्तों (मुरलेश, ऋचीकेश, कोङ्कणपति तथा सासिक्याधिपति) का तथा वनदेश के स्वामी भानुवर्मा का शिकार बन गया अर्थात् मारा गया। वसन्तभानु ने उसके (अनन्तवर्मा के) तितर-बितर हो गये हुए खजाने तथा सेना को अपने आधीन करके "अपने-अपने परिश्रम तथा अपनी-अपनी सेना के अनुसार बांटकर आप लोग लेते जाइये" आप लोगों की आज्ञा से थोड़े-बहुत अंश से मैं भी सन्तुष्ट हो जाऊंगा" ऐसा कहकर तथा सबकी सम्मति के अनुसार चलने का बहाना कर, धूर्त्तता से उसी (विभाजन) के आधार पर (सभी सामन्तों में परस्पर) झगड़ा उत्पन्न कर सभी सामन्तों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और उन सभी के उस (समस्त) धन को स्वयं ही हड़प लिया। वनप्रदेश-वासी राजा भानुवर्मा को कुछ अंश (भाग) से सन्तुष्ट कर, (स्वदेश को) लौटकर, अनन्तवर्मा के सम्पूर्ण राज्य को अपने अधिकार में कर लिया।

व्याकरण—समभ्यधात = सम + अभि + धा + लङ् (आत्मनेपद) लकार के प्रथमपुरुष के एकवचन का रूप। सोढव्या = सह + तव्य + टाप्। सम्भूत = सम् + भू + ल्यप्। अविनयम् = नञ् + वि + नी + अच्। असहमानाः = नञ् + सह + शानच्। अग्रतः = अग्र + तसिल्। पृष्ठतः = पृष्ठ + तसिल् विभज्य = वि + भज् + ल्यप्। अभ्युपेते = अभि + उप + इण् + क्त। सम्मन्त्र्य

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

=सम् + मन्त्र + ल्यप् । उत्तरेद्युः = उत्तर + एद्युः । नय = नी + अय् । यहाँ 'एरच्' सूत्र के इकारान्त 'नी' धातु से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए 'अच्' प्रत्यय हुआ है । द्वेषः = द्विष् + घञ् । अवशीर्णम् = अव + शॄ + क्त । प्रयासम् प्र + यस् + घञ् । सर्वानुवर्त्ती = सर्व + अनु + वृत् + णिनि । निमित्तीकृत्य = निमित्त + च्वि + कृ + ल्यप् । उत्पादित = उत् + पद् + णिच् + क्त । व्यध्वंसयत् = वि + ध्वंस् + णिच् + लङ्लकार के प्रथम पुरुष के एकवचन का रूप । तदीयम् = तद् + छ (ईय) । प्रत्यावृत्य = प्रति + आ + वृत् + ल्यप् । आत्मसात् = आत्मन् + साति ।

समास आदि—कोङ्कणपतिम् = कोङ्कणानां पति इति कोङ्कणपतिः तम् (षष्ठी तत्पु०) । कोशवाहनम् = कोशश्च वाहनं च (द्वन्द्व) इति तयोः समाहार कोशवाहनम् । काञ्चनकुङ्कुमकम्बलानाम् = काञ्चमयानि कुङ्कुमवर्णानि च कम्बलानि इति काञ्चनकुङ्कुमकम्बलानि तेषाम् (कर्मधारय) । प्राभृतीकृत्य = न प्राभृतम् अप्राभृतम्, अप्राभृतं प्राभृतं कृत्वा इति प्राभृतीकृत्य । आप्तमुखेन = आप्तस्य मुखम् इति आप्तमुखम् तेन (षष्ठी तत्पु०) । नयद्वेषात् = नयस्य द्वेषः इति नयद्वेषः तस्मात् (षष्ठी तत्पु०) । आत्माधिष्ठितम् = आत्मना अधिष्ठितम् (तृतीया तत्पु०) इति । यथाप्रयास = प्रयासमनतिक्रम्य इति यथाप्रयासम् (अव्ययीभाव समास) । यथाबलम् = बलमनतिक्रम्य यथाबलम् (अव्ययीभाव) । सर्वानुवर्त्ती = सर्वान् अनुवर्तते इति सर्वानुवर्त्ती । उत्पादितकलहः = उत्पादितः कलहः येन सः (बहुव्रीहि) । सर्वस्वम् = सर्वं च तद् स्वं इति (कर्मधारय) ।

टिप्पणियाँ—समभ्यधात = कहा । प्रमत्तः = उन्मत्त, पागल । कलत्राणि = स्त्रियों को । परामृशति = स्पर्श करता है, निरादर करता है । कियति = कितना । अवज्ञा = अपमान । सोढव्या = सहन किया जाये । सम्भूय = मिलकर । मुरलेशम् = मुरल देश का राजा—वीरसेन । ऋचीकेश्वरम् = ऋचीक देश का राजा एकवीर । कोङ्कणपतिम् = कोङ्कणदेश का स्वामी—कुमारगुप्त । सासिक्यनाथम् = सासिक्य देश का राजा नागपाल । उपजपावः = अनन्तवर्मा की ओर से फोड़कर अपनी ओर मिला लें । उपावर्त्तेरम् = कार्य करेंगे,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यवहार करेंगे। अमुना = इसके (भानुवर्मा) द्वारा। अग्रतः = आगे से (पुरतः)। व्यतिषक्तम् = चढ़ाई किये गये हुए को अथवा रोक दिये गये हुए को। कोश-वाहनम् = खजाना और सेना। गृह्णीत = ले लेंगे। अभ्युपेते = स्वीकार कर लेने पर। वरांशुकानाम् = श्रेष्ठ वस्त्रों का। अंशुक = वस्त्र। काञ्चनकुंकुम-कम्बलानाम् = सुनहरी किनारों से युक्त तथा केसरिया वर्ण के कम्बलों का। प्राभृतीकृत्य = भेंट के रूप में भेजकर प्राभृत-भेंट, उपहार। आप्तमुखेन = विश्वास-पात्र व्यक्ति के द्वारा। सम्मन्त्र्य = परामर्श करके। अस्थापयत् = स्वीकार कर दिया। उत्तरेद्यु = दूसरे दिन। नयद्वेषात् = राजनीति से द्वेष रखते हुए होने के कारण। आमिषत्वम् = शिकार की दशा को। आमिष = शिकार। अगमत् = प्राप्त हो गया। अवशीर्णम् = छिन्न-भिन्न, नष्ट-भ्रष्ट। आत्माधिष्ठियम् = अपने हाथों में (स्थित)। यथाप्रयासम् = यथाशक्ति। यथाबलम् = सेना के अनुसार। गृह्णीत् = ले लो। युष्मदनुज्ञया = आप लोगों की आज्ञा से। येन केनचिदंशेन = जिस किसी भी अंश से—अर्थात् चाहे कम, चाहे अधिक भाग से। शाठ्यात् = दुष्टता से, धूर्तता से। सर्वानुवर्त्ती = सबके मन के अनुसार काम करने वाला व्यक्ति। तेन एव आमिषेण = उसी चारे के द्वारा अर्थात् विभाजन का बहाना बनाकर। उत्पादितकलहः = झगड़ा उत्पन्न करवाकर। व्यध्वंसयत् = ध्वंस (नष्ट) करवा दिया। तदीयम् = उन (सामन्तों) का। अग्रसत् = जबर्दस्ती अधिकार कर लिया। अनुगृह्य = अनुगृहीत करके, प्रसन्न करके। प्रत्यावृत्य = (अपने देश की ओर) लौट कर। आत्मसात् = अपने अधिकार में अथवा अपने हाथ में।

(२६) अस्मिश्चान्तरे मन्त्रिवृद्धो वसुरक्षितः कैश्चिन्मौलैः संभूय बालमेनं भास्करवर्माणम् अस्यैव ज्यायसीं भागिनीं त्रयोदशवर्षां मञ्जुवादिनीम्, अनयोश्च मातरं महादेवीं वसुन्धरामादायापसर्पन्न-पदोऽस्या भावितया दाहज्वरेण देहमजहात्। अस्मादृशैर्मित्रैस्तु नीत्वा माहिष्मतीं भर्तृद्वैमातुराय भ्रात्रे मित्रवर्मणे सापत्या देवी दर्शिताभूत्। तां चार्यामनार्योऽसावन्यथाऽभ्यमन्यत। निर्भर्त्सितश्च तया 'सुतमिय-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मखण्डचारित्रा राज्यार्हं चिकीर्षति' इति नैर्घृण्यात्तमेनं बालमजिघांसीत्। इदं तु ज्ञात्वा देव्याहमाज्ञप्तः—"तात ! नालीजङ्घ, जीवतानेनार्भकेण यत्र क्वचिदवधाय जीवेः। जीवेयं चेदहमप्येनमनुसरिष्यामि। ज्ञापय मां क्षेमप्रवृत्तः स्ववार्तामिति"। अहं तु संकुले राजकुले कथंचिदेनं निर्गमय्य विन्ध्याटवीं व्यगाहिषि। पादचारिणं चैनमाश्वासयितुं घोषे क्वचिदहानि कानिचिद्विश्रमय्य, तत्रापि राजपुरुषसंपातभीतो दूराध्वमपासरम्। तत्रास्य दारुणपिपासापीडितस्य वारि दातुकामः कूपेऽस्मिन्नपभ्रश्य पतितस्त्वयैवमनुगृहीतः। त्वमेवास्यातः शरणमेधि विशरणस्य राजसूनोरित्यञ्जलिमबध्नात्।

हिन्दी—इस बीच मन्त्रियों में श्रेष्ठ (वृद्ध) वसुरक्षित ने (अनन्तवर्मा के) बाप-दादों के समय से चले आते हुए कुछ मन्त्रियों से मिलकर, इस भास्कर वर्मा नामक बच्चे को त्रयोदश वर्षीया इसकी बहिन को तथा इन दोनों की माँ बड़ी रानी वसुन्धरा को लेकर भागते-भागते, इस विपत्ति की होनहार के कारण, दाहज्वर से पीड़ित होकर शरीर त्याग कर दिया। हमारे मित्रों के द्वारा महिष्मति नाम की नगरी में पहुँचायी गयी हुई रानी अपने पति के सौतेले बन्धु मित्रवर्मा के हाथों में सन्तानसहित सौंप दी गयी, किन्तु उस दुष्ट ने इस आर्या (श्रेष्ठ रानी) को दूसरी ही भाँति माना। (अर्थात् भ्रष्टाचारिणी समझा)। पुनः वह उस शुद्ध आचरण वाली रानी द्वारा फटकारा जाने पर "अपने पुत्र को राज्य के योग्य बनाने की इच्छा रखती है" यह सोचकर निर्दयता से इस बालक को मार देने का विचार करने लगा। यह ज्ञात होने पर देवी ने मुझे आज्ञा दी कि "हे तात नालीजङ्घ ! इस जीवित बच्चे के साथ तुम कहीं अन्यत्र रहकर जीवन धारण करो। यदि मैं जीवित अवस्था में रही तो मैं भी इसका अनुसरण करूँगी (अर्थात् मिलूँगी)। (इस बालक के) कल्याण में संलग्न तुम (समय-समय पर) अपना समाचार मुझे देते रहना।"

उस भीड़-भीड़ से व्याप्त राजकुल से इस बालक को किसी भाँति निकाल

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर मैं विन्ध्याचल के सघन वनों में आकर प्रविष्ट हो गया (छुप गया)। पैदल चलने के कारण थके हुए इस बालक को आश्वस्त करने के लिए किन्हीं अहीरों की बस्ती में कुछ दिन विश्राम कर, वहाँ पर भी राजा (मित्रवर्मा) के पुरुषों (अधिकारियों) के आने के भय से डरकर मैं अधिक दूर निकल गया (चला गया)। बड़ी तेजी से लगी हुई प्यास से पीड़ित इस बालक को जल देने का इच्छुक मैं फिसलकर इस कुएँ में गिर पड़ा और अब तुम्हारे द्वारा इस भाँति अनुगृहीत हुआ हूँ (अर्थात् बड़ी दया करके आपने हमें इस कुएँ से बाहर निकाल लिया) "अतः इस शरणविहीन राजपुत्र के तुम्हीं शरण हो" ऐसा कहकर उसने अञ्जलि बांध ली (अर्थात् हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया)।

व्याकरण—**सम्भूय**=सम्+भू+ल्यप्। **अपसर्पन्**=अप+सृप+शतृ। **द्वैमातुरः**=द्वैमातृ+अण्। **निर्भर्त्सितः**=निर्+भर्त्स्+क्त। **नैर्घृण्यात्**=निर्घृण+ष्यञ्। **आज्ञप्तः**=आ+ज्ञा+णिच्+क्त। **अवधाय**=अव+धा+ल्यप्। **ज्ञापय**=ज्ञा+णिच्+लोट् लकार के मध्यम पुरुष के एकवचन का रूप। **निर्गमय्य**=निर्+गम्+णिच+ल्यप्। **आश्वासयितुम्**=आ+श्वस्+णिच्+तुमुन्। **विश्रमय्य**=वि+श्रम्+णिच्+ल्यप्। **सम्पात**=सम्+पत+घञ्। **भीत**=भी+क्त। **अपभ्रश्य**=अप्+भ्रश्+ल्यप्। **अनुगृहीतः**=अनु+ग्रह्+क्त।

समास आदि—**मौलैः** मूलात् आगताः मौलाः तैः। **दाहज्वरेण**=दाहयुक्तः ज्वरः इति दाहज्वरः तेन दाहज्वरेण (कर्मधारण)। **अस्मादृशैर्मित्रैः**=अस्माक मित्राणि इति अस्मन्मित्राणि तैः (षष्ठी तत्पुरुष)। **द्वैमातुराय**=द्वयोः मात्रोः अपत्यं पुमान् द्वैमातुर तस्मै। **सापत्य**=विद्यमानं अपत्यं यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **अखण्डचरित्रा**=न विद्यते खण्डं यस्य तत् अखण्डम् (बहुव्रीहि)। अखण्डं चरित्रं यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **राज्यार्हम्**=राजस्य अहः इति राज्यार्हः, तम् (षष्ठी तत्पु०)। **नैर्घृण्यात्**=निर्गता घृणा यस्मात् सः निघृणः (बहुव्रीहि) तस्य भावः नैर्घृण्यम्, तस्मात्। **स्ववार्ताम्**=स्वस्य वार्ता, स्ववार्ता ताम् (षष्ठी तत्पु०)। **राजपुरुषसम्पातभीतः**=राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः (षष्ठी तत्पु०)।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेषां सम्पात: इति राजपुरुषसम्पात: (षष्ठी तत्पु०) तेन भीत: (तृतीया तत्पु०) दूराध्वम्=दूरश्चासौ अध्वा च इति दूराध्व: तम्। दारुणपिपासापीडितस्य= दारुणा चासौ पिपासा, दारुणपिपासा (कर्मधारय) तया पीडित: इति दारुण-पिपासापीडित: तस्य: (तृतीया तत्पु०)। दातुकाम:=दातुं काम: यस्य स: (बहुव्रीहि)। विशरणस्य=विगतं शरणं यस्य स: विशरण: तस्य (बहुव्रीहि)। राजसूनो:=राज्ञ: सूनु: इति राजसूनु: तस्य (षष्ठी तत्पु०)।

टिप्पणियाँ—मौलै:=मूल से आये हुए अर्थात् अनन्तवर्मा की पूर्व पीढ़ियों के समय से चले आते हुए (मन्त्रियों से)। सम्भूय=मिलकर। अपसर्पन्= भागता हुआ। अस्या: आपद: भावितया=इस आपत्ति की अवश्यम्भावी होन-हार के कारण; क्योंकि इस आपत्ति का भोगना मेरे लिए आवश्यक था इसी कारण। अजहात्=छोड़ दिया। अस्मादृशैर्मित्रै:=हमारे मित्रों के द्वारा नीत्वा=ले जाकर, पहुँचाई जाकर। द्वैमातुराय भ्रात्रे=सौतेले भाई के पास। मित्रवर्मा=यह अनन्तवर्मा की सौतेली माँ का पुत्र था अर्थात् सौतेला भाई। सापत्या=सन्तानसहित। अन्यथा अमन्यत=दूसरे ही रूप में समझा अर्थात् उसे भ्रष्टाचार वाली जाना। निर्भर्त्सित:= फटकारा गया हुआ (डाँटा गया हुआ)। अखण्डचरित्रा=अच्छे आचरणों वाली। राज्यार्हम्=राज्य के योग्य। इति=इस कारण से। नैर्घृण्यात्=निर्दयता से। अजिघांसीत्=मार डालने की इच्छा की। देव्या=देवी अर्थात् महारानी द्वारा। आज्ञप्त:=आदेश दिया गया। क्वचिद्=किसी स्थान पर। अर्भकेण=सच्चे के साथ। अवधाय= अपने को रखकर (आत्मानं स्थापयित्वा)। ज्ञापय=सूचित करते रहना। क्षेमप्रवृत्त:=कल्याण में। प्रवृत्त=इस बच्चे के कल्याण में संलग्न। स्ववार्ताम् =अपने समाचार को। संकुले=व्याप्त (भरे हुए)। कथञ्चित्=महान् कष्ट से। निर्गमय्य=निकालकर। व्यगाहिषि=प्रवेश कर गया—घुस गया। आश्वासयितुम्=आश्वासन (धैर्य) प्रदान करने के लिए। घोषे=अहीरों के निवासस्थान (नगरी में)। विश्रमय्य=विश्राम कराके। राजपुरुषसम्पातभीत: =राजकर्मचारियों के आ जाने के भय से व्याकुल मन होकर। दूराध्वम्= दूर मार्ग। अपासरम्=भाग गया। दारुणपिपासापीडितस्य=अत्यन्त असह्य प्यास से व्याकुल। दातुकाम:=देने की इच्छा। अपभ्रश्य=भ्रष्ट होकर,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिसलकर। शरणम् एधि = शरण हो। निशरणस्य = शरणविहीन की। इति = ऐसा कहकर। अञ्जलिमबध्नात् = अंजलि को बांधा—अर्थात् हाथ जोड़कर प्रमाण किया।

(२७) 'किमीया जात्यास्य माता' इत्यानुयुक्ते मयाऽमुनोक्तम्—'पाटलिपुत्रस्य वणिजो वैश्रवणस्य दुहितरि सागरदत्तायां कोसलेन्द्रात्कुसुमधन्वनोऽस्य माता जाता' इति। 'यद्येवमेतन्मातुर्मत्पितुश्चैको मातामहः' इति सस्नेहं तमहं सस्वजे। वृद्धेनोक्तम्—'सिन्धुदत्तपुत्राणां कतमस्ते पिता ?' इति। 'सुश्रुतः' इत्युक्ते सोऽत्यहृष्यत्। अहं तु तं नयावलिप्तमश्मकेन्द्रं नयेनैवोन्मूल्य बालमेनं पित्र्ये पदे प्रतिष्ठापयेयम् इति प्रतिज्ञाय कथमस्यैनां क्षुधं क्षपयेयम्' इत्यचिन्तयम्। तावदापतितौ च कस्यापि व्याधस्य त्रीनिषूनतीत्य द्वौ मृगौ स च व्याधः। तस्य हस्तादवशिष्टमिषुद्वयं कोदण्डं चाक्षिप्यावधिषम्। एकश्च सपत्राकृतोऽन्यश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्। तं चैकं मृगं दत्त्वा मृगयवे, अन्यस्यापलोमत्वचः क्लोमापोह्य, निष्कुलाकृत्य विकृत्योर्वङ्घ्रिग्रीवादीनी, शूलाकृत्य दावाङ्गारेषु, तप्तेनामिषेण तयोरात्मनश्चक्षुधमताऽर्षम्। एतस्मिन् कर्मणि मत्सौष्ठवेनातिहृष्टं किरातमस्मि पृष्टवान्—'अपि जनासि माहिष्मतिवृत्तान्तमिति'। असावाचष्ट—'तत्र व्याघ्रत्वचो हतीश्च विक्रीयाद्यैवागतः, किं न जानामि। प्रचण्डवर्मा नाम चण्डवर्मानुजो मित्रवर्मदुहितरं मञ्जुवादिनीं विलिप्सुरभ्येतीति तेनोत्सवोत्तरा पुरी' इति।

हिन्दी—मुझ (विश्रुत) द्वारा यह पूछने पर कि 'इसकी माता किस जाति की है" उसके द्वारा उत्तर दिया गया "पटना (पाटलिपुत्र) के बनिये वैश्रवण की पुत्री सागरदत्ता के साथ कौशल देश के स्वामी (राजा) कुसुमधन्वा के संसर्ग से इसकी माता उत्पन्न हुई थी।" यदि ऐसा है तब तो इसकी माता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और हमारे पिता दोनों के नाना एक ही हैं' ऐसा कहकर मैंने उस बालक को बड़े प्रेम से आलिङ्गन किया। वृद्ध ने कहा—'सिन्धुदत्त के पुत्रों में से कौन व्यक्ति तुम्हारे पिता थे ?" 'सुश्रुत' के ऐसा कहे जाने पर वह अति प्रसन्न हुआ। राजनीति के मद में चूर अश्मकाधिपति वसन्तभानु को राजनीति द्वारा ही नष्ट कर, इस बालक को (इसके) पिता के पद (सिंहासन) पर स्थापित कर दूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा कर 'इसकी भूख को किस भाँति दूर करूँ ?' यही सोचने लगा। तब तक किसी बहेलिये के तीन वाणों का अतिक्रमण कर (से बचकर) दो हिरण तथा वह बहेलिया आ गया। अवशिष्ट दोनों वाणों को तथा धनुष को उसके हाथ से छीनकर (मैंने दोनों हरिणों को मार डाला। एक हिरण इस प्रकार (वाण द्वारा) बींधा गया कि वाण की पूँछ उसके शरीर के बाहर दिखलायी देती रही, दूसरा इस भाँति बींधा गया कि वाण की पूँछ (पिछला भाग) उसके शरीर में पूर्ण प्रविष्ट हो गयी इस भाँति (वे जमीन पर) गिर पड़े। उनमें से एक हिरण बहेलिये को देकर, दूसरे (मृग) की खाल तथा रोओं (बाल आदि) को निकालकर तथा उसके फेफड़े अथवा अंतड़ियों को निकालकर अन्दर के सम्पूर्ण शरीरावयवों को (भी) निकालकर, जंघा, पैर और गरदन को काटकर लोहे की छड़ पर रखकर, वन की आग के अंगारों पर भूने गये हुए मांस से उन दोनों की (उस वृद्ध तथा बालक की) तथा अपनी भूख को निवृत्त किया। इस कार्य में मेरी दक्षता (चतुरता) से अत्यन्त हर्षित हुए किरात (बहेलिया) से मैंने पूछा—"क्या महिष्मति का कुछ समाचार जानते हो ?" उसने कहा—वहीं पर व्याघ्र के कर्म तथा मशकों (चमड़े की पिटारियों अथवा झोलों) को बेचकर आज ही आया हूँ, (अतः) मैं क्या नहीं जानता ? चण्डवर्मा का छोटा भाई प्रचण्डवर्मा मित्रवर्मा की कन्या मंजुवादिनी को प्राप्त करने की (लेने की) इस इच्छा से आ रहा है, इसलिए नगरी उत्सव से युक्त है। (अर्थात् उस नगरी में आज बड़ा भारी उत्सव मनाया जा रहा है)।

व्याकरण—किमीया = किम् + छ (ईय्) + टाप्। अनुयुक्तो - अनु + युज् + क्त। कतमः = किम् + डतमच्। अवलिप्तम् = अव + लिप् + क्त। उन्मूल्य = उत् + मूल् + ल्यप्। प्रतिष्ठापयेयम् = प्रति + स्था + णिच्। आपतितौ =

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आ + पत् + क्त । प्रतिज्ञाय = प्रति + ज्ञा + ल्यप् । अवशिष्टम् = अव + शिष् + क्त । आक्षिप्य = आ + क्षिप् + ल्यप् । सपत्राकृतः = सपत्र + डाच् + कृ + क्त । निष्पत्राकृतः = निष्पत्र + डाच् + कृ + क्त । मृगयवे = मृगयु (बहेलिया) शब्द की चतुर्थी विभक्ति के एकवचन का रूप । अपोह्य = अप + वह् + ल्यप् । निष्कुलाकृत्य = निष्कुल + डाच् + कृ + ल्यप् । विकृत्य = वि + कृत् + ल्यप् । शूलाकृत्य = शूल + डाच् + कृ + ल्यप् । पृष्टवान् = प्रच्छ् + क्तवतु । विक्रीय = वि + क्री + ल्यप् । लिप्सुः = लभ् + सन् + उ ।

समास—किमीया = कस्य इयम् इति किमीया । एतन्मातुः = एतस्य माता इति एतन्माता तस्याः (षष्ठी तत्पु०) । मत्पितुः = मम पिता इति मत्पिता (षष्ठी तत्पु०) तस्य । नयावलिप्तम् = नयेन अवलिप्तः, नयावलिप्तः तम् (तृतीया तत्पु०) । इषुद्वयम् = इष्वोः द्वयम् = इषुद्वयम् (षष्ठी तत्पु०) । अपलोमत्वचः = अपगते लोमत्वचौ यस्य सः (बहुव्रीहि) अपलोमत्वक् तस्य । निष्कुलाकृत्य = निर्गते कुलं यस्मात् यत् निष्कुलम्, निष्कुलं कृत्वा इति निष्कुलाकृत्य । उर्वङ्घ्रिग्रीवावीनी = उरु च अङ्घ्री च ग्रीवा च इति उर्वङ्घ्रिग्रीवा (द्वन्द्व समास) ताः आदयो येषां तानि (बहुव्रीहि) । महिष्मतीवृत्तान्तः = माहिष्मत्याः वृत्तान्तः, माहिष्मतीवृत्तान्तः तम् । मित्रवर्मदुहितरम् = मित्रवर्मणः दुहिता, मित्रवर्मदुहिता, ताम् (षष्ठी तत्पु०) । लिप्सुः = लब्धुं इच्छु इति लिप्सु ।

टिप्पणियाँ—किमीया = किसकी । अनुयुक्ते = पूछे जाने पर (पृष्टे) । कुसुमधन्वनः = (कौशलदेश का राजा) कुसुमधन्वा से । एतन्मातुः = इसकी माता के । सस्वजे = आलिङ्गन किया । नयावलिप्तम् = राजनीति के कारण अभिमानयुक्त । नयेन एव = राजनीति से ही । उन्मूल्य = नष्ट करके । पित्र्ये पदे = पिता के स्थान पर (पितुः स्थाने) अर्थात् सिंहासन पर । प्रतिष्ठापयेयम् = आरूढ़ करा दूँ, रख दूँ । आपतितौ = आये, आ गये । अतीत्य = अतिक्रमण कर, बचकर । क्षुधम् = भूख को । क्षपयेयम् = दूर करें, निर्धारण करें । कोदण्डम् = धनुष । आक्षिप्य = बलपूर्वक लेकर, छीनकर । अवधिषम् = मार डाला । सपत्राकृतः = पत्र (पुङ्ख) सहित कर दिया गया अर्थात् वह मृग ऐसे बींध दिया गया कि पूरा बाण हिरण के शरीर में धँस गया, केवल पुङ्ख ही उसके शरीर के बाहर दिखायी पड़ती रही । निष्पत्राकृतः = (दूसरा हिरण इस

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भाँति बिधा कि वाण का) पुङ्ख तक नहीं दिखलायी पड़ रहा था अर्थात् पुङ्ख सहित सम्पूर्ण वाण उस हिरण के शरीर में घँस गया। मृगयवे=बहेलिये के लिए। अपलोमत्वचः=जिसके रोयें (अथवा बाल) और चर्म शरीर से पृथक् कर लिये गये हों। क्लोम=फेफड़ा अथवा अंतड़ियाँ, मस्तिष्क ("तिलक क्लोम मस्तिष्कम्"—अमरकोश)। अपोह्य=हटाकर, निकालकर। निष्कुलाकृत्य =शरीर के अगों को (बाहर) निकालकर। विकृत्य=काट-काटकर। उर्वङ्घ्रिग्रीवादीनी=दोनों जंघाओं की हड्डियों को तथा गरदन आदि को काटकर। शूलाकृत्य=लोहे की छड़ रखकर तथा भूनकर। दावाङ्गारेषु=वन की अग्नि के अंगारों में। तप्तेन=भुने हुए। आमिषेण=मांस से। तयोः=उन दोनों की (उस वृद्ध की तथा बच्चे की।) अतार्षम्=निवारण किया, शान्त किया (न्यवारयम्)। एतस्मिन् कर्मणि=इस कार्य में अर्थात् मृग को मारने से प्रारम्भ कर उसके मांस को भूनने तक में। मत्सौष्टवेन=मेरी चतुरता से। किरातम्=बहेलिये को। आचष्ट=कहा। व्याघ्रत्वचः=व्याघ्र के चमड़े को। दृतीः=चमड़े से निर्मित मशकों (पिटारियों) को। विक्रीय=बेचकर। लिप्सुः=प्राप्त करने का अभिलाषी। अभ्येति=आ रहा है। सोत्सवा=उत्सव से युक्त।

---

(२८) अथ कर्णे जीर्णमब्रवम् 'धूर्त्तो मित्रवर्मा दुहितरि सम्यक् प्रतिपत्त्या मातरं विश्वास्य तन्मुखेन प्रत्याकृष्य बालकं जिघांसति। तत्प्रतिगत्य कुशलमस्य मद्वार्त्तां च देव्यै रहो निवेद्य पुनः कुमारः शार्दूल-भक्षित इति प्रकाशमाक्रोशनं कार्यम्। स दुर्मतिरन्तः प्रीतो बहिर्दुःखं दर्शयन्देवीमनुनेष्यति। पुनस्त्वया तन्मुखेन स वाच्यः। यदपेक्षया त्वनमतमत्यक्रमिषं सोऽपि बालः पापेन मे परलोकमगात्। अद्य तु त्वदादेशकारिण्येवाहमिति। स तथोक्तः प्रीतिं प्रतिपाद्याभिपत्स्यति। पुनरनेन वत्सनाभनाम्ना महाविषेण संनीय तोयं तत्र मालां मज्जयित्वा तया स वक्षसि मुखे च हन्तव्यः "स एवायमसिप्रहारः पापीयसस्तव

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भवतु यद्यस्मि पतिव्रता" इति पुनरनेनागदेन संगमितेऽम्भसि तां मालां मज्जयित्वा स्वदुहित्रे देया। मृते तु तस्मिंस्तस्यां च निर्विकारायां सत्यां, सतीत्येवैनां प्रकृतयोऽनुवर्तिष्यन्ते। पुनः प्रचण्डवर्मणे संदेश्यम्—'अनायकमिदं राज्यम्। अनेनैव सह बालिकेयं स्वीकर्त्तव्या' इति। तावदावां कापालिकवेषच्छन्नौ देव्यैव दीयमानभिक्षौ पुरो बहिरुपश्मशानं वत्स्यावः। पुनरार्यप्रायान्पौरवृद्धानाप्तांश्च मन्त्रिवृद्धानेकान्ते ब्रवीतु देवी—स्वप्नेऽद्य मे देव्या विन्ध्यवासिन्या कृतः प्रसादः। अद्यः चतुर्थेऽहनि प्रचण्डवर्मा मरिष्यति। पञ्चमेऽहनि रेवातटवर्तिनि मद्भवने परीक्ष्य वंजन्यम्, जनेषु निर्गतेषु कपाटमुद्घाट्य त्वत्सुतेन सह कोऽपि द्विजकुमारो निर्यास्यति। स राज्यमिदमनुपाल्य बालं ते प्रतिष्ठापयिष्यति। स खलु बालो मया व्याघ्रीरूपया तिरस्कृत्य स्थापितः। सा चेयं वत्सा मञ्जुवादिनी तस्य द्विजातिदारकस्य दारत्वेनैव कल्पिता' इति। तदेतदतिरहस्यं युष्मास्वेव गुप्तं तिष्ठतु यावदेतदुपपत्स्यते' इति।

हिन्दी—इसके पश्चात् उस वृद्ध के कान में (मैंने) कहा—(वह) कपटी मित्रवर्मा कन्या (मजुवादिनी) के प्रति अपने उत्तम व्यवहार द्वारा, माता को विश्वास में लाकर, उसी (माता) के द्वारा इस बच्चे को अपने पास बुलाकर मार डालना चाहता है; अतः तुम लौटकर, एकान्त में रानी से, इस बच्चे का कुशल समाचार तथा मेरी बात को बतलाकर फिर यह कह कर कि "बच्चा व्याघ्र द्वारा खा लिया गया", रोना-चिल्लाना प्रारम्भ कर देना। वह दुर्बुद्धि अन्दर ही अन्दर प्रसन्न होता हुआ महारानी को सान्त्वना प्रदान करेगा। फिर तुम उस देवी द्वारा उस (मित्रवर्मा) से कहलवाना कि जिसकी अपेक्षा से मैंने तुम्हारी कही बात का उल्लंघन किया, वह बच्चा भी मेरे पास से परलोक गया। अब आज से तुम्हारी आज्ञाओं का मैं पालन करूँगी। इस भाँति कहा गया हुआ वह, हर्षित होकर (महारानी की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बात) स्वीकार कर लेगा। फिर इस वत्सनाभ नामक महाविष को पानी में घोलकर, उसमें माला को डुबोकर, उस रानी द्वारा वह मित्रवर्मा) छाती तथा मुख के ऊपर यह कहकर मारा जाना चाहिये कि यदि मैं पतिव्रता हूँ तो यह (माला का प्रहार) तुझ पापी के लिए तलवार का प्रहार हो जावे। फिर इस (अन्य) दवा से मिले हुए पानी में, उस माला को डुबोकर अपनी पुत्री को दे दें। उस (मित्रवर्मा) के मर जाने पर तथा उस लड़की के सकुशल बने रहने पर प्रजाएँ यह जानकर कि यह रानी (वस्तुतः) सती पतिव्रता है, इस रानी का अनुसरण करेगी। फिर प्रचण्डवर्मा के समीप यह सन्देश भेज देना चाहिये (भेज देना) कि राज्य नायक (राजा) से रहित है; (अतः) इस (राज्य) के साथ ही यह कन्या (आप द्वारा) स्वीकार की जानी चाहिये। उस समय तक हम दोनों कापालिक वेश में छिपे हुए, देवी महारानी द्वारा दी गयी हुई भीख (भिक्षा) को लेकर, नगर से बाहर, श्मशान के पास निवास करेंगे। तत्पश्चात् सच्चरित्र वृद्ध नागरिकों और विश्वसनीय वृद्ध मन्त्रियों को बुलाकर एकान्त में रानी कहें कि आज स्वप्न में भगवती विन्ध्यवासिनी देवी ने मुझ पर कृपा की है। आज से चौथे दिन प्रचण्डवर्मा मर जायेगा। पाँचवें दिन नर्मदा नदी के तट पर निर्मित मेरा जो मन्दिर है, उसमें जनशून्यता (सुनसानपन) की भली-भाँति परीक्षा कर लोगों के (बाहर) निकल जाने पर, किवाड़ खोलकर तुम्हारे पुत्र के साथ कोई ब्राह्मण-कुमार निकलेगा। वह इस राज्य का पालन कर तुम्हारे पुत्र को राज्यसिंहासन पर आरूढ़ कर देगा। व्याघ्री का रूप धारण कर मुझ विन्ध्यवासिनी देवी द्वारा यह बालक छिपाकर रखा गया है और यह लड़की मञ्जुवादिनी उस ब्राह्मण-कुमार की पत्नी कल्पित (निश्चित) की गयी है; अतः यह अति रहस्यपूर्ण घटना उस समय तक तुम्हारे तक ही गुप्त रहे कि जिस समय तक यह बात सिद्ध न हो जाये।

व्याकरण—प्रत्याकृष्य = प्रति + आ + कृष् + ल्यप्। जिघांसति = हन् + सन् + लट् (प्रथम पुरुष एकवचन)। प्रतिगत्य = प्रति + गम् + ल्यप्। निवेद्य = नि + विद् + णिच् + ल्यप्। कार्यं = कृ + ण्यत्—यहाँ पर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ऋहलोर्ण्यत्" सूत्र से "ण्यत्" प्रत्यय होता है। आदेशकारिणी = आदेश + कृ + णिनि + ङीप्। संनीय = सम् + नी + ल्यप्। प्रहार = प्र + हृ + घञ्। पापीयसः = पाप + ईयसुन् षष्ठी विभक्ति के एकवचन का रूप। संगमिते = सम् + गम् + णिच् + क्त। देया दा + यत् + टाप्। सत्याम् = अस् + शतृ + ङीप् = सप्तमी विभक्ति के एकवचन का रूप। सन्देश्यम् = सम् + दिश् + णिच् + यत्। दीयमान् = दा + शानच्। वत्स्यावः = वस् + लृट् (उत्तमपुरुष—द्विवचन का रूप)। पौरा = पुर + अण्। परीक्ष्य = परि + ईक्ष् + ल्यप्। अनुपाल्य = अनु + पाल् + ल्यप्। प्रतिष्ठापयिष्यति = प्रति + स्था + णिच् + लृट् लकार (प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप)। कल्पिता = क्लप् + क्त + टाप्।

समास—तन्मुखेन = तस्या मुखं इति तन्मुखं तेन। मद्वार्त्ताम् = मम वार्त्ता इति मद्वार्त्ता ताम्। शार्दूलभक्षितः = शार्दूलेन भक्षितः इति (तृतीया तत्पु०। यदपेक्षया = यस्य अपेक्षा इति यदपेक्षा (षष्ठी तत्पु०) तया। त्वदादेशकारिणी = तव आदेशः, त्वदादेशः (षष्ठी तत्पु०), तं कुरुते इति त्वदादेशकारिणी। वत्सनाभनामा = वत्सनाभः नाम यस्य तत् वत्सनाभनाम तेन (बहुव्रीहि)। महाविषेण = महच्च तत् विषम् = महा विषम् तेन (कर्मधारय)। पापीयसः = अतिशयेन पापः इति पापीयान् तस्व। स्वदुहित्रे = स्वस्य दुहिता, स्वदुहित, स्वदुहिता तस्य (षष्ठी तत्पु०)। निर्विकारायाम् = निर्गतः विकारः यस्या. सा निर्विकारा तस्याम् (बहुव्रीहि)। अनायकम् = अविद्यमानः नायकः यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)। कापालिकवेषच्छन्नौ = कापालिकस्य वेषः कापालिकवेषः, तेन छन्नौ कापालिकवेषच्छन्नौ (तत्पु०)। दीयमानभिक्षौ = दीयमाना भिक्षा यस्यां तौ (बहुव्रीहि)। उपश्मशानम् = श्मशानस्य समीपम् = उपश्मशानम् (अव्ययीभाव)। आर्यप्रायाम् = प्रायेण आर्याः इति आर्यप्रायाः तान्। पौरवृद्धान् = पौरेषु (नगरनिवासिषु) वृद्धा पौरवृद्धाः (सप्तमी तत्पु०), तान्। मन्त्रिवृद्धान् = मन्त्रिषु वृद्धाः मन्त्रिवृद्धाः (स० तत्पु०) तान्। रेवातटवर्तिनि = रेवाया तटम् रेवातटम्, तस्मिन् वर्तते तच्छीलः इति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रेवातटवर्ती तस्मिन् । **वैजन्यम्**=विगता: जना: यस्मात् तत् विजनम् (बहुव्रीहि), तस्य भावः वैजन्यम् । **व्याघ्रीरूपाया:**=व्याघ्रया: रूपं यस्या: सा व्याघ्रीरूपा तस्या: (बहुव्रीहि) **अतिरहस्यम्**=अतिशयितं रहस्यमिति अतिरहस्यम् ।

टिप्पणियाँ—**सम्यक्**=अच्छे प्रकार से । **प्रतिपत्या**=व्यवहार के द्वारा । **मातरं विश्वास्य**=(लड़की की) माता को विश्वास दिलाकर । माँ के मन में यह भाव उत्पन्न कर कि मित्रवर्मा एक उत्तम व्यक्ति है, वह हमारा महान् हितैषी है तथा हमारे बच्चों का भी शुभ चाहने वाला है । **तन्मुखेन**=माता के मुख से—अथवा माँ के द्वारा । **प्रत्याकृष्य**=खींचकर अर्थात् वापिस बुलवाकर । **जिघांसति**=(हन्तुमिच्छति) मार डालना चाहता है । **प्रतिगत्य**= वापिस आकर । **मद्वार्त्ताम्**=मेरा हाल, मेरा समाचार । **देव्यै**=महारानी (वसुन्धरा) के लिए । **रहसि**=एकान्त में । **शार्दूलभक्षित:**=शेर द्वारा खा लिया गया । **प्रकाशम्**=सभी लोगों के सामने, स्पष्ट रूप से । **आक्रोश:**= रोना, चिल्लाना । **अन्त: प्रीत:**=अन्दर से (हृदय से) हर्षित । **अनुनेष्यति**= सान्त्वना प्रदान करेगा, धैर्य दिलायेगा । **तन्मुखेन स वाच्य:**=उस (रानी) के मुख से उससे कहलाना । **यदपेक्षया**=जिसकी अपेक्षा से, जिनके कारण । **त्वदुक्तम्**=तुम्हारी कही हुई बात । **अत्यक्रमिषम्**=अतिक्रमण (उल्लंघन) किया । **प्रीतिम्**=प्रसन्नता को । **प्रतिपद्य**=प्राप्त करके । **अभिपत्स्यते**=पास जायेगा । यहाँ कहने का भाव यह है कि महारानी की बातों में विश्वास कर लेने पर वह उसके समीप दुराचार करने के निमित्त आवेगा । उस समय विषमिश्रित जल में डुबोई गयी हुई माला से वह उसे उसकी छाती तथा उसके मुख पर मारेगी तथा यह कहती जावेगी कि "यदि मैं पतिव्रता हूँ तो यह माला द्वारा किया गया हुआ मेरा प्रहार तेरे लिए खड्गप्रहार बन जाये ।" उसके पश्चात् एक अन्य औषधि को दूसरे पानी में घोलकर, उस माला को उसमें डूबोकर अपनी पुत्री को दे देगी । इससे मित्रवर्मा की मृत्यु हो जावेगी, किन्तु पुत्री का कुछ भी न बिगड़ेगा । इस स्थिति को जान लेने पर प्रजा के

Funding by IKS-MoE

लोग रानी को पतिव्रता मान लेंगे तथा उसके शासन में रहने की इच्छा प्रकट करेंगे। वत्सनाभ = एक प्रकार का विष। संनीय = मिलाकर। मज्जयित्वा = डुबोकर। असिप्रहारः = तलवार का वार। पापीयसः = पापी के। अगदेन = औषधि (दवा) से "संजीवनं स्यादगदम्" इति वैजयन्ती। संगमिते = सम्मिलित किये गये हुए। स्वदुहित्रे = अपनी पुत्री के लिए। निर्विकारायाम् = विकारशून्य किसी भी भाँति के परिवर्तन से रहित। सत्याम् = होने पर। अनुवर्तिष्यन्ते = अनुसरण करेंगे। प्रजा द्वारा उसका अनुसरण किया जायेगा = अर्थात् प्रजा उसके शासन में चलना चाहेगी। प्रचण्डवर्मणे = प्रचण्डवर्मा के लिए। यह मालवा-नरेश था। सन्देश्यम् = संदेश भिजवाना चाहिये। कापालिवेषच्छन्नौ = कापालिक के वेश में छिपे हुए। कापालिक महाव्रती होता है "कापाली स्यात महाव्रती"। मरे हुए व्यक्ति के कपाल को जो अपने साथ रखता है तथा उसी में भिक्षा माँगता है और उसी में भोजन किया करता है वही कापालिक कहा जाता है। देव्या एव = रानी (वसुन्धरा) के द्वारा ही। दीयमानभिक्षौ = दी जा रही हो भीख जिनको। इस प्रकार के हम दोनों व्यक्ति। तात्पर्य यह है कि हम दोनों को रानी भिक्षा देंगी, उसी को लेकर हम लोग। वत्स्यावः = निवास करेंगे। आर्यप्रायान् = श्रेष्ठ, सच्चरित्र पुरुषों को। पौरवृद्धान् = नगरवासियों में बड़े-बूढ़े लोगों को। आप्तान् = विश्वसनीय व्यक्तियों की। मन्त्रिवृद्धान् = वृद्ध मन्त्रियों को। प्रसादः = कृपा। रेवातटवर्तिनि = नर्मदा नदी के किनारे पर स्थित। यह 'मद्भवने' का विशेषण है। वैजन्यम् = निर्जनता, सूनेपन। जहाँ पर कोई भी व्यक्ति शेष नहीं रह गया है। उद्घाट्य = खोलकर। त्वत्सुतेन = तुम्हारे पुत्र के साथ। निर्यास्यति = निकलेगा। प्रतिष्ठापयिष्यति = स्थापित करेगा, बैठायेगा—गद्दी पर बिठलायेगा। व्याघ्रीरूपया = व्याघ्री की भाँति रूप को धारण किये हुए देवी विन्ध्यवासिनी द्वारा। तिरस्कृत्य = छुपाकर। द्विजातिदारकस्य = ब्राह्मणकुमार के। दारत्वेन = पत्नी के रूप में। अतिरहस्यम् = अति गोपनीय (छुपाने योग्य) घटना। यावत् = जब तक। एतत् = यह। (घटना)। उत्पत्स्यते = (सिद्धं भविष्यति) सिद्ध (नहीं) हो जाती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२६) स साम्प्रतमतिप्रीतः प्रायात् । अर्थश्चायं यथाचिन्तितमनुष्ठितोऽभूत् । प्रतिदिशं च लोकवादः प्रासर्पत्—"अहो महात्म्यं पतिव्रतानाम्" । असिप्रहार एव हि स मालाप्रहारस्तस्मै जातः । न शक्यमुपधियुक्तमेतत्कर्मेति वक्तुम् । यतस्तयैव दत्तं ताम् दुहित्र स्तनमण्डनमेव तस्यै जातं न मृत्युः । योऽस्याः पतिव्रतायाः शासनमतिवर्तते स भस्मैव भवेदिति ।

हिन्दी—'ठीक है' (ऐसा कहकर) वह नालीजङ्घ अत्यन्त प्रसन्न होता हुआ चला गया और जो विषय (बातें) जिस रूप में सोचा गया था वैसा ही सम्पादित भी हो गया । प्रत्येक दिशा में यह चर्चा फैल गयी "ओहो, पतिव्रता स्त्रियों का माहात्म्य" (अर्थात् देखो, पतिव्रता-धर्म की कितनी महिमा है) । माला (हार) का वह प्रहार (मित्रवर्मा के लिए साक्षात्) तलवार का प्रहार ही बन गया । "यह कार्य छल से परिपूर्ण था" यह कहना उचित नहीं था; क्योंकि उसी रानी द्वारा अपनी पुत्री को प्रदान की गयी वही माला उसके लिए वक्षस्थल का आभूषण हो गयी, मृत्यु नहीं (अर्थात् उसकी मृत्यु का कारण नहीं बनी) । (अतः) जो कोई इस पतिव्रता (रानी) की आज्ञा का पालन नहीं करेगा वह (जलकर) भस्म ही हो जायेगा ।

व्याकरण—अनुष्ठितः = अनु + स्था + क्त । महात्म्यम् = महात्मा + ष्यञ् ।

समास आदि—अतिप्रीतः = अतिशयितं प्रीतः इति । यथाचिन्तितम् = चिन्तितमनतिक्रम्य इति यथा चिन्तितम् (अव्ययीभाव) । लोकवादः = लोकानां वादः—लोकवादः (षष्ठी तत्पु०) । मालाप्रहारः = मालायाः प्रहारः (षष्ठी तत्पु०) । स्तनमण्डनम् = स्तनयोः मण्डनम् इति (षष्ठी तत्पु०) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टिप्पणियाँ—साम्प्रतम् = उचित (ठीक) है। अतिप्रीतः = अत्यन्त प्रसन्न। प्रायात् = चला गया (अगच्छत्)। यथाचिन्तितम् = जैसा कि पहले सोचा गया था वैसा ही। अनुष्ठितः = कर दिया गया, सम्पादित हो गया। लोकावादः = चर्चा, हल्ला, लोगों में किसी बात का फैल जाना। प्रासर्पत् = फैल गयी। मालापहारः = माला का प्रहार (चोट)। उपधिः = छल, कपट। उपधियुक्तम् = छल अथवा कपट से परिपूर्ण। एतत् कर्म = यह कार्य—रानी द्वारा माला से मारा जाना। ताम् = वही माला। स्तनमण्डनम् = स्तनों का आभूषण। अतिवर्तते = (लंघयति), उल्लंघन करता है, अतिक्रमण करता है। यही भविष्य अर्थ में प्रयुक्त है। 'करेगा' अर्थ होगा। भवेत् = यह क्रिया भी।

(३०) अथ महाव्रतिवेषेण मां च पुत्रं च भिक्षाय प्रविष्टौ दृष्ट्वा प्रस्नुतस्तनी प्रत्युत्थाय हर्षाकुलमब्रवीत्—"भगवन्, अयमञ्जलिः। अनाथोऽयं जनोऽनुगृह्यताम्। अस्ति ममैकः स्वप्नः। स सत्यो न वा ?" इति। मयोक्तम्—"फलमस्याद्यैव द्रक्ष्यसि" इति। "यद्येवं बहुभागधेयमस्याः वो दास्याः। सत्वस्याः सानाथ्यशंसी स्वप्नः" इति मद्दर्शनरागबद्धसाध्वसां मञ्जुवादिनीं प्रणमय्य, भूयोऽपि सा हर्षगर्भमब्रूत—'तच्चेन्मिथ्या सोऽयं युष्मदीयो बालकपाली श्वो मया निरोद्धव्यः' इति। मयाऽपि सस्मितं मञ्जुवादिनी रागलीनदृष्टिलीढ धैर्येणाभिहितम् "एवमस्तु" इति। लब्धभैक्षो नालीजङ्घमाकार्य निर्गम्य ततश्च तं चानुयान्तं शनैरपृच्छम्— क्वासावल्पायुः प्रथितः प्रचण्डवर्मेति। सोऽब्रवीत—'राज्यमिदं ममेत्यपास्तशंकोराजस्थानमण्डप एव तिष्ठ—त्युपास्यमानः कुशीलवैः' इति।

हिन्दी—इसके पश्चात् मुझको और (अपने) पुत्र को महाव्रती के वेश में भीख माँगने के लिए आया हुआ देखकर दुग्ध-स्राव-युक्त स्तनों वाली (रानी)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने उठकर प्रसन्नता भरी वाणी में कहा—भगवान् ! यह (मेरा आपको) प्रणाम है । यह अनाथ व्यक्ति (मैं) अनुगृहीत किया जाये । मेरा एक स्वप्न है । वह क्या सत्य है (होगा) अथवा नहीं । मैंने कहा "इस (स्वप्न) का फल आज ही देखोगी । 'यदि ऐसा (हो गया) तो आपकी इस दासी का महान् भाग्य है; क्योंकि (वह स्वप्न) इस (मंजुवादिनी) की सनाथता का सूचक है।" ऐसा कहकर, मेरे दर्शनों से प्रेम में बँधी हुई तथा घबराहट से युक्त उस मंजुवादिनी से प्रणाम कराके, वह रानी पुनः सहर्ष बोली—यदि वह (मेरा स्वप्न) झूठ निकला तो कल आपका यह बालकपाली (कापालिक के वेश में बच्चा) मेरे द्वारा (यहीं) रोक लिया जायेगा । मञ्जुवादिनी की प्रेम भरी दृष्टि के कारण समाप्त हुए धैर्य के साथ="एवमस्तु" (ऐसा ही हो) कहकर, भिक्षा प्राप्त कर, नालीजङ्घ को बुलाकर, वहाँ से निकलकर, (मेरा) अनुगमन करने वाले उस (नालीजङ्घ) से मैंने धीरे से पूछा—वह स्वल्प आयु वाला (जिसका भावी जीवन अब बहुत थोड़ा ही रह गया है) प्रसिद्ध प्रचण्डवर्मा कहाँ पर है ? वह बोला—"यह मेरा ही राज्य है" ऐसा विचार कर भयरहित (प्रचण्डवर्मा) चारणों (भाटों) द्वारा (अपनी) स्तुतियाँ सुनता हुआ राजा के सभा मण्डप में ही स्थित है (बैठा है) ।

व्याकरण—प्रस्नुतः=प्र+स्नु+क्त । प्रत्युत्थाय=प्रति+उत्+ल्यप् । अनुगृह्यताम्=अनु+ग्रह्+लोट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन । शंसी=शस+णिनि । प्रणमय्य=प्र+नम्+णिच्+ल्यप् । युष्मदीयः=युष्मद्+छ । निरोद्धव्यः=नि+रुध्+तव्य । लीढ=लिह्=क्त । भैक्ष=भिक्षा+अण् । आकार्य=आ+कृ+णिच्+ल्यप् । अनुयान्तम्=अनु+या+शतृ । उपास्यमानः=उप+आस्+शानच् ।

समास-आदि—महाव्रतिवेषेण=व्रतः अस्यास्तीति व्रती, महांश्चासौ व्रती च—महाव्रती (कर्मधारय), महा व्रतिनः वेषः—महाव्रतीवेषः (षष्ठी तत्पु०) तेन । प्रस्नुतस्तनी=प्रस्नुतौ स्तनौ यस्याः सा (बहुव्रीहि) । सानाथ्य-शंसी—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्यमानः नाथः यस्याः सा सनाथा, तस्याः भावः सानाथ्यम्, सानाथ्ये शंसति इति सानाथ्यशंसी (तत्पु०) मद्दर्शनबद्धरागसाध्वसाम्=मत् दर्शनम् मद्दर्शनम् (षष्ठी तत्पु०), तेन बद्धः रागः इति मद्दर्शनबद्धराग तेन (उत्पादित) साध्वसां यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि)। हर्षगर्भम्=हर्षः (विद्यते) गर्भे यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)। बालकपाली=बालश्चासौ कपाली च-बालकपाली (कर्मधारय)। सस्मितम्=विश्रमानं स्मितं यस्मिन् तद्। मञ्जुवादिनीराग-लीन-दृष्टि-लीढधैर्येण=रागे लीना इति रागलीना, रागलीना चासौ दृष्टिश्च—रागलीनदृष्टिः (कर्मधारय)। मंजुवादिन्याः रागेण लीना या दृष्टिः तया लीढः धैर्यः यस्य तेन। लब्धभैक्ष्यः=लब्धं भैक्ष्यं येन सः (बहुव्रीहि)। अल्पायु.=अल्पः आयुः यस्य सः (बहुव्रीहि)। अपास्तशङ्कः=अपास्ता शंका यस्य सः (बहुव्रीहि)।

टिप्पणियां—महाव्रतिवेषेण=कापालिक के वेश के साथ। प्रस्नुतस्तनी=जिसके स्तनों से दुग्ध चूने लगा था। वास्तविकता यह थी कि रानी ने अपने पुत्र को देखा। देखते ही उसका वात्सल्य-प्रेम उमड़ पड़ा। परिणामस्वरूप उसके स्तनों से दूध चूने लगा। प्रत्युत्थाय=उठ करके, स्वागत करके। हर्षाकुलम्—अत्यन्त प्रसन्नता के कारण विह्वल—अति प्रसन्नता के समय मनुष्य बहुत कुछ कहना चाहता है—सैकड़ों बातें उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होती हैं, किन्तु वह उन सब उद्भूत भावों को एक साथ प्रकट नहीं कर पाता है। अञ्जलिः=अञ्जलि—अर्थात् प्रणाम। अनुगृह्यताम्=अनुगृहीत किया जाना चाहिये अर्थात् आपकी कृपा मुझ पर होनी चाहिये। बहुभागधेयम्=महान् सौभाग्य। सानाथ्यशंसी=सनाथ (प्रतियुक्त) बन जाने का सूचक। शंसी=सूचक। मद्दर्शनबद्धरागसाध्वसाम्=मेरे दर्शनों से उत्पन्न हुए प्रेम के कारण उत्पन्न हुई घबराहट से युक्त (मंजुवादिनी)। प्रणमय्य=प्रणाम कराके। हर्षगर्भम्=हर्ष के साथ। उस कापालिक वेशधारी व्यक्ति के साथ जो बच्चा था—उसकी ओर संकेत करती हुई रानी कह रही है—"सः अयम्" =वह यह। युष्मदीयः=तुम्हारा। बालकपाली=कापालिक वेश पहने हुए बालक। सस्मितम्=मुस्कराहट के साथ। मञ्जुवादिनीरागलीनदृष्टिलीढ-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धैर्येण = मंजुवादिनी के प्रेम में आसक्त दृष्टि के कारण धैर्य के नष्ट हो जाने से। लीढः = नष्ट कर दिया गया हुआ। लब्धभैक्ष्यः = भिक्षा प्राप्त कर ली जिसने ऐसा। आकार्य = बुलाकर। अनुयान्तम् = अनुसरण करते हुए। अल्पायुः = जिसकी आयु अब थोड़ी ही शेष रह गयी ऐसा 'प्रचण्डवर्मा'। प्रथितः = विख्यात्। अपास्तशङ्कः = शंकारहित, निर्भय। आस्थानमंडपे = सभामण्डप में। उपास्यमानः = सेवन कियन जाता हुआ, स्तुतियाँ सुनता हुआ। कुशीलवैः = गायकों (भाटों चारणों) द्वारा।

---

(३१) "यद्येवमुद्याने तिष्ठ" इति तं जरन्तमादिश्य तत्प्राकारैकपार्श्वे क्वचिच्छून्यमठिकायां मात्राः समवतार्य तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्रः, कृतकुशीलववेषलीलः प्रचण्डवर्माणमेत्यान्वरञ्जयम्। अनुरञ्जितातपे तु समये, जनसमाजज्ञानोपयोगीनि संहृत्य नृत्यगीतनानारुदिनादिहस्तङ्क्रमणमूर्ध्वपादालातपादपीडवृश्चिकमकरलङ्घनादीनि मत्स्योद्वर्तनादीनि च कारणानि, पुनरादायादायासन्नवर्तिनां छुरिकाः ताभिरुपाहितवर्ष्मा चित्रदुष्कराणि करणानि श्येनपातोत्क्रोशपातादीनि दर्शयन्, विंशतिचापान्तरालावस्थितस्य प्रचण्डवर्मणः क्षुरिकयैकया प्रत्युरसं प्रहृत्य, 'जीव्याद्वर्षसहस्रं वसन्तभानुः' इत्याभिगर्जन्, मदगात्रमुत्कर्तुमुद्यतासेः कस्यापि चारभटस्य पीवरां सबाहुशिरमाक्रम्य, तावतेव तं विचेतीकुर्वन्, आकुलं च लोकमुच्चक्षूकुर्वन्, द्विपुरुषोच्छ्रितं प्राकारमत्यलङ्घयम्।

हिन्दी—"यदि ऐसा है तो आप इस बगीचे में ही ठहरें" इस भाँति उस वृद्ध को आज्ञा देकर, उस (बगीचे की चाहरदीवारी के एक कोने में बने हुए किसी निर्जन छोटे से मठ में सम्पूर्ण वस्त्रों को उतारकर, उसकी (वस्त्रादिकों की) रक्षा के निमित्त राजकुमार को नियुक्त कर, गायक का वेश तथा ढंग धारण कर, प्रचण्डवर्मा के पास जाकर (मैं उसे) प्रसन्न करने लगा। सूर्य की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किरणों के लाल हो जाने के समय (अर्थात् सायंकाल के समय) जन-साधारण के ज्ञान के लिए उपयोगी कार्यों (करामातों) को नाच, गान, नाना प्रकार से रोना इत्यादि, हाथ घुमाना, दोनों चरणों को ऊपर की ओर उठाकर हाथों के बल चलना अर्थात् दोनों हाथों से पृथ्वी को पकड़कर सिर घुमाते हुए ऊपर की ओर (शीर्षासन के सदृश) दोनों को उठाकर चलना, एक पैर को उठाकर दूसरे को संकुचित कर कुछ (मोड़कर) नृत्य करना, बिच्छू अथवा मकर के सदृश उछलना, मछली के समान उलटन-पलटन इत्यादि के कौशल दिखलाना आदि, फिर (तत्पश्चात्), समीप में स्थित दर्शकों की छुरियाँ लेकर उन (छुरियों) से अपनी देह को छू छूकर (अर्थात् बाजीगर के समान अपने समीप में बैठे हुए लोगों से छुरियाँ लेकर उनकी नोकों के ऊपर अपने शरीर का भार रखकर), बाज तथा कुररी पक्षियों के सदृश झपट्टा मारना तथा रुदन करना इत्यादि दुष्कर कार्यों को दिखलाता हुआ, बीस धनुष (८० हाथ) की दूरी पर बैठ हुए प्रचण्डवर्मा की छाती उसी की एक छुरी से (को लेकर उसी से) प्रहारकर, "वसन्तभानु हजार वर्षों तक जिये" ऐसी गर्जना करते हुए मेरे शरीर को काटने के लिए उद्यत तलवार हाथ में लिये हुए एक योद्धा-दूत की, मोटे ताजे कन्धों वाली बाहु के उन्नत भाग पर आक्रमण कर और उतने से ही उसे बेहोश (मूर्च्छित) कर व्याकुल (आश्चर्य में पड़े हुए) जनों के नेत्रों को ऊपर करता हुआ (अर्थात् चिन्तित व्यक्तियों को अपनी ओर आकृष्ट कर) दो मनुष्यों की लम्बाई ऊँचाई) के बराबर ऊँचाई चाहरदीवारी को (मैं) लाँघ गया (पार कर कूद गया)।

व्याकरण—जरन्तम् = जॄ + शतृ। आदिश्य = आ + दिश् + ल्यप्। समवतार्य = सम् + अव् + तॄ + णिच् + ल्यप्। एत्य = आ + इण् + ल्यप्। अन्वरञ्जयम् = अनु + रञ्ज + णिच् + लङ् (उत्तमपुरुष, एकवचन)। संहृत्य = सम् + हृ + ल्यप्। आसन्नवर्तिनाम् = आसन्न + वृत् + णिनि। प्रहृत्य = प्र + हृ + ल्यप्। उत्कर्त्तुम् = उत् + कृत् + तुमुन्। विचेतीकुर्वन् = विचेतम् = च्वि + कृ + शतृ। उच्चक्षूकुर्वन् = उच्चक्षुष् = च्वि + कृ + शतृ। अत्यलङ्घयम् = अति + लङ्घ + णिच् + लङ् (उत्तम पुरुष, एकवचन)।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समास आदि—**तत्प्राकारैकपार्श्वे**=तस्य प्राकार:—तत्प्राकार: (उस बगीचे की चाहरदीवारी), तस्य एकपार्श्वे इति तत्प्राकारैकपार्श्वे (षष्ठी तत्पु०)। **शून्यमठिकायाम्**=शून्या चासौ मठिका च—शून्य मठिका तस्याम् (कर्मधारय) **तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्र:**=तासां रक्षणम्—तद्रक्षणम तद्रक्षणे नियुक्त: राजपुत्र: येन स: (बहुव्रीहि)। **कृतकुशीलववेषलीला**=वेषश्चलीला च इति वेषलीले (द्वन्द्व), कुशीलवस्य वेषलीले इव वेषलीले यस्य स: कुशीलववेषलील:, कृते कुशीलववेषलीले येन स: (बहुव्रीहि)। **अनुरञ्जितातपे**=अनुरञ्जित: (लाल-लाल) आतप: यस्मिन् स: अनुरञ्जितातप: तस्मिन्। **जनसमाजज्ञानोपयोगीनि**=जनानां समाज: इति जनसमाज:, जनसमाजस्य ज्ञानोपयोगीनि जनसमाजज्ञानापयोगीनि (षष्ठी तत्पु०)। **हस्तचक्रमणम्**=हस्तयो: चक्रमणम् (षष्ठी तत्पु०)। **आसन्नवर्तिनाम्**=आसन्ने (समीपे) वर्तन्ते इति आसन्नवर्तिन: तेषाम् (तत्पुरुष)। **उपाहितवर्म्मा** उपाहितं वर्म्म=(शरीरं) यस्य स: (बहुव्रीहि)। **विंशतिचापान्तरालावस्थित:**=विंशतिचापानां (धनुषों का) अन्तराले अवस्थित: इति विंशति चापान्तरालावस्थित: तस्य (षष्ठी तत्पु०)। **वर्षसहस्रम्**=वर्षाणां सहस्राणि इति वर्षसहस्रम् (षष्ठी तत्पु०)। **उद्यतासे:**=उद्यत: असि: यस्य स: उद्यतासि: तस्य (बहुव्रीहि)। **चारभटस्य**=चारश्चासौ भटश्च इति चारभट: (कर्मधारय) तस्य। **पीवरांसबाहुशिखरम्**=पीवरौ अंसौ ययो: तौ पीवरांसौ (बहुव्रीहि) पीवरांसौ च तौ बाहू इति (कर्मधारय), पीवरां बाहो: शिखरम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **विचेतीकुर्वन्**=विगतं चेत: यस्य स विचेत: (बहुव्रीहि), न विचेत: अविचेत:, अविचेतसं विचेतसं कुर्वन् इति विचेतीकुर्वन्। **उच्चक्षूकुर्वन्**=उद्गतानि चक्षूंषि येषां ते उच्चक्षव: न उच्चक्षव: अनुच्चछव:, अनुच्चक्षूम् उच्चक्षून् कुर्वन् इति। **द्विपुरुषोच्छ्रितम्**=द्विपुरुषौ प्रमाणं यस्य तत् द्विपुरुषप्रमाणम्, द्विपुरुषप्रमाणं उच्छ्रित: इति द्विपुरुषोच्छ्रित: तम्।

टिप्पणियाँ—**जरन्तम्**=वृद्ध को। **आदिश्य**=आज्ञा देकर। **तात्प्राकारैकपार्श्वे**=बगीचे की चाहरदीवारी के एक ओर। **प्राकार**=रक्षादीवार, चाहरदीवार। **मठिका**=छोटा मठ, झोपडी। **शून्य**=सुनसान, जनशून्य। **मात्रा:**=वस्त्र इत्यादिकों को—"मात्रा परिच्छदनेऽल्पेशे प्रवृत्ता कर्णभूषणे"—इति कोष:।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समवतार्य=शरीर से उतार कर। **तद्रक्षणनियुक्तराजपुत्रः**=वस्त्रादिकों की रक्षा के निमित्त राजकुमार को नियुक्त करके। **कृतकुशीलववेषलीलः**=गायक जैसा कपड़ा पहिनकर उसी के जैसा रूप बनाकर, तत्समान लीला (क्रीड़ा) करते हुए। **एत्य**=आकर। **अन्वरञ्जयम्**=प्रसन्न किया। **अनुरञ्जितातपे**=जब धूप लाल-लाल हो गयी थी उस समय—अर्थात् सायंकाल के समय। **जनसमाजज्ञानोपयोगिनी**=जन साधारण के ज्ञानवर्द्धन के लिए उपयोगी। **संहृत्य**=समेट कर, दिखलाकर। **नानारुदितादि**=नाना प्रकार के रोने आदि को दिखलाता हुआ, विल्ली का रोना, कुत्ते, सियार आदि के रुदन की नकल करता हुआ। **हस्तचङ्क्रमणम्**=हाथों का इधर-उधर घुमाना आदि। **आलातपादाम्**=एक पैर को ऊपर की ओर उठाकर दूसरे पैर को मोड़कर तिरछे—रूप में नृत्य करना—"उद्घृशत्यैकं तु चरणमन्यं कृत्वैव कुञ्चितम्। नृत्यत्यनुमंतुतिर्यक् तदालातकमेव च"। (भरत)॥ **आपीठवृश्चिकमकरलङ्घनादीनि**=बिच्छू अथवा मकर के सदृश आकृति वनाकर कूदने-उछलने आदि को कर। **मत्स्यद्वर्तनादीनि**=मछली के सदृश्य उलटना आदि विलासों को करना। **उद्वर्त्तन**=पलटना। **करणानि**=क्रिया विशेष, कलाबाजियाँ। **आसन्नवर्तिनाम्**=समीप में स्थित लोगों की। **क्षुरिकाः**=छुरियाँ। **ताभिः** उन (छुरियों से)। **उपाहितवर्म्मा**=संयुक्त-शरीर। **वर्म्मन्**=शरीर—"वर्ष्म विग्रहः" इत्यमरः। **उपाहिता**=जुड़ा हुआ, मिला दिया गया हुआ, संयुक्त। **चित्रदुष्कराणि**=अनोखे तथा अत्यन्त दुष्कर (कलाबाजियाँ अथवा करामातें)। **करणानि**=करामातें। **श्येनपात्**=बाज का गिरना (झपट्टा मारना)। **श्येन**=बाज। **उत्क्रोश**=कुरर पक्षी। **विंशतिचापान्तरालावस्थितस्य**='चाप' एक नाम है। मनुष्य अपनी दोनों बाँहों को दोनों ओर फैला ले—इस बीच में जितना भी फासला आ जाये उसी को 'एक चाप' कहा जाता है। इस भाँति एक चाप में पूरे चार हाथ हो जाते है; अतः २० चाप में ८० हाथ हुए। अतः ८० हाथ की दूरी पर स्थित। **अन्तराल**=दूरी, फासला। **प्रत्युरसम्**=छाती में, वक्षस्थल में। **प्रहृत्य**=प्रहार करके। **वर्षसहस्रम्**=एक हजार वर्ष पर्यन्त। **जीव्यात्**=जिये। **अभिगर्जन्**=गरजता हुआ। **मद्गात्रम्**=मेरे शरीर को। **उत्कर्त्तुम्**=काटने के लिए। **उद्यतासेः**=ऊपर की ओर उठी हुई थी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तलवार जिसकी । चारभटस्य=योद्धा—दूत—वह व्यक्ति 'भट' अर्थात् योद्धा तो था ही, साथ ही वह 'चार' अर्थात् दूत अथवा गुप्तचर भी था । "भटश्चारभटो मत:" इति हलायुधः । पीवरांशबाहुशिखरम्=मोटे ताजे कन्धों वाली बाँहों के अग्रभाग पर । पीवर— स्थूल, मोटी-ताजी । आक्रम्य=आक्रमण करके । तावता एव=उतने से ही । विचेतीकुर्वन्=बेहोश कर देते हुए । आकुललोकम्=(उस घटना से) चकित अथवा क्षुब्ध जनसमूह । उच्चक्षूकुर्वन्=ऊपर की ओर नेत्र किये हुए । जो जनसमूह वहाँ एकत्रित था वह भौचक्का-सा रह गया और बड़े आश्चर्य के साथ सभी व्यक्ति ऊपर की ओर देखने लगे । द्विपुरुषोच्छ्रितम्=दो पुरुषों की ऊँचाई वाली चाहरदीवारी । अत्यलङ्घयम्=लाँघ गया, कूद कर चला गया ।

(३२) अवप्लुत्य चोपवने 'मदनुपातिनामेषः पन्था दृश्यते' इति ब्रुवाण एव नालीजङ्घसमीकृतसैकतास्पष्टपादन्यासया तमालवीथ्या चानुप्राकारं प्राचाप्रतिधावितः, पुनरवाचोच्चितेष्टकाचितत्वादलक्ष्यपातेन प्रद्रुत्य, लङ्घितप्राकारवप्रखातवलयः, तस्यां शून्यमठिकायां तूर्णमेव प्रविश्य, प्रतिमुक्तपूर्ववेषः सह कुमारेण मत्कर्मतुमुलराजद्वारिदुःखलब्धवर्त्मा श्मशानोद्देशमभ्यगाम् । प्रागेव तस्मिन्दुर्गागृहे प्रतिमाधिष्ठान एव मया कृतं भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तरस्थगितबाह्यद्वारं बिलम् ।

हिन्दी—बाग में कूद कर 'मेरा पीछा करने वालों को यह रास्ता दिखायी पड़ता है' ऐसा कहते हुए नालीजंघ के द्वारा समतल किये गये हुए बालुकामय स्थल के कारण जिसमें चरणों के चिह्न, अस्पष्ट हो गये थे । (स्पष्ट रूप से दिखायी नहीं पड़ रहे थे), इस प्रकार की एक, तमालकुञ्जों की सड़क से, चाहरदीवारी के पीछे से पूर्व दिशा की ओर भागा । फिर ढेर रूप में एकत्रित की गयी हुई ईंटों के कारण, किसी को मेरे चरण-चिह्न दिखलायी पड़े बिना ही दक्षिण दिशा की ओर भाग कर चाहरदीवारी के चारों ओर खुदी हुई खाई रूपी घेरे को पारकर, उस सुनसान मन्दिर में अतिशीघ्र प्रवेशकर, अपने पहले

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाले वेश को त्याग कर, कुमार के साथ, मेरे पूर्वोक्त आचरण के कारण (कोलाहल से) परिपूर्ण (भरे हुए) राजद्वार पर बड़ी कठिनता से मार्ग पाकर (मैं) श्मशान स्थल को गया। (वहाँ पर स्थित) दुर्गा जी के मन्दिर में, पहले ही से (प्रतिमा मूर्ति) के आधार में मेरे द्वारा एक छिद्र बना दिया गया था जिसका बाह्यद्वार एक मोटे पत्थर से, जिसकी एक ओर की स्थिरता (दृढ़ता) टूट गयी थी, बन्द कर दिया गया था।

...

व्याकरण—**अवप्लुत्य** = अव + प्लु + ल्यप्। **मदनुपातिनाम्** = अस्मद् + अनु + पत् + णिनि (ताच्छील्य अर्थ में)। **ब्रुवाणः** = ब्रु + शानच्। **प्रतिधावितः** = प्रति + धाव् + क्त। **उच्चित** = उत् + चि + क्त। **प्रद्रुत्य** = प्र + द्रु + ल्यप्। **स्थैर्यं** = स्थिर + ष्यञ्।

....

समास—**मदनुपातिनाम्** = माम् अनुपतन्ति तच्छीलाः इति मदनुपातिनः तेषाम्। **नालीजङ्घसमीकृतसैकतास्पष्टपादन्यासया** = नालीजङ्घेन समीकृतेन सैकतेन (बालुकामयस्थानेन) अस्पष्टाः पादन्यासाः यस्यां तमालवीथ्याम्) सा नालीजङ्घसमीकृतसैक्तास्पष्टपादन्या सा तया (बहुव्रीहि)। **तमालवीथ्या** = तमालानां वीथी इति तमालवीथी सा तया (षष्ठी तत्पु०)। **अनुप्राकारम्** = प्रकारस्य समीपे इति अनुप्राकारम् (अव्ययीभाव)। **उच्चितेष्टकचितत्वात्** = उच्चिताः इष्टिकाः— उच्चितेष्टकाः (कर्मधारय) ताभिः जितम् इति उच्चितेष्टकाचितम्, तस्य भावः उच्चितेष्टकाचित्वम् तस्मात्। **अलक्ष्यपादेन** = न लक्ष्यः इति अलक्ष्यः, अलक्ष्यश्चासौ पादः अलक्ष्यपादः तेन (कर्मधारय)। **लङ्घितप्राकारखातवलयः** = लङ्घितं प्राकारस्य खातवलयं येन सः (बहुव्रीहि)। **प्रतिमुक्तपूर्ववेषः** = प्रतिमुक्तः पूर्ववेषः (कुशीलवेशः) येन सः (बहुव्रीहि)। **मत्कर्मतुमुलराजद्वारिदुःखलब्धवर्त्मा** = मत्कर्मणा तुमुले (सङ्कुले) राजद्वारे दुःखेन लब्धं वर्त्मं येन सः (बहुव्रीहि)। **श्मशानोद्देशम्** = श्मशानस्य उद्देशः श्मशानोद्देशः तम् (षष्ठी तत्पु०)। **प्रतिमाधिष्ठाने** = प्रतिमायाः अधिष्ठानम् इति प्रतिमाधिष्ठानम् (षष्ठी तत्पु०) तस्मिन्। **भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तर-**

Funding by IKS-MoE

 CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्थगितवाह्यद्वारम् = भग्नं पार्श्वयोः स्थैर्यं यस्य तादृशेन स्थूलेन प्रस्तरेण स्थगितं वाह्यद्वारं यस्य तत् ।

टिप्पणियाँ—**अवप्लुत्य** = कूदकर । **मदनुपातिनाम्** = मेरा अनुसरण करने वालों का—अर्थात् मुझे मारने अथवा पकड़ने के लिए जो लोग मेरा पीछा कर रहे हैं उनका । **ब्रुवाणः** = कहते हुए । **नालीजङ्घसमीकृतसैकतास्पष्टपादन्यासया** = बालू के ढेर पर मेरे जो पदचिह्न पड़े थे नालीजङ्घ उनको मिटाकर एक सा (बराबर) करता गया था; अतः मेरे चरण-चिह्न स्पष्ट रूप से प्रतीत नहीं हो पा रहे थे । **तमालवीथ्या** = तमाल के वृक्षों की सड़क से । **वीथी** = गली, सड़क । वह सड़क जिसके दोनों ओर तमाल के वृक्ष लगे हुए थे । **अनुप्राकारम्** = चाहरदीवारी के पास । **प्राकार**—चाहरदीवारी । **प्राच्या** = पूर्व दिशा से । **प्रतिधावितः** = दौड़ा । **अवाचा** = दक्षिण दिशा से । **अवाच्** = दक्षिण । **उच्चितेष्टकचितत्वात्** = ढेर के रूप में लगी हुई इंटों से परिपूर्ण (भरी हुई) होने के कारण । **उच्चित** = ढेर के रूप में लगी हुई, चुनी हुई । **इष्टका** = ईंट । **चित**—व्याप्त, भरी हुई । **अलक्ष्यपादेन** = बिना देखे गये हुए पैर से अर्थात् मेरे पदचिह्न दृष्टिगोचर नहीं हो पा रहे थे । **प्रद्रुत्य** = दौड़कर, भागकर । **लङ्घितप्राकारखातवलयः** = चाहरदीवारी के चारों तरफ खुदी हुई खाई का घेरा । **खात** = चारों तरफ खुदी खाई । **वलय** = घेरा । यह 'अहम्' का विशेषण है । **तूर्णम्** = शीघ्र, जल्दी । **प्रतिमुक्तपूर्ववेषः** = छोड़ दिया गया था पहले का वेश जिसके द्वारा अर्थात् पहले पहनी गयी हुई पोशाक को छोड़कर—दूसरी पोशाक पहनकर । **मत्कर्मतुमुलराजद्वारिदुःखलब्धवर्त्मा** = मेरे आचरण (प्रचण्डवर्मा को मार देने आदि कृत्यों) से क्षुब्ध अथवा कोलाहल से भरे हुए राजद्वार पर कठिनता से मार्ग प्राप्त करने वाला मैं) । **श्मशानोद्देशम्** = श्मशान-स्थल को । उद्देश्य-स्थल, भूमि । **अभ्यगाम्** = गया । **प्रागेव** = प्राक् + एव—पहले ही । **दुर्गागृहे** = दुर्गा जी के मन्दिर में । **प्रतिमाधिष्ठाने** = मूर्ति के आधार-स्थल में । **प्रतिमा**—मूर्ति अधिष्ठान—आधार, स्थल, । **भग्नपार्श्वस्थैर्यस्थूलप्रस्तरस्थगितवाह्यद्वारम्** = जिसके बाहर का द्वार एक ऐसे मोटे पत्थर से बन्द कर दिया गया था कि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसकी एक ओर की दृढ़ता टूट गयी थी अर्थात् जिसके एक तरफ का भाग टूट चुका था।

(३३) अथ गलति मध्यरात्रे वर्षवरोपनीतमहार्हरत्नभूषणपट्ट-निवसनौ तद्बिलमावां प्रविश्य तूष्णीमतिष्ठाव। देवी तु पूर्वेद्युरेव यथार्हमग्निसंस्कारं मालवाय दापयित्वा प्रचण्डवर्मणे, चण्डवर्मणे च तामवस्थामश्मकेन्द्रोपधिकृतामेव सन्दिश्य, उत्तरेद्युः प्रत्युषस्येवपूर्वसंकेतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः सहाभ्येत्य भगवतीमर्चयित्वा सर्वजनप्रत्यक्षं परीक्षितकुक्षिवैजन्यं तद्भवनं विधाय तद्दत्तदृष्टिः सह जनेन स्थित्वा, पटियांसं पटहशब्दमकारयत्। अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन तेन नादेनाहं दत्तसंज्ञः शिरसैवोत्क्षिप्य सप्रतिमं लोहपादपीठमंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चल-मुभयकरविधृतैकपार्श्वमेकतो निवेश्य निरगमम्। निरगमयं च कुमारम्। अथ यथापूर्वमर्पयित्वा दुर्गामुद्घाटितकपाटः प्रत्यक्षीभूय प्रत्ययहृष्ट-दृष्टीः स्पष्टरोमाञ्चमुद्यताञ्जलि रूढविस्मयं च प्रणिपतन्तीः प्रकृती-रभ्यधाम्। इत्थं देवी विन्ध्यवासिनी मन्मुखेन युष्मानाज्ञापयति। स एष राजसूनुरापन्नो मया सकृपया शार्दूलरूपेण तिरस्कृत्याद्य वो दत्तः। तमेनमद्यप्रभृति मत्पुत्रतयाऽमन्दमातृपक्ष इति परिगृह्णन्तु भवन्तः।

हिन्दी—अर्द्धरात्रि बीत जाने पर, (राजा के अन्तःपुर के रक्षक) एक हिजड़े (नपुंसक) के द्वारा लाये गये बहुमूल्य रत्नजटित आभूषणों तथा कपड़ों को धारण कर हम दोनों उस छिद्र में प्रवेश कर चुपचाप बैठे रहे। महादेवी ने प्रथम दिन ही मालवराज प्रचण्डवर्मा का यथोचित दाहसंस्कार (दिलवाकर) कराके तथा चण्डवर्मा को यह समाचार भेजकर कि प्रचण्डवर्मा की यह दशा अश्मकाधिपति वसन्तभानु के छल से हुई है, दूसरे दिन प्रातः-काल होते ही, पहले से ही सकेत दिये गये हुए नगर निवासियों, मन्त्रियों एवं सामन्तों के साथ जाकर, भगवती की पूजा कर, सबके समक्ष उस मन्दिर के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्दर के भाग के जनशून्य होने की परीक्षा कर उसी मन्दिर की ओर दृष्टिपात करने वाले जन-समूह के साथ स्थित होकर, बड़ी तीव्रता से नगाड़े की ध्वनि करायी। अत्यन्त सूक्ष्म उस छिद्र से प्रविष्ट नाद (शब्द) के द्वारा संकेत पाकर, जो लौहपाद पीठ अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट शरीरधारी व्यक्ति द्वारा अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी कठिनता से हिल-डुल सकता था, उसे मैं मूर्ति सहित सिर से उठाकर, दोनों हाथों से पकड़कर एक सिरे को एक ओर रखकर निकल आया और कुमार को भी निकालकर ले आया। इसके पश्चात् पूर्ववत् देवी-दुर्गा की मूर्ति को (छिद्र पर) रखकर, किवाड़ खोलकर, सामने आकर मैंने विश्वास के साथ हर्षित नेत्रों वाली, स्पष्टतः रोमाञ्च को प्रकट करती हुई, अञ्जलि उठाकर [हाथ जोड़कर] आश्चर्य के साथ प्रणाम करती हुई प्रजा से कहा—"विन्ध्यवासिनी देवी मेरे मुख के द्वारा आप सभी को आदेश देती हैं कि विपत्ति-ग्रसित यह राजकुमार बाघ रूप को धारण किये हुए मेरे द्वारा कृपापूर्वक छिपाया गया था—आज मैं इसे आप लोगों के हाथों में समर्पित करती हूँ। आज से आप लोग इसे मुझे (विन्ध्यवासिनी) के पुत्र के रूप में (अर्थात् यह मेरा ही पुत्र है इस रूप में), स्वीकार करें; अतः इसका मातृकुल (अमन्द) अत्यन्त ऊँचा है।

व्याकरण—मध्यरात्रे: = यहाँ "अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः" सूत्र के समास के अन्त में 'रात्रि' शब्द के पश्चात् "अच्" प्रत्यय हो जाता है तथा 'इकार' लुप्त हो जाता है। **उपनीत** = उप + नी + क्त। **पूर्वेद्युः** = पूर्व—एद्युस। **दापयित्वा** = दाप् + णिच् + क्त्वा। **संदिश्य** = सम् + दिश् + ल्यप्। **अभ्येत्य** = अभि + आ + इ + ल्यप्। **वैजन्यम्** = विजन + ष्यञ्। **विधाय** = वि + धा + ल्यप्। **पटीयांसम्** = पटु + ईयसुन्। **अणुतर** = अणु + तरप्। **उत्क्षिप्य** = उत् + क्षिप् + ल्यप्। **अंसल** = अंस + लच्। यहाँ "वत्सांसाभ्यां कामबले" से 'लच्' प्रत्यय हुआ है। **दुश्चलम्** = दुस् + चल् + णिच् + खल्। **एकतः** = एक + तसिल्। **निवेश्य** = नि + विश् + णिच् + ल्यप्। **निरगमयम्** = निर् + गम् + णिच् + लङ् (उत्तम पुरुष एकवचन)। **प्रत्यक्षीभूय** = प्रत्यक्ष + च्वि + भू + ल्यप्। **प्रणिपतन्ति** = प्र + नि + पत् + शतृ (द्वितीया

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विभक्ति का बहुवचन) । **विन्ध्यवासिनी**=विन्ध्य+वस्+णिनि+ङीप् । **आपन्नः**=आ+पद्+क्त । **तिरस्कृत्य**=तिरस्+कृ+क्त्वा ।

समास—**मध्यरात्रे**=मध्यं रात्रेः इति मध्यरात्रः तस्मिन् (तत्पु०) । **वर्षवरोपनीतमहार्हरत्नभूषणपट्टनिवसनौ**=वर्षवरेण उपनीतानि महार्हाणि रत्नभूषणानि पट्टनिवसनानि ययोः तौ (बहुव्रीहि) । **यथार्हम्**=अर्हं अनतिक्रम्य—यथार्हम् (अव्ययीभाव) **अग्निसंस्कारम्**=अग्नौ संस्कारः इति अग्निसंस्कारः तम् [सप्तमी तत्पु०] । **अश्मकेन्द्रोपधिकृताम्**=अश्मकेन्द्रस्य वसन्तभानोः उपधिना कृता इति अश्मकेन्द्रोपधिकृता ताम् [तत्पु०] **पूर्वसङ्केतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः**=पूर्वं सङ्केतिताः इति पूर्वसङ्केतिताः, पौराश्च अमात्याश्च सामन्तवृद्धाश्च इति पौरामात्यसामन्तवृद्धाः [द्वन्द्व], पूर्वसङ्केतिताश्च ते पौरामात्यसामन्तवृद्धाश्च 'इति पूर्वसङ्केतितपौरामात्य-सामन्तवृद्धाः तैः [कर्मधारय] । **सर्वजनप्रत्यक्षम्**=सर्वे च ते जनाः च—सर्वजनाः (कर्मधारय), तेषां प्रत्यक्षम् इति (षष्ठी तत्पु०) । **परीक्षितकुक्षिवैजन्यम्**=विगताः जनः यस्मात् तत् विजनम् (बहुव्रीहि), तस्य भावः वैजन्यम्, परीक्षितं वैजन्य यस्य तत् (बहुव्रीहि) । **तद्दत्तदृष्टि**=तस्मिन् दत्ता दृष्टिः यया सा (बहुव्रीहि) । **पटीयांसम्**=अतिशयेन पटुः इति पटीयान् तम् । **अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन**=अणुतरेण रन्ध्रेण प्रविष्टः इति अणु-तररन्ध्रप्रविष्टः तेन (तृतीया तत्पु०) । **दत्तसंज्ञः**=दत्ता संज्ञा यस्मै स [बहुव्रीहि] । **सप्रतिमम्**=प्रतिमया सह वर्त्तमानं इति संप्रतिमम् (बहुव्रीहि) । **अंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चलम्**=असलश्चासौ पुरुषः इति अंसलपुरुषः (कर्मधारय) । तस्य प्रयत्नाः इति अंसलपुरुषप्रयत्नाः तैः दुश्चलम् (चालयितुमशक्यम्) इति (तत्पु०) । **उभयकरविधृतैकपार्श्वम्**=उभयकराभ्यां विधृतः एकपार्श्वः यस्य तत् । **यथापुरम्**=पुरं अनतिक्रम्य इति यथापुरम् । **उद्घाटितकपाटः**=उद्घाटितौ कपाटौ येन स (बहुव्रीहि) । **प्रत्यक्षीभूय**=न प्रत्यक्षः अप्रत्यक्षः, अप्रत्यक्षः प्रत्यक्षः भूत्वा इति प्रत्यक्षीभूय । **प्रत्ययहृष्टदृष्टि**=प्रत्ययेन हृष्टाः दृष्टयः यस्मिन् तत् बहुव्रीहि । **स्पष्टरोमाञ्चम्**=स्पष्टाः रोमाञ्चाः यस्मिन् तत् । **उद्यताञ्जलि**=उद्यताः । अञ्जलयः यस्मिन् तत् । **रूढविस्मयम्**=रूढः विस्मयः

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यस्मिन् तत् । **सकृपया**=विद्यमाना कृपा यस्यां सा (बहुव्रीहि) । **शार्दूलरूपेण** =शार्दूलस्य रूपं इति शार्दूलरूपम्, तेन । **मत्पुत्रतया**=मम पुत्रः इति मत्पुत्रः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य भावः मत्पुत्रता तया । **अमन्दमातृपक्षः**=अमन्दः मातृपक्षः यस्य सः (बहुव्रीहि) ।

टिप्पणियाँ—**गलति**=बीत जाने पर । **मध्यरात्रेः**=मध्यरात्रि के पश्चात् । **वर्षवरोपनीतमहार्हरत्नभूषणपट्टनिवसनौ**=हिजड़े पुरुष (नपुंसक) द्वारा लाये गये हुए रत्नजटित आभूषणों (गहनों) और वस्त्रों को । **वर्षवर**—नपुंसक (हिजड़ा) उपनीत—लाये गये हुए । **महार्ह**=बहुमूल्य । **रत्नभूषण**=रत्न जड़े हुए गहने । **पट्ट**=रेशम । **निवसनानि**=वस्त्र । **आवाम्**=हम दोनों मैं—(विश्रुत) तथा राजकुमार । **तूष्णीम्**=चुपचाप । **पूर्वेद्युः**=प्रथम दिन । **यथार्हम्**=यथा-योग्य । **अग्निसंस्कारम्**=दाहक्रिया को । **दापयित्वा**=दिलवाकर (कराके) । **तामवस्थाम्**=उस अवस्था को अर्थात् प्रचण्डवर्मा को मार देने की घटना को । **अश्मकेन्द्रोपधिकृतामेव**=अश्मकेन्द्र 'वसन्तभानु' के ही छलकपट से की गयी उस घटना को । **चण्डवर्मणे सन्दिश्य**=चण्डवर्मा के पास सन्देश भेजकर—चण्डवर्मा के समीप यह समाचार प्रेषित कर दिया कि प्रचण्डवर्मा की जो हत्या की गयी है वह अश्मक देश के राजा वसन्तभानु के कपट से हुई है अर्थात् उसी ने धोखा देकर यह वध कराया है । **उत्तरेद्युः**=दूसरे दिन । **प्रत्युषस्येव**=उषाकाल में ही, तड़के ही, प्रातःकाल होते ही । **पूर्वसङ्केतितपौरामात्यसामन्तवृद्धैः**=पहले से ही संकेत किये गये हुए वृद्ध नगर निवासियों, मन्त्रियों तथा सामन्तों के साथ । **अभ्येत्य**=आकर । **सर्वजनप्रत्यक्षम्**=सभी लोगों के समक्ष । **भगवतीम्**=दुर्गादेवी को । **अर्चयित्वा**=पूजा करके । **परीक्षितकुक्षिवंजन्यम्**=जिसके अन्दर के भाग के निर्जन होने की परीक्षा कर ली गयी थी ऐसा भवन । **कुक्षि**=कोख—भीतरी भाग (अन्दरूनी हिस्सा) । **तद्भवनम्**=दुर्गाजी का मन्दिर । **विधाय**=करके । **तद्दत्तदृष्टिः**=जिसकी दृष्टि उसी मन्दिर की ओर लगी हुई थी ऐसी रानी । **जनेन सह स्थित्वा**=जन समूह के साथ स्थित होकर । **पटीयान्सम्**=महान्, अत्यन्त चतुर । **पटहशब्दम्**=दुन्दुभि की ध्वनि को । **पटह**=दुन्दुभि-नगाड़ा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अकारयत् = करवाया। अणुतररन्ध्रप्रविष्टेन = अत्यन्त बारीक छिद्र के द्वारा प्रविष्ट नाद (शब्द के द्वारा)। दत्तसंज्ञः = जिसको इशारा किया गया था ऐसा मैं। उत्क्षिप्य = उठाकर। सप्रतिमम् = देवी की मूर्ति सहित। लोहपादपीठम् = लोहे का बना हुआ पैरदान—(जिस पर पैर रखा जाया करता है)। अंसलपुरुषप्रयत्नदुश्चलम् = सबल पुरुषों के द्वारा भी कठिनता से हिलाने-डुलाने के योग्य (पैरदान)। अंसल—सबल। दुश्चलम्—कठिनता से हिलाने-डुलाने योग्य। उभयकरविधृतैकपार्श्वम् = दोनों हाथों से पकड़ा गया था एक ओर पार्श्व का भाग जिसका ऐसा लोहपाद-पीठ। एकतः = एक ओर। निवेश्य = स्थापित कर, रखकर, (स्थापयित्वा)। निरगमम् = निकल आया। निरगमयम् = निकाल लाया। यथापूर्वम् = पहले ही के अनुसार। अर्पयित्वा = रखकर। उद्घाटितकपाटः = खोला गया था किवाड़ जिसके द्वारा ऐसा मैं। प्रत्यक्षीभूय जनता के समक्ष आकर। प्रत्ययहृष्टदृष्टिः = विश्वास के साथ हर्षित दृष्टि से युक्त। स्पष्टरोमाञ्चम् = स्पष्ट रूप से हुए रोमाञ्चों से युक्त। उद्यताञ्जलिः ऊपर उठी हुई अञ्जलि अर्थात् प्रणाम करके। रूढविस्मयम् = उत्पन्न हो गया है आश्चर्य जिसमें। प्रणिपतन्तीः = प्रणाम करती हुई। प्रकृतीः = प्रजाओं को। अभ्यधाम् = कहा। मन्मुखेन = मेरे मुख द्वारा—मेरे द्वारा। मत्कृपया = मेरी कृपा द्वारा। शार्दूलरूपेण = व्याघ्र का रूप धारण कर। देवी ने राजकुमार को व्याघ्र का रूप धारण कर छिपा रखा था। तिरस्कृत्य = छिपाकर। अद्यप्रभृति = आज से। मत्पुत्रतया = मेरा पुत्र होने के कारण। अर्थात् यह कुमार मेरा ही पुत्र है ऐसा समझते हुए आप स्वीकार करें। अमन्दमातपक्षः = जिसका मातृकुल अमन्द (क्षुद्र) नहीं है—अर्थात् अत्युच्च है ऐसा यह कुमार। परिगृह्णन्तु = स्वीकुर्वन्ती—स्वीकार करें।

(३४) अपि च दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुराश्मकघटघट्टनात्मानं मां मन्यध्वमस्य रक्षितारम्। रक्षानिर्वेशश्चास्य स्वसेयं सुभ्रूरभ्यनुज्ञाता मह्यमार्यया' इति। श्रुत्वैतत् 'अहो भाग्यवान्भोजवंशः यस्य त्वमार्यादत्तो नाथः' इत्यप्रीयन्त प्रकृतयः। सा तु वाचामगोचरां हर्षावस्थामस्पृशन्मे श्वश्रूः। तदहरेव च यथावदग्रा-

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ह्यन्मञ्जुवादिनीपाणिपल्लवम् । प्रपन्नायां च यामिन्यां सम्यगेव बिलं प्रत्यपूरयम् । अलब्धरन्ध्रश्च लोको नष्टमुष्टिचिन्तादिकथनरभ्युपायान्तरप्रयुक्तैर्दिव्यांशतामेव मे समर्थयमानो मदाज्ञां नात्यवर्तत ।

हिन्दी—इन सम्पूर्ण दुष्कर कपटों की योजनाओं की चतुरता के कारण जिसकी शठता (दुष्टता) (जनसाधारण को) विदित (प्रकट) है ऐसे अश्मक देशाधिपति वसन्तभानु रूपी घड़े को घट्टन (फोड़ने) करने वाले मुझको आप इस कुमार का रक्षक मानो (समझो, जानो)। मेरे द्वारा की गयी हुई रक्षा के पारिश्रमिक के रूप में इसकी यह सुन्दर भौंओं वाली बहिन आर्या विन्ध्यवासिनी द्वारा पत्नी के रूप में मुझे प्रदान की गयी है। यह सुनकर 'अहो, भोजवंश बड़ा भाग्यशाली है, जिसमें आर्या विन्ध्यवासिनी द्वारा किये गये तुम सदृश हमारे स्वामी हुए" यह कहकर प्रजा प्रसन्न होने लगी। वह मेरी सास (तो) वाणी द्वारा न कहे जाने योग्य हर्ष को प्राप्त हुई और उन्होंने उसी दिन हमारे साथ विधिपूर्वक मंजुवादिनी का पाणि-पल्लव मुझे ग्रहण करा दिया। (अर्थात् मंजुवादिनी का विवाह मेरे साथ हो गया)। रात्रि हो जाने पर मेरे द्वारा वह बिल भली भाँति बन्द कर दिया गया। लोग (हमारे) इस रहस्य (रन्ध्र) को नहीं जान सके। खो गयी हुई वस्तुओं, मुट्ठी में छिपी हुई वस्तुओं को तथा किस (व्यक्ति) को क्या चिन्ता है? इत्यादि बातों को बतला देने के कारण तथा अन्य अनेक उपायों के प्रयोगों से, मेरी उत्पत्ति दैवी कारण से हुई है ऐसा मानते हुए वे मेरी आज्ञा के विपरीत आचरण नहीं करते थे।

व्याकरण - दुर्घट—दुर् + घट् + खल्। पाटव = पटु + अण्। शाठ्य = शठ + ष्यञ्। घट्टन = घट + ल्यु। रक्षितारम् = रक्ष् + तृन्। अभ्यनुज्ञाता = अभि + अनु + क्त + टाप्। प्रपन्नायाम् = प्र + पद् + क्त + टाप्। दिव्य = दिव् + यत्। समर्थयमानः = सम् + अर्थ + शानच्।

समास आदि—दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुराश्मकघटघट्ट-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नात्मानम् = दुर्घटानि च तानि कूटानि इति दुर्घटकूटानि (कर्मधारय), तेषां कोटयः इति दुर्घटकूटकोटयः (षष्ठी तत्पुरुष) तेषां घटना इति दुर्घटकूटकोटिघटना (षष्ठी तत्पुरुष), तस्यां पाटवम् इति दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवम्, तेन प्रकटं शाठ्यं यस्य सः (बहुव्रीहि); दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यश्चासौ निष्ठुरश्च इति दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुरः (कर्मधारय) अश्मकेन्द्रः एव घटः इति अश्मकेन्द्रघटः, दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुरश्चासौ अश्मकेन्द्रघटश्च इति (कर्मधारय) दुर्घटकूटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुराश्मकेन्द्रघटः (कर्मधारय) तस्य घट्टनः (विनाशक) आत्मा यस्य सः—दुर्घटकोटिघटनापाटवप्रकटशाठ्यनिष्ठुराश्मकन्द्रघट्टनात्मा तम् (बहुव्रीहि)। यह 'माम्' का विशेषण है। **रक्षनिर्वेशः** = रक्षायाः निर्वेशः इति (षष्ठी तत्पु०)। **सुभ्रूः** = शोभना भ्रूवो यस्याः सा (बहुव्रीहि)। **हर्षावस्थाम्** = हर्षस्य अवस्था हर्षावस्था तां (षष्ठी तत्पुरुष)। **मञ्जुवादिनीपाणिपल्लवम्** = पाणिः पल्लवमिव इति पाणिपल्लवम् (कर्मधारय), मञ्जुवादिन्याः पाणिपल्लवम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अलब्धरन्ध्रः** = न लब्धं रन्ध्रं येन सः (बहुव्रीहि)। **नष्टमुष्टिचिन्तादिकथनं** = नष्टं च मुष्टिश्च चिन्ता च इति नष्टमुष्टिचिन्ताः (द्वन्द्व). ताः आदयो येषां तानि नष्टमुष्टिचिन्तादयः (बहुव्रीहि), तेषां कथनानि, तैः (षष्ठी तत्पु०)। **अभ्युपायान्तरप्रयुक्तैः** = अन्ये अभ्युपायाः इति अभ्युपायान्तराणि, तेषां प्रयुक्तानि (प्रयोग) इति अभ्युपायान्तरप्रयुक्तानि, तैः (षष्ठी तत्पु०)। **दिव्यांशताम्** = दिवि भवाः दिव्याः तेषां अंशः इति दिव्यांश (षष्ठी तत्पु०), तस्य भावा दिव्यांशता ताम्।

...

टिप्पणियाँ—दुर्घट = कठिनता से की जा सकने वाली। **कूट** = कपट, छल, धोखा। **घटना** = योजना। **पाटव** = चतुरता, निपुणता। **प्रकट** = विदित, ज्ञात। **शाठ्य** = दुष्टता। **निष्ठुर** = क्रूर। **घट्टनः** = हिलाने वाला। **मान्यध्वम्** = मानो, समझो, जानो। **रक्षितारम्** = रक्षक। **रक्षानिर्वेशः** = रक्षा की मजदूरी, पारिश्रमिक। **स्वसा** = बहिन। **सुभ्रूः** = सुन्दर भौंहों वाली। **अभ्यनुज्ञाता** = देने के लिए स्वीकार कर लिया है। **मह्यम्** =

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्रुत के लिए—(पत्नी के रूप में)। **आर्यया**=देवी विन्ध्यवासिनी द्वारा। **आर्यादत्त**=आर्या विन्ध्यवासिनी द्वारा दिया हुआ। **अप्रीयन्त**=प्रसन्न हुई। **सा**—इसका अन्वय श्वश्रूः के साथ किया जायेगा। **सा श्वश्रूः**=वह (मेरी) सास। **अगोचराम्**=अवर्णनीय। **वाचमगोचराम्**=वाणी द्वारा न कहे जाने योग्य। **हर्षावस्थाम्**=प्रसन्नता की दशा को। **तदहरेव** तत्+अहः+एव—उसी दिन। **यथावत्**=विधिपूर्वक। **अग्राह्यत**=पकड़वा दिया। **पाणिपल्लवम्**=पल्लव (नवीन पत्ता) के सदृश सुकोमल हाथ। **प्रपन्नायाम्**=प्राप्त हो जाने पर, आ जाने पर, **यामिन्याम्**=रात्रि में। **सम्यक्**=पूर्ण रूप से। **प्रत्यपूरम्**=पूरा कर दिया, भर दिया,बन्द कर दिया। **अलब्धरन्ध्रः**=प्राप्त नहीं किया जा सका रहस्य जिसके द्वारा ऐसा (प्रजावर्ग) जनसमूह। अर्थात् प्रजा हमारे रहस्य को नहीं जान पायी थी। **नष्टमुष्टि चिन्तादिकथनैः**=खोयी हुई वस्तुओं को बतला देने के कारण (नष्टकथनैः), **मुष्टिकथनैः**=मुट्ठी में बन्द कर रखी गयी हुई (वस्तुओं को बतला देने के कारण) **चिन्ता-कथनैः**=कोई व्यक्ति क्या सोच रहा है? इत्यादि बातों को बतला देने के कारण। विश्रुत उपर्युक्त सभी बातों को बतला देने में अत्यन्त चतुर था। यदि किसी की कोई वस्तु खो जाती थी तो वह बतला देता था कि तुम्हारी अमूक वस्तु खो गयी है। वह अमुक व्यक्ति अथवा अमुक स्थान पर मिल जायेगी अथवा अब प्राप्त न हो सकेगी। इसी भाँति लोग मुट्ठी में कोई किसी वस्तु को छिपाकर उससे पूछा करते थे कि मेरी मुट्ठी में क्या है? वह वस्तु बतला दिया करता था। इसी प्रकार यह भी बता देता था कि कौन व्यक्ति क्या सोच रहा है। **अभ्युपायान्तरप्रयुक्तैः**=अन्य-अन्य प्रकार के उपायों को प्रयोग में लाने के द्वारा अर्थात् दूसरे प्रकार के उपायों को प्रयोग में ला कर। **दिव्यांशताम्**=दैवी अंश होने को अर्थात् "मैं (विश्रुत) दैवी शक्तियों का अंश हूँ" इस बात को। **समर्थयमानः**=दृढ़ता के साथ कहते हुए, समर्थन करते हुए। **मदाज्ञाम्**=मेरी (विश्रुत की) आज्ञा को। **न अत्यवर्त्तत्**=उल्लंन नहीं किया करती थी। अर्थात् प्रजा विश्रुत की आज्ञा का पालन करने में सदैव तत्पर रहा करती थी।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३५) राजपुत्रस्यार्यापुत्र इति प्रभावहेतुः प्रसिद्धिरासीत। तं च गुणवत्यहनि भद्राकृतमुपनाय्य पुरोहितेन पाठयन्नीतिं राजकार्याण्यन्वतिष्ठम्। अचिन्तयं च राज्यं नाम शक्तित्रयायत्तम्। शक्तयश्च मन्त्रप्रभावोत्साहाः परस्परानुगृहीताः कृत्येषु क्रमन्ते। मन्त्रण हि विनिश्चयोऽर्थानाम्, प्रभावेण: प्रारम्भः, उत्साहेन निर्वहणम्। अतः पञ्चाङ्गमन्त्रमूलो, द्विरूपप्रभावस्कन्धः चतुर्गुणोत्साहविटपः, द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः, षड्गुणकिसलयः शक्तिसिद्धिपुष्पफलश्च, नयवनस्पतिर्नेतुरुपकरोति। स चायमनेकाधिकरणत्वादसहायेन दुरुपजीव्यः।

हिन्दी—"यह आर्या विन्ध्यवासिनी देवी का पुत्र है" इस प्रभाव के कारण राजपुत्र की (अच्छी) प्रसिद्धि (हो गयी) थी। (हमने) शुभ दिन राजकुमार का मुण्डन संस्कार कराकर, पुरोहित द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार कराकर, राजनीति पढ़ाते हुए राजकार्यों को करना प्रारम्भ कर दिया (तत्पश्चात्) मैंने सोचा—"राज्य तीन शक्तियों के अधीन हुआ करता है और (वे) शक्तियाँ हैं—मन्त्रशक्ति, प्रभावशक्ति तथा उत्साहशक्ति, ये तीनों पारस्परिक सहयोग से कार्यों में सफल हुआ करती हैं। मन्त्रशक्ति के द्वारा करने योग्य कार्यों (अर्थों) का निश्चय किया जाता है, प्रभावशक्ति द्वारा (उनका) प्रारम्भ तथा उत्साहशक्ति द्वारा (उनमें) सिद्धि प्राप्त हुआ करती है; अतः जिसका मूल पाँच अंगों वाला मन्त्र है, जिसका तना दो प्रकार का प्रभाव है, चार प्रकार के उत्साह ही जिसकी शाखाएँ हैं, बहत्तर प्रकार की प्रकृतियाँ ही जिसके पत्र हैं, जिसकी कोपलें (नवीन पत्ते) ही छः गुण हैं (तथा) जिसके फूल तथा फल ही शक्तियाँ और सिद्धियाँ हैं। ऐसा नीतिरूपी वृक्ष नेता (राजा) का उपकार किया करता है। अनेक अधिकरणों (प्रकारों) वाला होने के कारण असहाय व्यक्ति के द्वारा इसका आश्रय बड़ी कठिनता से प्राप्त किया जा सकता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्याकरण—प्रसिद्धि = प्र + सिध् + क्तिन् । **गुणवति** = गुण + मतुप् । **भद्राकृतम्** = भद्रा + कृ + क्त । **उपनाय्य** = उप + नी + णिच् + ल्यप् । **पाठयन्** + पठ् + णिच् + शतृ । **विनिश्चयः** = वि + निस् + चि + अच् । **निर्वणम्** = निर् + वह् + ल्युट् । **नेतुः** = नी + तृन् । **दुरुपजीव्यः** = दुस् + उप + जीव् + यत् ।

समास आदि—प्रभावहेतुः = प्रभावः एव हेतु यस्याः सा प्रभावहेतुः (बहुव्रीहि) । **गुणवति** = गुणा विद्यन्ते अस्मिन् इति गुणवत् अस्मिन् । **राजकार्याणि** = राज्ञः कार्याणि इति (षष्ठी तत्पु०) । **शक्तित्रयायत्तम्** = शक्तिनां त्रयम् इति शक्तित्रयम् तस्य आयत्तम् इति (षष्ठी तत्पु०) **मन्त्रप्रभावोत्साहाः** = मन्त्रश्च प्रभावश्च उत्साहश्च—मन्त्रप्रभावोत्साहा (द्वन्द्व) **पञ्चाङ्ग-मन्त्रमूलः** = पञ्च अङ्गानि यस्य सः पञ्चाङ्ग (बहुव्रीहि) । **पञ्चाङ्गश्चासौ** = मन्त्रश्च इति पञ्चाङ्गमन्त्रः (कर्मधारय), पञ्चाङ्गमन्त्रः मूलं यस्य (बहुव्रीहि) । अथवा पंच अङ्गानि सहायादीनि यस्य तादृशो यो मन्त्रः, स एव मूल यस्य सः । **द्विरूपप्रभावस्कन्ध** = द्वे रूपे यस्य स द्विरूपः (बहुव्रीहि) द्विरूपश्चासौ प्रभावश्च द्विरूपप्रभावः (कर्मधारय), द्विरूपप्रभाव एव स्कन्ध यस्य सः (बहुव्रीहि) । **चतुर्गुणोत्साहविटपः** = चत्वारो गुणाः यस्य स चतुर्गुणः (बहुव्रीहि) चतुर्गुणश्चासौ उत्साहश्च इति चतुर्गुणोत्साहः (कर्मधारय), चतुर्गुणोत्साह एव विटपाः यस्यः सः (बहुव्रीहि) **द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः** = द्विसप्ततिः प्रकृतयः एव पत्राणि यस्यः सः (बहुव्रीहि) **षड्गुणकिसलयः** = षडगुणाः एव किसलयानि यस्य सः (बहुव्रीहि) । **शक्तिसिद्धिपुष्पफलः** = शक्तिसिद्धय एव पुष्पाणि फलानि च यस्त (बहुव्रीहि) । **नयवनस्पतिः** = नयः एव वनस्पति इति । **अनेकाधिकरणत्वात्** = अनेकानि अधिकरणानि यस्य स अनेकाधिकरणः (बहुव्रीहि) तस्य भावः अनेकाधिकरणत्वम् तस्मात् । **असहायेन** = अविद्यमानः सहायः यस्य असहायः ते (बहुव्रीहि) **दुरुपजीव्य** = दुःखेन उपजीवितुं शक्यः—दुरुपजीव्य ।

टिप्पणियाँ—प्रभावहेतुः — प्रभाव ही था कारण जिसका ऐसी

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(प्रसिद्धि)—यह प्रभाव जनता पर था कि यह राजकुमार विन्ध्यवासिनी देवी का पुत्र ही है । **गुणवति अहनि** = गुणों से युक्त दिन में अर्थात् शुभ दिन में । **भद्राकृतम्** = जिसका मुण्डन-संस्कार करा दिया गया था (मुण्डितम्) । **उपनाय्य** = यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार करवा कर । **पुरोहितेन** = पुरोहित द्वारा । **पाठयन्** = पढाता हुआ । **नीतिम्** = राजनीति को (विश्रुत स्वयं ही राजकुमार को राजनीति पढ़ाया करता था) । **राजकार्यां** = राजा के कार्यों को । "राज्यकार्याणि" पाठ होने पर—राज्य के कार्यों को । **अन्वतिष्ठम्** = किये अथवा किया । अनु + स्था का अर्थ होता है 'करना' । **शक्तित्रयायतम्** = तीन प्रकार की शक्तियों के अधीन । **आयत्त** = अधीन । अर्थात् तीनों शक्तियों पर आधारित अथवा निर्भर । **मन्त्रप्रभावोत्साहाः** = तीन प्रकार की शक्तियों के नाम—(१) मन्त्रशक्ति, (२) प्रभावशक्ति, (३) उत्साहशक्ति । (१) **मन्त्रशक्ति**—उत्तम सम्पत्ति प्रदान करने वाले मन्त्रियों का होना । (२) **प्रभावशक्ति**—जनता में राजा तथा प्रधान कार्यकर्त्ताओं का आतङ्क (प्रभाव) चारों और विराजमान रहे । (३) **उत्साहशक्ति** = प्रत्येक कार्य करने के हेतु सदैव हृदयों में उत्साह भरा ही रहे । यदि दुर्भाग्य से कार्य में असफलता भी मिल जाये तब भी भावष्य के लिए निराशा उत्पन्न न हो । **परस्परानुगृहीताः** = एक दूसरे के कृतज्ञ होकर । आपस में सहयोग की भावना के साथ कार्य करते हुए । **क्रमन्ते** = (प्रभवन्ति) समर्थ होती हैं, सफल होती हैं । **विनिश्चयः** = दृढ़ संकल्प । **अर्थानाम्** = (कार्य सम्बन्धी) विषयों का । **निर्वहणम्** = सिद्धि प्राप्त करना, निर्वाह करना । **पञ्चाङ्गमन्त्रमूलः** = पाँच अङ्गो वाला मन्त्र है मूल में जिसके । यह 'नयवनस्पतिः' का विशेषण है । मन्त्र के पांच अङ्ग—(१) सहायाः (सहायक), (२) साधनोपायाः (अपने अभीष्ट की प्राप्ति के साधन), (३) विभागः देशकालयोः (देश [स्थान] तथा समय का विभाग), (४) विपत्तेश्च प्रतीकारः = आने वाली आपत्तियों का निराकरण करना । (५) सिद्धि = सफलता । ये ही नीतिरूपी वृक्ष की पांच अङ्ग रूपी जड़ हैं । **द्विरूपप्रभावस्कन्ध** = जिसके दो रूप हैं ऐसा प्रभाव हो जिस (नीतिरूपी वृक्ष) का तना है । ये दो कोश तथा दण्ड से उत्पन्न होते हैं । कोश से उत्पन्न अर्थात् प्रचुर धन का होना । दण्ड से उत्पन्न—अर्थात् यदि कोई व्यक्ति शरारत करे तो उसे इतना तथा ऐसा कठोर दण्ड दिया जाये कि जिससे वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनः उस प्रकार की चेष्टा करने की इच्छा भी न करे तथा उस दण्ड को देखकर अन्य लोग भी भयभीत तथा आतङ्कित हो जावें। **चतुर्गुणोत्साहविटपः** =(जिस नीतिरूपी वृक्ष की) शाखाएँ चार प्रकार का उत्साह ही है—(१) साम, (२) दाम, (३) दण्ड, (४) भेद। **द्विसप्ततिप्रकृतिपत्रः**=स्वामी, सचिव, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना तथा नगरनिवासी इत्यादि आठ भेद तथा उपभेदों के द्वारा उस नीतिवृक्ष के ७२ प्रकार के पत्ते हैं। **षड्गुणकिसलयः** =छः प्रकार के गुण ही जिस नीति-वृक्ष की कोपलें (नवीन निकलने वाले पत्ते जो निकलते समय लाल तथा बाद में कुछ हरे और अन्त में पूर्णरूप से हरे हो जाया करते हैं)। वे हैं—(१) सन्धि, (२) विग्रह, (३) यान (आक्रमण करना), (४) आसन—घेरा डालकर ताक में ही स्थित रहना। (५) द्वैध—दुहरी चाल चलना। (६) **समाश्रय**—किसी सुदृढ़ राजा के आश्रय को प्राप्त कर शत्रु के ऊपर आक्रमण करना अथवा उस पर विजय प्राप्त करना। **शक्तिसिद्धिपुष्पफलः**=शक्तियाँ ही जिस नीतिरूपी वृक्ष के फूल तथा सिद्धियाँ ही फल हैं। मन्त्र, प्रभाव और उत्साह ही शक्तियाँ हैं तथा इनकी सिद्धियाँ ही सिद्धियाँ हैं। **नयवनस्पतिः**=नीति (राजनीति) रूपी वृक्ष। **नेतुः**=नेता का (राजा अथवा मुख्यमन्त्री का)। **उपकरोति**=उपकार करता है। **अनेकाधिकरणत्वात्** =अनेक भाँति का होने के कारण। **असहायेन** = सहायकविहीन व्यक्ति के द्वारा। **दुरुपजीव्यः**=(जीविका के निमित्त) जिसका सहारा बड़ी कठिनता से प्राप्त किया जा सकता है।

(३६) 'यस्त्वयमार्यकेतुर्नाम मित्रवर्ममन्त्री सकोशलाभिजनत्वात्कुमारमातृपक्षो मन्त्रिगुणैश्च युक्तः, तन्मतिमवमत्यैव ध्वस्तो मित्रवर्मा, स चेल्लब्धः पेशलम्' इत्ति अथ नालीजङ्घं रहस्यशिक्षम्—"तात, आर्यमार्यकेतुमेकान्ते ब्रूहि—'कोन्वेष मायापुरुषो य इमां राजलक्ष्मीमनुभवति। स चायमस्मद्बालो भुजङ्गेनामुना परिगृहीतः। किमुद्गीर्येत् वा इति। स यद्वदिष्यति तदस्मि बोध्यः" इति।

हिन्दी—'जो यह आर्यकेतु नाम का मित्रवर्मा का मन्त्री है, वह कोशल वंश का होने के कारण राजकुमार के मातृपक्ष का है तथा मन्त्री के गुणों से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

युक्त है, उसकी सम्मति की अवहेलना करने के ही कारण मित्रवर्मा नाश को प्राप्त हुआ है। यदि वह हमारे अधीन हो जाये तब तो बहुत ही अच्छा हो ऐसा सोचकर एकान्त में मैंने नालीजङ्घ को सिखलाया—"हे तात ! आप आर्य आर्यकेतु को एकान्त में ले जाकर कहें यह मायावी (ऐन्द्रजालिक—जादूगर) पुरुष कौन है ? जो (राजकुमार को अपने वश में करके) राजलक्ष्मी का उपयोग कर रहा है, सर्पसदृश इसके द्वारा हमारा राजकुमार पकड़ लिया गया है, न जाने (यह कुमार को) छोड़ देगा अथवा खा लेगा। वह जो कुछ कहेगा उससे मुझे अवगत कराना।

व्याकरण—अवमत्य = अव + मन् + ल्यप्। ध्वस्त: = ध्वंस + क्त। बोध्य: = बुध + णिच् + यत्।

समास आदि—कुमारमातृपक्ष: = कुमारस्य माता—कुमारमाता, तस्या: पक्ष: इति कुमारमातृपक्ष: (षष्ठी तत्पु०)। **मन्त्रिगुणै:** = मन्त्रिण: गुणा: इति मन्त्रिगुण: तै: (षष्ठी तत्पु०)। **तन्मतम्** = तस्यमतम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **राजलक्ष्मीम्** = राज: + लक्ष्मी—राजलक्ष्मी ताम् (षष्ठी तत्पु०) **राज्यलक्ष्मी** = राज्यस्य लक्ष्मी-राज्यलक्ष्मी (षष्ठी तत्पु०)।

टिप्पणियां—कोशलाभिजनत्वात्—कोशल वंश का होने से। अभिजन-वंश "सन्ततिगोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ" इत्यमर:। **कुमारमातृपक्ष:** = राजकुमार की माता के पक्ष की ओर का। **मन्त्रिगुणै:** = मन्त्री के लिए जिन गुणों का होना आवश्यक है उन गुणों से। **तन्मतम्** = उसकी सम्मति (विचार) को। **अवमत्य** = तिरस्कृत कर, अवहेलना कर। **ध्वस्त:** = नष्ट कर दिया गया या नष्ट हो गया। **चेत् लब्ध:** = यदि मिल जाये। **पेशलम्** = सुन्दरं शुभमिति वा सुन्दर, अच्छा, उत्तम। **मायापुरुष:** = मायावी पुरुष, ऐन्द्रजालिक। **अनुभवति** = अनुभव (उपयोग) कर रहा है। **अस्मद् बाल:** = हमारा बालक (बच्चा)। **भुजङ्गेन** = सर्प (सदृश) के द्वारा। **उद्गीयत्** = छोड़ दिया जाये (त्यजेत्)। **अस्येत् वा** = अथवा खा लिया जाये, निगल लिया जाये। **बोध्य:** = सूचित किया जाने योग्य (विज्ञाप्य:)। अर्थात् उससे मुझे सूचित करना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(३७) सोऽन्यदैवं मामावेदयत्–'मुहुरुपास्य प्राभृतः, प्रवर्त्य चित्राः, कथाः, संवाह्य पाणिपादमतिविस्रम्भदत्तक्षणं तमप्राक्षं त्वदुपदिष्टेन नयेन'। सोऽप्येवमकथयत्–"भद्र मैवं वादीः। अभिजनस्य शुद्धिदर्शनम्, असाधारणं बुद्धिनैपुण्यम्, अतिमानुषं प्राणबलम्, अपरिमाणमौदार्यम् अत्याश्चर्यमस्त्रकौशलम्, अनल्पंशिल्पज्ञानम्, अनुग्रहार्द्रंचेतः, तेज–श्चाप्यविषह्यमभ्यमित्राणाम्, इत्यस्मिन्नेव संनिपातिनो गुणाः, येऽन्य–त्रैकैकशोऽपि दुर्लभाः। द्विषतामेष चिरविल्वद्रुमः, प्रह्वाणां तु चन्दनतरुः, तमुद्धृत्य नीतिज्ञम्मन्यमश्मकमिमं च राजपुत्रं पित्र्ये पदे प्रतिष्ठतमेव विद्धिनात्र संशयः कार्यः" इति।

हिन्दी—दूसरे दिन उस (नालीजङ्घ) ने (आकर) मुझे इस प्रकार कहा—बार-बार भेंटों (उपहार) के द्वारा (उसकी) सेवा कर (अर्थात् उसे प्रसन्न कर,) विचित्र कथाओं को कहकर, (उसके) हाथ-पैरों को दबाकर, जब मुझे अत्यन्त विश्वास के साथ अवसर प्रदान किया गया तब मैंने उससे आप द्वारा बतलाये गये राजनीतिक प्रकार से पूछा—हे कल्याणकारिन्! (आप) ऐसा मत कहिये। वंश की पवित्रता, बुद्धि की असाधारण निपुणता, अलौकिक, शारीरिक बल (अथवा साहस, अत्यधिक उदारता अत्यन्त आश्चर्योत्पादक, अस्त्रों का कौशल अधिक मात्रा में विद्यमान शिल्प (कला सम्बन्धी) ज्ञान, करुणा से आर्द्र (परिपूर्ण) चित्त, शत्रुओं पर प्रकट होने वाला असह्य प्रताप, ये सभी गुण जिनका अन्य लोगों में एक-एक करके (पृथक्-पृथक् रूप में) पाया जाना भी कठिन है, इस (विश्रुत) में एक साथ ही विद्यमान हैं। शत्रुओं के लिए यह (विश्रुत) कण्टकाकीर्ण करञ्ज के सदृश है, नम्रों (उदारचेता व्यक्तियों) के लिए वह चन्दन के वृक्ष के समान है। नीतिज्ञानाभिमानी उस अश्मकेन्द्र (वसन्तभानु) को (इसी के द्वारा) उखाड़कर (नष्ट करके) इस राजपुत्र को (उसके) पिता के स्थान पर बिठा दिया गया (प्रतिष्ठित) हुआ ही जानो। इस बारे में सन्देह नहीं किया जाना चाहिये।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्याकरण—**उपास्य** = उप + अस् + ल्यप् । **प्रवर्त्य** = प्र + वृत् + णिच् + ल्यप् । **संवाह्य** = सम् + वह् + णिच् + ल्यप् । **मानुषम्** = मनुष्य + अण् । **औदार्यम्** = उदार + ष्यञ् । **कौशलम्** = कुशल + अण् । **अविषह्यम्** = वि + सह + यत् । **अभ्यमित्राणाम्** = अभि + अमित्र + ख (ईन) । **संनिपातिनः** = सम् + नि + पत् + णिनि । **एकैकशः** = एक + एक + शस् । **द्विषताम्** = द्विष् + शतृ । **नीतिज्ञः** = नीति + ज्ञा + क । यहाँ "इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः" सूत्र से 'क' प्रत्यय हुआ है । **नीतिज्ञमन्यम्** = नीतिज्ञ + मन् + ख । यहाँ "आत्ममाने खश्च" सूत्र से 'अपने को समझने' अर्थ में मन् धातु से 'ख' प्रत्यय होता है । **पित्र्ये** = पितृ + यत् । **प्रतिष्ठितम्** = प्रति + स्था + क्त ।

समास आदि—**पाणिपादम्** = पाणी च पादौ च इति एतेषां समाहारः पाणिपादम् (द्वन्द्व) । **अतिविस्रम्भदत्तक्षणः** = अतिविस्रम्भे दत्तः क्षणः येन सः अतिविस्रम्भदत्तक्षणः (बहुव्रीहि) तम् । **त्वदुपदिष्टेन** = त्वया उपदिष्टः—त्वदुपदिष्टः तेन (तृतीया तत्पु०) । **अतिमानुषम्** = अतिक्रान्तं मानुषम् इति (तत्पु०) **प्राणबलम्** = प्राणानां बलम्—प्राणबलम् (षष्ठी तत्पु०) । **अपरिमाणम्** = अविद्यमानं परिमाणं यस्य तत् (बहुव्रीहि) । **औदार्यम्** = उदारस्य भावः औदार्यम् । **अस्त्रकौशलम्** = अस्त्रेषु कौशलम् इति (सप्तमी तत्पु०) । **कुशलस्य** = भावः कौशलम् । **शिल्पज्ञानम्** = शिल्पानां ज्ञानम् इति (षष्ठी तत्पु०) । **अनुग्रहार्द्रम्** = अनुग्रहेण आर्द्रम् इति (तृतीया तत्पु०) । **नीतिज्ञम्मन्यम्** = आत्मानं नीतिज्ञं मन्यते इति नीतिज्ञम्मन्यः, तम् । **नीतिज्ञः** = नीतिं जानातीति ।

टिप्पणियाँ—**अन्यदा** = [अन्यदिवसे] दूसरे दिन, अथवा दूसरे अवसर पर । **आवेदयत्** = सूचित किया [व्यज्ञापयत्] **मुहुः** = बार—बार **उपास्य** = सेवा करके, प्रसन्न कर । **प्राभृतैः** = भेंटों के द्वारा [उपायनैः] । **प्रवर्त्यः** = आरम्भ करके, छेड़कर । **चित्राः** = विचित्र—विचित्र, अद्भुत । **संवाह्य** = [मर्दयित्वा] दबाकर । **अतिविस्रम्भदत्तक्षणः** = बड़े विश्वास के साथ दिया गया था अवसर जिसके द्वारा (ऐसे उस आर्यकेतु को) । **अप्राक्षम्** = पूछा । **त्वदुपदिष्टेन** = तुम्हारे द्वारा बतलाये गये हुए । **नयेन** = राजनीति के प्रकार से । **अभिजनस्य** = कुल का । **शुद्धिदर्शनम्** = पवित्रता का दिखलायी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ना, शुद्ध होना-दिखलायी पड़ना। **नैपुण्यम्**=निपुणता, चतुरता। **अतिमानुषम्**=आलौकिक। **प्राणबलम्**=साहस, शारीरिक बल। **अपरिमाणम्**=परिमाण से रहित—अत्यधिक। **औदार्यम्**=उदारता। **अत्याश्चर्यम्**=अति आश्चर्योत्पादक। **अस्त्रकौशलम्**=अस्त्रों के प्रयोग करने में चतुरता; कुशलता। **अनल्पम्**=अत्यधिक। **शिल्पज्ञानम्**=कलाओं का ज्ञान। **अनुग्रहार्द्रम्**=दया (करुणा) से गीला। दया से परिपूर्ण। **अविषह्यम्**=न सहा जा सकने योग्य। **अभ्यमित्राणाम्**=शत्रुओं के प्रति विशेष प्रभाव को प्रकट करने वाला। अभि+अमित्राणाम्। **अमित्र**=शत्रु। यह 'तेजः' का विशेषण है। **अस्मिन्नेव**=इस (विश्रुत) में ही। **संनिपातिनः**=एकत्र अवस्थित, एकत्रित, इकट्ठे हुए। **अन्यत्र**=दूसरे पुरुष में। **एकैकशः अपि**=एक-एक करके भी। **द्विषताम्**=शत्रुओं के। **चिरबिल्वद्रुमः**=कण्टकाकीर्ण (कांटों से भरा हुआ) करञ्ज का वृक्ष। **प्रह्वानाम्**= नम्राणाम्| नम्रों के, उदार व्यक्तियों के लिए। **उद्धृत्य**=विनष्ट कर, उखाड़कर। **नीतिज्ञम्मन्यम्**=स्वयं अपने आपको नीतिशास्त्र का महान् ज्ञाता मानने वाला। **पित्र्ये पदे**=पिता के स्थान पर। **प्रतिष्ठितम्**=बैठा हुआ, स्थापित (नियुक्त) किया गया हुआ। **विद्धि**=जानो, समझो। **अत्र**=(इस विषय अथवा बारे) में।

(३८) तच्चापि श्रुत्वा भूयो भूयश्चोपधाभिर्विशोध्य तं मे मतिसहायमकरवम्। तत्सखश्च सत्यशौचयुक्तानमात्यान्विविधव्यजनांश्च गूढपुरुषानुदपादयम्। तेभ्यश्चोपलभ्य लुब्धसमृद्धमत्युत्सिक्तमविधेयप्रायं च प्रकृतिमण्डलमलुब्धतामभिख्यापयन्, धार्मिकत्वमुद्भावयन्, नास्तिकान्कदर्थयन्, कण्टकान्विशोधयन्, अमित्रोपधीरपघ्नन्, चातुर्वण्य च स्वधर्मकर्मसु स्थापयन्, अभिसमाहरेयमर्थान्। अर्थमूला हि दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः। न चान्यदस्ति पापिष्ठं तत्र दौर्बल्यादित्याकलय्य योगानन्वतिष्ठम्।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी—उस बात को सुनकर, बार-बार अनेक भांति के उपायों द्वारा (उसकी) परीक्षा कर, उस (आर्यकेतु) को मैंने अपना मतिसहायक (मेरे बौद्धिक कार्यों में सहायता करने वाला) बना लिया। (तत्पश्चात्) उसके साथ सत्य आचरणयुक्त तथा ईमानदार मन्त्रियों को तथा नाना प्रकार के वेशों को (समय समय पर) धारण करने वाले गुप्तचरों को उत्पन्न किया (अर्थात् उनका एक विभाग ही पृथक् रूप से बना दिया)। उन (गुप्तचरों) के द्वारा लोभी तथा समृद्ध (धनवान्), अति अभिमानी, प्रायः वश मे न आने वाले प्रजा के समूहों का पता लगाकर, अपनी लोभशून्यता (लोभ रहितता) की घोषणा करता हुआ, धार्मिकता की वृद्धि करता हुआ, नास्तिकों की निन्दा करता हुआ, काँटों अर्थात् राज्य में विघ्न बाधाएँ उपस्थित करने वालो को नष्ट करता हुआ, शत्रुओं के छलों अथवा कपटपूर्ण कार्यों को निष्फल करता हुआ, चारों वर्णों को अपने-अपने धर्मों (करणीय कर्मों) में स्थापित करता हुआ, मैं धन (राज्य से कर) एकत्रित करूँ (ऐसा मैंने निश्चय किया); क्योंकि दण्ड (विशिष्ट कर्मों के) आरम्भ करने का ही आधार धन ही है। उस (धन के विषय) में दुर्बलता से बढ़कर और कोई दूसरा पाप नहीं है। ऐसा विचार कर मैं (धनोपार्जन के लिए) नाना प्रकार के उपायों को करने लगा।

व्याकरण—**विशोध्य**=वि+शुध्+ल्यप्। **उपलभ्य**=उप+लभ्+ल्यप्। **अभिख्यापयन्**=अभि+ख्या+णिच्+शतृ। **उद्भावयन्**=उत्+भू+णिच्+शतृ। **विशोधयन्**=वि+शुद्ध्+णिच्+शतृ। **अपघ्नन्**=अप+हन्+शतृ। **चातुर्वर्ण्यम्**=चतुर्वर्ण+ष्यञ्। **पापिष्ठम्**=पाप+इष्टन्। **आकलय्य**=आ+कल्+ल्यप्। **अन्वतिष्ठम्**=अनु+स्था+लङ् (उत्तमपुरुष एकवचन का रूप)।

समास आदि—**मतिसहायम्**=मतौ सहायः इति मतिसहायः तम् (सप्तमी तत्पु०)। **मत्सखः**=तस्यसखा—तत्सखः (षष्ठी तत्पु०)। **सत्यशौचयुक्तान्**=सत्यं च शौचं इति सत्यशौचे (द्वन्द्व) ताभ्यां युक्ताः इति सत्यशौचयुक्ताः तान् (तृतीया तत्पु०)। **विविधव्यञ्जनान्**=विविधानि व्यञ्जनानि (वस्त्र) येषां ते विविधव्यंजनाः तान् (बहुव्रीहि)। **लुब्धसमृद्धम्**=क्षुब्धं च तत् समृद्धं च इति।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(कर्मधारय)। **अविधेयप्रायम्**=न विधेयम् इति अविधेयम्, प्रायेण अविधेयम् इति अविधेप्रायम्। **प्रकृतिमण्डलम्**=प्रकृतीनां मण्डलम् इति (षष्ठी तत्पु०)। **अलुब्धताम्**=लुब्धस्य भाव: लुब्धता, न लुब्धता इति अलुब्धता ताम्। **अमित्रोपधी:**=अमित्राणाम् उपधय:—अमित्रोपधय: ता: अमित्रोपधि: (षष्ठी तत्पु०)। **चातुर्वर्ण्यम्**=चत्वार: वर्णा: इति चतुर्वर्णा: एव चातुर्वर्ण्यम्। **स्वधर्मकर्मसु**=धर्मश्च कर्माणि च इति धर्मकर्माणि (द्वन्द्व), स्वस्य धर्मकर्माणि—स्वधर्मकर्माणि तेषु (षष्ठी तत्पु०), अथवा धर्मयुक्तानि कर्माणि – धर्मकर्माणि, स्वस्य धर्मकर्माणि स्वधर्मकर्माणि तेषु। **अर्थमूला:**=अर्थ एव मूलं येषां ते (बहुव्रीहि)। **दण्डविशिष्टकर्मारम्भा**=दण्डेन विशिष्टानि इति दण्डविशिष्टानि दण्डविशिष्टानि च तानि कर्माणि इति दण्डविशिष्टकर्माणि (कर्मधारय) तेषां आरम्भ: इति (षष्ठी तत्पु०)। **दौर्बल्यात्**=दुर्बलस्य भाव: दौर्बल्य तस्मात्। **पापिष्ठम्**=अतिशयेन पापमिति पापिष्ठम्।

टिप्पणियां—उपधाभि:=परीक्षा सम्बन्धी उपायों द्वारा। ईमानदारी की परीक्षा के निमित्त जो उपाय किये जाते हैं उनको 'उपधा' कहा जाता है। **विशोध्य**=[संतोष्य] सन्तुष्ट करके। **तम्**=उस (आर्यकेतु) को। **मतिसहायम्**=विचारों में सहायता करने वाला। **तत्सख:**=उसका सहायक [तत्सहाय:]। **सत्यशौचयुक्तान्**=सत्य तथा पवित्र आचरण से युक्त। **विविधव्यञ्जनान्**=नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाले, विचित्र वेशधारी। **उद्पादयम्**=उत्पन्न किया [अजनयम्]। **तेभ्य:**=[उन गुप्तचरों] से। **उपलभ्य:**=प्राप्त कर अथवा पता लगाकर। **लुब्धसमृद्धम्**=लोभी और धनी। **अत्युत्सिक्तम्**=अत्यन्त अभिमानी। **उत्सिक्त**=अहङ्कार से युक्त, अभिमानी। **अविधेयप्रायम्** प्राय: वश में न आने वाले (प्रजाजन)। यह 'प्रकृतिमण्डलम्' का विशेषण है। विधेयवश में रहने वाला, आज्ञाकारी। **प्रकृतिमण्डलम्**=प्रजा के लोगों का समूह। **अलुब्धताम्**=लोभरहितता लोभी न होना। **अभिख्यापयन्**=प्रकट करता हुआ घोषणा करता हुआ। **उद्वाययन्**=बढ़ाता हुआ (वर्धयन्)। **नास्तिकान्**=ईश्वर में विश्वास न करने वाले व्यक्तियों को। **कदर्थयन्**=[गर्हयन्] निन्दा करते हुए अथवा पीड़ित करते हुए। **कंटकान्**=कांटों अर्थात्

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राज्य में उपद्रव करने अथवा कराने वाले प्राणियों को, अथवा शत्रुओं को [रिपून्] । **विशोधयन्**=[उन्मूल्यन् नाश करते हुए । **अमित्रोपधीः**=शत्रुओं के छलों अथवा कपटों को । **अपघ्नन्**=[विफलयन्] निष्फल करते हुए, कुचलते हुए । **चातुर्वर्ण्यम्**=चारों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) वर्णों को। **स्वधर्मसु**=अपने धर्म तथा कर्मों में । **अथवा**=धर्मशास्त्र द्वारा विहित अपने-अपने कर्मों को । धार्मिक दृष्टि के अनुसार प्रत्येक वर्ण के कम पृथक्-पृथक् वर्णित हैं और वे ये हैं—"शमो दमस्तप शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च । ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्य ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ शौर्यं तेजो धृतिदक्षिण्य युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्च क्षात्रकर्म स्वभावजम् ॥ कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् । परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥" **अभिसमाहरेयम्**=(उपार्जयेयम्, सञ्चिनुयाम्) उपार्जित करूँ । एकत्रित करूँ । **अर्थान्**=धनों को । **अर्थमूलाः**=धन के अधीन, धन-प्रधान । **दण्डविशिष्टकर्मारम्भाः**=जिन कार्यों में दण्ड देना पड़ा करता है ऐसे कार्यों का प्रारम्भ । दण्डसाध्य विशिष्ट कार्यों का आरम्भ । इस प्रकार के कार्यों के लिए धन का होना परमावश्यक है । **तत्र**=वहाँ, उसमें अर्थात् धन को पैदा करने में । **दौर्बल्यात्**=निर्बलता या दुर्बलता को त्याग कर । **अन्यत्**=भिन्न, दूसरा । **आकलय्य**=(विचार्य) विचार कर, सोचकर । **योगान्**=नाना प्रकार के उपायों को । योगशब्द अनेकार्थक है, किन्तु यहाँ पर उपर्युक्त अर्थ में ही यह शब्द प्रयुक्त है । **अन्वतिष्ठम्**=(मैंने) किया, उसी प्रकार का आचरण मैंने किया ।

इत्युत्तरप्रदेशस्थ 'मैनपुरी' मण्डलान्तर्गत 'भोगांव' उपमण्ड
लान्तर्गत 'महावतपुर' ग्रामनिवासिनः श्रीमतो दयानन्द-
महोदयस्य श्रीमत्याः सुखदेवव्याश्च तनुजनुषा
'वृन्दावनस्थगुरुकुलविश्वविद्यालयाधीतविद्येन
पी-एच० डी० इत्युपाधिधारिणा
आचार्य सुरेन्द्रदेवशास्त्रिणा
विरचिता 'विश्रुतचरितस्य'
"आशुबोधिनी" व्याख्या समाप्ता ॥

Sri Sankaracharya Sanskrit ... 815

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Vidya Bhawan's Sri S... ...acharya Sanst...

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Ahmed

Funding by IKS-MoE